धातुकथा

तिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> **धातुकथा**

पाली संस्करण : नीचे दिए गए प्रत्येक अध्याय में पाली-अंग्रेजी और पाली-देवनागरी संस्करण उपलब्ध कराए गए हैं।

☐

अंतर्वस्तु

धतुकथा
(तत्वों के संदर्भ में चर्चा)

धातुकथा अभिधम्म की तीसरी पुस्तक है। यह पुस्तक अभिधम्म की पिछली दो पुस्तकों, धम्मसंगनी और विभंग के विचारों को समाहित करती है। यह प्रश्न-उत्तर के रूप में है, जिसे 14 अध्यायों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार, पहला अध्याय प्रत्येक विषय के बारे में पूछता है, "यह कितने समुच्चयों, आधारों और तत्वों में समाहित है?" बाद के अध्याय अधिक जटिल प्रश्नों की ओर बढ़ते हैं, जैसे "कितने समुच्चयों आदि से धम्म अपने से जुड़े धम्मों से विभाजित होते हैं?"

ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध ने अभिधम्म का उपदेश तावतिंस स्वर्ग में दिया, जो देवों का निवास स्थान है। विभंग के बाद धातुकथा का प्रवचन हुआ। इसलिए, इसकी विषयवस्तु अभिधम्म पिटक का तीसरा खंड है। धातु (तत्व) को उस तत्व के रूप में परिभाषित किया गया है जो अपने स्वयं के स्वरूप को धारण करता है। इस प्रकार, ग्रंथ में सभी खोज की अवस्थाएँ, समुच्चयों से शुरू होकर विलाप पर आधारित दोहे तक, तत्वों के अंतर्गत आती हैं। इसका यह भी तात्पर्य है कि तत्व सजीव नहीं हैं और उनसे संबंधित नहीं हैं। धातुकथा (तत्वों पर प्रवचन) में उपरोक्त खोज की अवस्थाओं का वर्गीकरण, अवर्गीकृतीकरण, सहभागिता और वियोग का वर्णन तीन श्रेणियों - 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 18 तत्वों - के संदर्भ में किया गया है। यद्यपि इन तत्वों का वर्णन धम्मसंगनी और विभंग में किया गया है, लेकिन वहाँ इनका विस्तृत और विशिष्ट वर्णन नहीं है जैसा कि इस ग्रंथ में है।

धातुकथा : स्कैन की गई पुस्तक
स्कैन की गई पुस्तक का लिंक

धातुकथा: अध्याय (यू नारद द्वारा अनुवाद)
पाठ का उपचार
अध्याय 1: वर्गीकरण और अवर्गीकृत

1. समुच्चय
2. आधार
3. तत्व
4. सत्य
5. संकाय
6. आश्रित उत्पत्ति इत्यादि
7. ट्रिपलेट्स 22
8. दोहे 100

समुच्चय, आधार और तत्वों का वर्गीकरण चार्ट।
अध्याय I की विधि
अध्याय एक की विधि और चार्ट की व्याख्या
आंतरिक तालिकाएँ (अभ्भनतारा मटिका)

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धातुकथा >> पाठ पाली संस्करणों **का उपचार** : पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

अनुवादक: यू नारदा

पाठ का उपचार

1. विधियाँ

अध्याय

I. वर्गीकरण और अवर्गीकृत

II. वर्गीकृत और अवर्गीकृत

III. अवर्गीकृत और वर्गीकृत

IV. वर्गीकृत और वर्गीकृत

V. अवर्गीकृत और अवर्गीकृत

VI. जुड़ाव और अलगाव

VII. संबद्ध और पृथक

VIII. विच्छेदित और संबद्ध

IX. संबद्ध और संबद्ध

X. विघटित और विघटित

XI. वर्गीकृत से संबद्ध और उससे पृथक

XII. संबद्ध से संबंधित वर्गीकृत और अवर्गीकृत

XIII. अवर्गीकृत से संबद्ध और पृथक

XIV. विच्छेदित व्यक्तियों से संबंधित वर्गीकृत और अवर्गीकृत जानकारी

2. आंतरिक जांच की अवस्थाएँ

5 समुच्चय = 5

12 आधार = 12

18 तत्व = 18

4 सत्य = 4

22 संकाय = 22

आश्रित उत्पत्ति = 28

ध्यान के 4 अनुप्रयोग = 1

4 महान प्रयास = 1

मानसिक शक्ति प्राप्त करने के 4 मार्ग = 1

4 ध्यान अवस्थाएँ (झान) = 1

4 असीमित अवस्थाएँ = 1

5 संकाय = 1

5 खूबियाँ = 1

ज्ञानोदय के 7 कारक = 1

8 आर्य अष्टांगिक मार्ग = 1

संपर्क

अनुभूति

धारणा

इच्छाशक्ति

चेतना

फ़ैसला

ध्यान

= 7

कुल = 105

3. विधियों के सिद्धांत

1. समुच्चय, आधार और तीन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकरण

तत्व।

2. समुच्चय, आधारों की तीन श्रेणियों के अंतर्गत अवर्गीकरण

और तत्व।

3. चार मानसिक समूहों के साथ संबंध।

4. चारों मानसिक समूहों से वियोग।

4. विधियों की विशेषताएं

1. वर्गीकरण के अनुरूप होने की सामान्य विशेषता

और एसोसिएशन के सिद्धांत।

2. वर्गीकरण के अनुरूप न होने की सामान्य विशेषता

और एसोसिएशन के सिद्धांत।

5. बाह्य जांच के राज्य

धम्मसंगनी की विषयसूची के सभी 22 त्रिक और 100 दोहे।

अनुवादित: यू नारद

अध्याय 1: वर्गीकरण और अवर्गीकृत

1. **समुच्चय**

द्वारा

6. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

पदार्थ समूह को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है?

इसे 1 समुच्चय, 11 आधारों और 11 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत।

7. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

भावना समूह को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है?

इसे 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

इसे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है? इसे 4 श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

8. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

धारणा समूह को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है?

समुच्चय को 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

9. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

मानसिक-निर्माण समूह को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है?

मानसिक-गठन समूह को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिसके अंतर्गत

1 आधार और 1 से कम तत्व।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

10. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

चेतना समूह को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है?

चेतना समूह को 1 समूह के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

और 7 तत्वों से कम।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

दो-दो करके

11. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

पदार्थ और भावना के समुच्चय में कितने तत्व शामिल हैं?

पदार्थ और भावना के समुच्चय को 2 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 1 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

12. . . . पदार्थ और बोध के समूह को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है

2 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 11 तत्वों से कम।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 1 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

13. . . . पदार्थ और मानसिक-निर्माण समूहों का वर्गीकरण किया गया है

2 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 1 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

14. पदार्थ और चेतना के समूह को 2 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम श्रेणियों के अंतर्गत; इन्हें किसी भी आधार पर वर्गीकृत नहीं किया गया है।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

तीन-तीन करके

15. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

पदार्थ, भावना और बोध के समूह में कितने तत्व होते हैं?

वर्गीकृत? पदार्थ, भावना और बोध के समूह वर्गीकृत हैं

3 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत।

16. पदार्थ, भावना और मानसिक-निर्माण के समूहों का वर्गीकरण किया गया है।

3 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत।

17. पदार्थ, भावना और चेतना के समूह वर्गीकृत किए गए हैं।

3 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत; वे किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं हैं और

किसी भी तत्व के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं

चार-चार करके

18. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

पदार्थ, भावना, बोध और मानसिक तत्व कितने हैं?

गठन समूह वर्गीकृत? पदार्थ, भावना, बोध और

मानसिक-निर्माण समूहों को 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

11 आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 1 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

19. पदार्थ, भावना, बोध और चेतना के समूह हैं

इसे 4 समूहों, 12 आधारों और 18 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 कुल योग के अंतर्गत; वे किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं हैं और

किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं।

फाइव्स द्वारा

20. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

पदार्थ, भावना, बोध और मानसिक संरचना में कितने तत्व होते हैं?

और चेतना के समूह वर्गीकृत किए गए हैं? पदार्थ, भावना,

धारणा, मानसिक गठन और चेतना समूह हैं

इन्हें 5 समूहों, 12 आधारों और 18 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

21. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

इन 5 समूहों में कितने तत्व शामिल हैं?

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 18 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

2. आधार

द्वारा

22. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

आई बेस को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है? आई बेस को वर्गीकृत किया गया है

1 समुच्चय के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

23. कान का आधार; नाक का आधार; जीभ का आधार; शरीर का आधार; दृश्यमान

वस्तु आधारित; ध्वनि आधारित; गंध आधारित; स्वाद आधारित; स्पर्शनीय

ऑब्जेक्ट बेस को 1 एग्रीगेट के तहत, 1 बेस के तहत और इसके तहत वर्गीकृत किया गया है।

1 तत्व।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

24. माइंड बेस को 1 एग्रीगेट, 1 बेस के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

7 तत्वों के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

25. वर्गीकरण से निर्वाण को छोड़कर, संज्ञेय आधार

समुच्चयों को 4 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है और

1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

1 कुल योग, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

दो-दो करके

26. आँख का आधार और कान का आधार एक समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किए गए हैं,

2 आधार और 2 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

27. आँख और नाक के आधार; आँख और जीभ के आधार; आँख और शरीर

आधार; आँख और दृश्य वस्तु आधार; आँख और ध्वनि आधार; आँख

और गंध आधारित; दृष्टि और स्वाद आधारित; दृष्टि और मूर्त वस्तु

बेस को 1 एग्रीगेट के अंतर्गत, 2 बेस के अंतर्गत और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

2 तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? 1. वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

28. आँख और मन के आधारों को 2 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

2 आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 10 से कम तत्व।

29. दृष्टि और बोधगम्य आधार, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 4 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

2 आधार और 2 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व...

(और इसी तरह तीन-तीन, चार-चार आदि से लेकर बारह-बारह तक के मामलों में भी यही प्रक्रिया लागू होती है)

(बाद वाले का अंतिम उल्लेख किया गया है)

बारह द्वारा

30. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

बारह क्षारों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? बारह क्षार,

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

3. तत्व

द्वारा

31. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

आँख तत्व को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है? आँख तत्व है

इसे 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

32. कान तत्व; नाक तत्व; जीभ तत्व; शरीर तत्व;

दृश्य वस्तु तत्व; ध्वनि तत्व; गंध तत्व; स्वाद

तत्व; मूर्त वस्तु तत्व; नेत्र चेतना तत्व;

कान चेतना तत्व; नाक चेतना तत्व; जीभ

चेतना तत्व; शरीर चेतना तत्व; मन तत्व;

मन चेतना तत्व को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

33. बोधगम्य तत्व, वर्गीकरण से निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों को 4 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है और

1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

1 कुल योग, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

दो-दो करके

34. नेत्र तत्व और कान तत्व को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

35. आँख और नाक के तत्व; आँख और जीभ के तत्व; आँख और

शरीर के तत्व; आँख और दृश्य वस्तु के तत्व; आँख और ध्वनि

तत्व; आँख और गंध तत्व; आँख और स्वाद तत्व; आँख

और मूर्त वस्तु तत्वों को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है,

2 आधार और 2 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

36. आँख और आँख चेतना के तत्वों को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

37. आँख और कान चेतना तत्व; आँख और नाक चेतना

तत्व; आँख और जीभ, चेतना के तत्व; आँख और

शरीर चेतना के तत्व; आँख और मन के तत्व; आँख और

मन चेतना के तत्वों को 2 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

2 आधार और 2 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

38. आँख और बोधगम्य तत्व, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 4 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

2 आधार और 2 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व. . . .

(और इसी तरह तीन-तीन के समूह, चार-चार के समूह आदि से लेकर अठारह के समूह तक के मामलों में भी यही क्रम चलता रहता है)

इनमें से केवल अंतिम का ही उल्लेख किया गया है।)

अठारह वर्ष की आयु तक

39. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

इन 18 तत्वों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? ये 18 तत्व...

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है

4. सत्य

द्वारा

40. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

दुख सत्य को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है? दुख सत्य है

इन्हें 5 समूहों, 12 आधारों और 18 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

कोई भी समुच्चय, जो किसी भी आधार पर अवर्गीकृत न हो और अवर्गीकृत न हो

किसी भी तत्व के अंतर्गत।

41. उत्पत्ति सत्य; पथ सत्य को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिसके अंतर्गत

1 आधार और 1 से कम तत्व।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

42. समाप्ति सत्य को किसी भी समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता; यह

1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

5 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

दो-दो करके

43. दुख सत्य और उत्पत्ति सत्य को 5 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

44. दुख सत्य और पथ सत्य को 5 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? 1. वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

45. दुख का सत्य और समाप्ति का सत्य, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

तीन-तीन करके

46. दुख सत्य। उत्पत्ति सत्य और पथ सत्य को इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

5 समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

47. दुख का सत्य, उत्पत्ति का सत्य और समाप्ति का सत्य, को छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

5 समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

चार-चार करके

48. दुख का सत्य, उत्पत्ति का सत्य, मार्ग का सत्य और समाप्ति का सत्य।

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

49. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

चार सत्यों को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है? 1. चार सत्य।

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

5. संकाय

द्वारा

50. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने आधारों के अंतर्गत

नेत्र वाहिनी को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है? नेत्र वाहिनी को वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

51. कान की क्षमता; नाक की क्षमता; जीभ की क्षमता; शरीर की क्षमता;

महिला संकाय; पुरुष संकाय को 1 समुच्चय के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिसके अंतर्गत

1 आधार और 1 से कम तत्व।

इसे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है? 1. इसे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है?

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

52. मानसिक क्षमता को 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

7 तत्वों के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

53. जीवन शक्ति को 2 समूहों और 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

3 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

54. शारीरिक सुख का अनुभव करने की क्षमता; शारीरिक पीड़ा का अनुभव करने की क्षमता; मानसिक आनंद

क्षमता; शोक क्षमता; उदासीनता क्षमता; आस्था क्षमता;

ऊर्जा क्षमता; ध्यान क्षमता; एकाग्रता क्षमता;

ज्ञान की क्षमता; वह क्षमता जिससे मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे पहले नहीं पता था;

उच्चतर बोध क्षमता; ज्ञानी व्यक्ति की क्षमता को वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

दो-दो करके

55. नेत्र और श्रवण शक्ति को एक ही समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

56. आँख और नाक की क्षमताएँ; आँख और जीभ की क्षमताएँ; आँख और

शरीर की इंद्रियाँ; आँख और स्त्री की इंद्रियाँ; आँख और पुरुष की इंद्रियाँ

इन्हें 1 समुच्चय, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

57. दृष्टि और मन की क्षमताओं को 2 समूहों में वर्गीकृत किया गया है।

2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 10 से कम तत्व।

58. नेत्र शक्ति और जीवन शक्ति को 2 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

59. नेत्र एवं शारीरिक सुख इंद्रियाँ; नेत्र एवं शारीरिक पीड़ा

दृष्टि और मानसिक आनंद की दृष्टि; दृष्टि और शोक की दृष्टि;

आँख और उदासीनता की क्षमताएँ; आँख और आस्था की क्षमताएँ; आँख

और ऊर्जा संबंधी क्षमताएँ; आँख और ध्यान संबंधी क्षमताएँ; आँख और

एकाग्रता शक्तियाँ; दृष्टि और बुद्धि शक्तियाँ; आँख और

मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे नहीं पता था; आँख और उच्चतर

बोध शक्तियाँ; आँख और ज्ञानी शक्तियाँ हैं

इसे 2 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व. . . .

(और इसी तरह तीन-तीन, चार-चार आदि के मामलों में, बाईस-दो तक)

(बाद वाले में से केवल अंतिम का ही उल्लेख किया गया है)

बाईस द्वारा

60. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

22 संकायों को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है? 22 संकाय

इन्हें 4 समुच्चयों, 7 आधारों और 13 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 5 से कम आधार और 5 से कम तत्व।

6. आश्रित उत्पत्ति इत्यादि

61. अज्ञानता को 1 समुच्चय, 1 आधार और

1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

62. अज्ञानता से प्रेरित। संरचनाओं को निम्न के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

63. निर्माण द्वारा वातानुकूलित। चेतना को इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

64. चेतना द्वारा नियंत्रित, मानसिक-भौतिकता को वर्गीकृत किया जाता है।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

1 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत।

65. भौतिकवादी मानसिकता से प्रभावित होकर, 6 आधारों को वर्गीकृत किया गया है।

2 से कम समुच्चय, 6 से कम आधार और 12 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 6 से कम आधार और 6 से कम तत्व।

66. 6 आधारों द्वारा नियंत्रित, संपर्क; संपर्क द्वारा नियंत्रित,

भावना; भावना से प्रेरित। लालसा; भावना से प्रेरित।

लालसा। आसक्ति; कर्म होना 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

67. पुनर्जन्म होना; इंद्रियजन्य होना; प्रत्यक्ष अनुभव होना;

पांच-समूह बनना 5 समूहों के अंतर्गत, 11 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

आधार और 17 से कम तत्व।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

किसी भी समुच्चय; इसे 1 आधार और 1 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

तत्व।

68. महीन पदार्थ के बनने को 5 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है, जिनके अंतर्गत

5 आधार और 8 से कम तत्व।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह अवर्गीकृत नहीं है।

किसी भी समुच्चय के अंतर्गत; इसे 7 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है और इसके अंतर्गत भी नहीं।

10 तत्व।

69. अमूर्त विकास; न तो अनुभूति और न ही अअनुभूति

बनना; चार-समूह बनने को चार समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

1 समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

70. अगोचर विकास; एक-समूह विकास को वर्गीकृत किया गया है

1 समुच्चय के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

71. जन्म को 2 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है... उम्र बढ़ने को वर्गीकृत किया गया है

2 श्रेणियों के अंतर्गत... मृत्यु को 2 श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

1 आधार और 1 से कम तत्व।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

3 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

72. शोक; विलाप; पीड़ा; दुःख; निराशा; अनुप्रयोग

ध्यान का; महान प्रयास को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4* समूह, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

73. मानसिक शक्ति का मार्ग 2 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

2 आधार और 2 से कम तत्व।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

3 समुच्चय, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

74. ध्यान या तल्लीनता को 1 आधार के अंतर्गत 2 समूहों में वर्गीकृत किया गया है।

और 1 तत्व के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

3 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

75. असीम; 5 क्षमताएँ; 5 शक्तियाँ; ज्ञानोदय के 7 कारक;

आर्य अष्टांगिक मार्ग; संपर्क; भावना; बोध; संकल्प; निर्णय;

ध्यान को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

इसे कितने के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है? इसे 4 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

11 से कम आधारों और 17 से कम तत्वों के समूह।

76. चेतना को 1 समुच्चय, 1 आधार और

7 तत्वों के अंतर्गत।

यह किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है? यह निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है।

4 समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

7. **ट्रिपलेट्स** 22

77. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और

कितने तत्वों के अंतर्गत स्वस्थ अवस्थाएँ आती हैं; अस्वस्थ अवस्थाएँ

राज्यों का वर्गीकरण? स्वस्थ राज्य; अस्वस्थ राज्य हैं

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

78. अनिर्धारित अवस्थाएँ, वर्गीकरण से निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

79. सुखद अनुभूति से संबंधित अवस्थाएँ; से संबंधित अवस्थाएँ

दर्दनाक भावनाओं को 3 समूहों और 2 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 15 से कम तत्व।

80. ऐसी अवस्थाएँ जो न तो दर्दनाक और न ही दर्द से जुड़ी भावनाओं से संबंधित हैं।

सुखद को 3 समुच्चयों, 2 आधारों और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

7 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

81. परिणामी अवस्थाओं को 2 आधारों के अंतर्गत 4 समुच्चयों में वर्गीकृत किया जाता है।

और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 10 से कम तत्व।

82. राज्य जो परिणामी राज्यों का निर्माण करते हैं; भ्रष्ट और भ्रष्टाचार फैलाने वाले

राज्यों को 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

83. वे अवस्थाएँ जो न तो परिणामी हैं और न ही परिणामी उत्पन्न करती हैं

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखने वाले राज्य हैं

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 13 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

इन्हें 5 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

84. वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त होती हैं और अनुकूल होती हैं

चिपकने वाले को 5 समूहों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

17 तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; उन्हें 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

और 1 तत्व के अंतर्गत।

85. वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं बल्कि अनुकूल होती हैं

चिपकने वाले को 5 समूहों के अंतर्गत, 7 आधारों के अंतर्गत और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

8 तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; इन्हें वर्गीकृत नहीं किया गया है

5 आधार और 10 से कम तत्व।

86. वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं और अनुकूल नहीं होतीं।

आसक्ति से; भ्रष्ट नहीं और भ्रष्ट करने वाले राज्यों को छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

87. भ्रष्ट नहीं बल्कि भ्रष्टाचार फैलाने वाले राज्यों को 5 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

88. व्यावहारिक चिंतन और निरंतर चिंतन वाले राज्यों को वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 15 से कम तत्व।

89. व्यावहारिक चिंतन के बिना, लेकिन निरंतर चिंतन के साथ राज्य;

परमानंद से जुड़ी अवस्थाओं को 4 समूहों में वर्गीकृत किया गया है,

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

90. व्यावहारिक और निरंतर चिंतन के बिना राज्य, अपवाद सहित

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को वर्गीकृत किया जाता है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

इन्हें किसी एक तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

91. आनंद से युक्त अवस्थाओं को 3 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 आधारों के अंतर्गत और 3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 15 से कम तत्व।

92. उदासीनता से ग्रस्त अवस्थाओं को 3 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

दो आधारों से कम और सात तत्वों से कम के समुच्चय।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

93. प्रथम मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य; उच्चतर मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य

3 मार्ग; प्रथम मार्ग द्वारा जड़ सहित समाप्त किए गए राज्य; राज्य

उच्चतर तीन मार्गों द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्यों के साथ; अग्रणी राज्य

पुनर्जन्म और मृत्यु; निर्वाण की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ; संबंधित अवस्थाएँ

शिक्षार्थियों के लिए; अरहत्ता से संबंधित राज्य; उच्चतर राज्य हैं

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

94. प्रथम मार्ग से और उच्चतर 3 मार्गों से भी राज्यों का उन्मूलन नहीं हुआ;

न तो प्रथम मार्ग से और न ही अन्य मार्गों से जड़ों सहित राज्यों का उन्मूलन हुआ है।

उच्चतर तीन मार्ग; ऐसी अवस्थाएँ जो न तो पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाती हैं और न ही

निर्वाण; ऐसी अवस्थाएँ जो न तो शिक्षार्थियों से संबंधित हैं और न ही अरहत्तों से।

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

95. सीमित अवस्थाओं को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

और 18 वर्ष से कम आयु के तत्व

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

96. अतुलनीय अवस्थाएँ; उच्च अवस्थाएँ, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण 4 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

97. सीमित उद्देश्यों वाले राज्यों को 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 10 से कम तत्व।

98. उच्च उद्देश्यों वाले राज्य; अतुलनीय उद्देश्यों वाले राज्य;

निम्न अवस्था वाले राज्य; गलत विचारों के कारण निश्चित भाग्य वाले राज्य;

सही दृष्टिकोणों के कारण निश्चित नियति के साथ; पथ वस्तु वाले राज्य;

पथ द्वारा निर्धारित अवस्थाएँ; पथ द्वारा नियंत्रित अवस्थाएँ हैं

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

99. मध्यम अवस्थाओं को 5 समूहों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

और 18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

100. निर्वाण को छोड़कर, अनिश्चित भाग्य वाले राज्य।

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

101. उत्पन्न अवस्थाओं को 5 समूहों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

और 18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

102. जिन अवस्थाओं का उदय नहीं हुआ है, उन्हें 5 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

7 आधार और 8 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; उन्हें 5 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

और 10 से कम तत्व

103. उत्पन्न होने वाली अवस्थाओं को 5 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

11 आधार और 17 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; उन्हें 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

और 1 तत्व के अंतर्गत।

104. भूतकाल की अवस्थाएँ; भविष्य की अवस्थाएँ; वर्तमान अवस्थाएँ; आंतरिक अवस्थाएँ;

आंतरिक और बाह्य अवस्थाओं को 5 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

105. निर्वाण को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए बाह्य राज्य

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

106. भूतकाल कर्म वाले राज्य; भविष्यकाल कर्म वाले राज्य हैं

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

107. वर्तमान कर्म वाले राज्य; आंतरिक कर्म वाले राज्य; राज्य

बाह्य वस्तु के साथ; आंतरिक और बाह्य वस्तु वाले राज्य हैं

इसे 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 8 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 10 से कम तत्व।

108. दृश्य और प्रभावकारी दोनों अवस्थाओं को 1 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

कुल योग, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

109. अदृश्य लेकिन प्रभाव डालने वाली अवस्थाओं को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

9 से कम आधार और 9 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 3 से कम आधार और 9 से कम तत्व।

110. ऐसे राज्य जो दिखाई नहीं देते और अतिक्रमण नहीं करते, जिनमें निब्बाना शामिल नहीं है।

समुच्चयों का वर्गीकरण 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; इन्हें वर्गीकृत नहीं किया गया है

10 आधार और 10 से कम तत्व।

8. दोहे 100

I. जड़ समूह 6

111. वे अवस्थाएँ जो मूल हैं; वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और जिनमें ये भी हैं

संबंधित मूल; वे राज्य जो मूल हैं और साथ ही संबंधित भी हैं

जड़ों को 1 समूह, 1 आधार और 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

1 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

112. वे अवस्थाएँ जो मूल नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जिनकी कोई मूल नहीं है;

वे अवस्थाएँ जो मूलों से विरक्त हैं; वे अवस्थाएँ जो न तो मूल हैं और न ही मूल।

न तो जड़ें हैं और न ही संबंधित जड़ें हैं, निब्बाना को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

113. वे राज्य जिनके मूल संबद्ध हैं; वे राज्य जो संबद्ध हैं

जड़ों के साथ; वे राज्य जिनकी संबद्ध जड़ें हैं लेकिन वे नहीं हैं

मूल अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो मूल अवस्थाओं से संबंधित हैं लेकिन स्वयं मूल अवस्थाएँ नहीं हैं;

वे अवस्थाएँ जो मूल नहीं हैं लेकिन उनसे संबद्ध मूल हैं, उन्हें वर्गीकृत किया जाता है।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

II. लघु मध्यवर्ती दोहे 7

114. चार कारणों से उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ; चार कारणों से निर्धारित अवस्थाएँ हैं

इन्हें 5 समूहों, 12 आधारों और 18 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

115. वे अवस्थाएँ जो 4 कारणों से उत्पन्न नहीं होतीं; वे अवस्थाएँ जो इनसे प्रभावित नहीं होतीं।

4 कारणों को किसी भी समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है; उन्हें वर्गीकृत किया गया है

1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

5 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

116. दृश्यता वाले राज्यों को 1 समुच्चय के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

1 आधार और 1 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व

117. दृश्यता के अभाव वाले राज्य, निब्बाना को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

11 आधार और 17 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; उन्हें 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

और 1 तत्व के अंतर्गत।

118. सीमावर्ती राज्यों को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

10 आधार और 10 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

119. राज्य बिना अतिक्रमण किए, निब्बाना को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

2 आधार और 8 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; उन्हें 10 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

आधार और 10 से कम तत्व।

120. भौतिक परिवर्तन वाली अवस्थाओं को 1 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

कुल योग, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 1 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

121. वे अवस्थाएँ जिनमें कोई भौतिक परिवर्तन नहीं होता, निर्वाण को छोड़कर।

समुच्चयों के वर्गीकरण के आधार पर, इन्हें 4 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 10 से कम तत्व।

122. सांसारिक अवस्थाओं को 5 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

123. वे अवस्थाएँ जो अलौकिक हैं, निर्वाण को छोड़कर।

समुच्चयों का वर्गीकरण, 4 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

2 आधार और 2 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

124. वे अवस्थाएँ जो किसी भी नेत्र-चेतना आदि द्वारा ज्ञात की जा सकती हैं;

वे अवस्थाएँ जो नेत्र-चेतना आदि द्वारा ज्ञात नहीं हो सकतीं।

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

III. कैंकर क्लस्टर 6

125. वे अवस्थाएँ जो कलंक हैं; वे अवस्थाएँ जो कलंक और दोनों हैं

कैंकर के कारक; वे अवस्थाएँ जो कैंकर और संबंधित दोनों हैं

कैंकर वाले को 1 समुच्चय के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

1 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

126. वे अवस्थाएँ जो दोष नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो वियोगित हैं

कैंकर से, निब्बाना को एग्रीगेट्स के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

इन्हें 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

18 तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

127. वे राज्य जो रोगग्रस्त हैं; वे राज्य जो रोगग्रस्त हैं

कैंकर के बारे में, लेकिन कैंकर नहीं; वे अवस्थाएँ जो इससे अलग हैं

कैंकर, लेकिन कैंकर के विषय, 5 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किए जाते हैं।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

128. वे राज्य जो दोषों से मुक्त हैं; वे राज्य जो

कैंकर से अलग हो गए हैं और कैंकर के विषय नहीं हैं, अपवाद सहित

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

129. वे राज्य जो कैंकर से संबंधित हैं; वे राज्य जो

कैंकर से संबंधित लेकिन कैंकर न होने वाले को निम्न श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व

चतुर्थ से नौवां भाग: बंधन, बंधन, बाढ़, रोक और गलतफहमी कलस्टरों

130. वे राज्य जो बंधन हैं... वे राज्य जो बंधन हैं... राज्य

जो बाढ़ हैं... राज्य जो बंधन हैं... राज्य जो हैं

बाधाएँ... ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो...

गलतफहमियों और गलतफहमियों के कारणों दोनों का वर्गीकरण किया जाता है।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

131. वे अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो हैं

गलतफहमियों से अलग होकर, निर्वाण को इससे बाहर रखते हुए

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

132. वे राज्य जो गलतफहमियों के शिकार हैं; वे राज्य जो

वे गलतफहमियों के विषय हैं, लेकिन वे स्वयं गलतफहमियां नहीं हैं;

ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियों से अलग हैं लेकिन वस्तुएँ हैं

गलतफहमियों को 5 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, 12 समूहों के अंतर्गत।

आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

133. वे राज्य जो गलतफहमियों के विषय नहीं हैं; राज्य

जो गलतफहमियों से अलग हैं और वस्तुएँ नहीं हैं

गलतफहमियों के कारण, निब्बाना को इस वर्गीकरण से बाहर रखा गया है।

समुच्चयों को 4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

134. वे राज्य जो गलतफहमियों से जुड़े हैं, वे हैं

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

X. उच्चतर मध्यवर्ती दोहे 14

135. जिन अवस्थाओं में वस्तुएँ होती हैं, उन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 10 से कम तत्व।

136. वे राज्य जिनका कोई उद्देश्य नहीं है, निर्वाण को छोड़कर।

समुच्चयों का वर्गीकरण, 1 समुच्चय के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है,

11 आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 1 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

137. चेतना की अवस्थाओं को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 आधार से कम और 7 तत्वों से कम।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

138. वे अवस्थाएँ जो चेतना नहीं हैं, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण 4 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 1 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

139. वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं; वे अवस्थाएँ जो संबद्ध हैं

चेतना के साथ; चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ

इन्हें 3 समूहों, 1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? 1. वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

140. वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक नहीं हैं, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, दो समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम श्रेणियों के अंतर्गत; इन्हें किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं किया गया है।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

141. चेतना से विरक्त अवस्थाएँ; ऐसी अवस्थाएँ जो

चेतना से जुड़े नहीं हैं, इसलिए निर्वाण इससे बाहर है।

समुच्चयों का वर्गीकरण, 1 समुच्चय के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है,

11 आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 1 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

142. चेतना द्वारा उत्पन्न अवस्थाओं को वर्गीकृत किया जाता है

4 से कम समुच्चय, 6 से कम आधार और 6 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 6 से कम आधार और 12 से कम तत्व।

143. वे अवस्थाएँ जो चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होतीं;

जो चेतना के साथ उत्पन्न नहीं होते; ऐसी अवस्थाएँ जो

चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होते हैं, निर्वाण को छोड़कर।

समुच्चयों का वर्गीकरण, 2 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम श्रेणियों के अंतर्गत; इन्हें किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं किया गया है।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

144. चेतना के साथ उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो

चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होने वाले समूहों को 4 वर्गों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

145. वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं और इससे उत्पन्न भी होती हैं

चेतना; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं, इससे उत्पन्न होती हैं

और चेतना के साथ उत्पन्न होते हैं; वे अवस्थाएँ जो संयुक्त हैं

चेतना के साथ, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होते हैं।

इन्हें 3 समूहों, 1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

146. वे अवस्थाएँ जो आपस में जुड़ी हुई नहीं हैं और न ही उत्पन्न हुई हैं

चेतना द्वारा; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी नहीं हैं, वे नहीं हैं

चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ उत्पन्न नहीं होते; अवस्थाएँ

जो इससे जुड़े नहीं हैं, इससे उत्पन्न नहीं होते हैं और इससे उत्पन्न नहीं होते हैं।

चेतना के साथ क्रमिक रूप से, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 2 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम श्रेणियों के अंतर्गत; इन्हें किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं किया गया है।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

147. आंतरिक अवस्थाओं को 2 समूहों में वर्गीकृत किया गया है,

6 से कम आधार और 12 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

3 से कम समुच्चय, 6 से कम आधार और 6 से कम तत्व।

148. वे राज्य जो बाह्य हैं, जिनमें निर्वाण शामिल नहीं है।

समुच्चयों का वर्गीकरण, 4 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

6 आधार और 6 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 6 से कम आधार और 12 से कम तत्व।

149. व्युत्पन्न राज्यों को 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है,

10 से कम आधार और 10 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 2 से कम आधार और 8 से कम तत्व

150. वे अवस्थाएँ जो व्युत्पन्न नहीं हैं, जिनमें निर्वाण को छोड़कर अन्य अवस्थाएँ शामिल हैं।

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

3 आधार और 9 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? 1. वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; इन्हें वर्गीकृत नहीं किया गया है

9 आधार और 9 से कम तत्व।

151. आसक्ति से प्राप्त होने वाली अवस्थाओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है।

5 समुच्चय, 11 आधारों से कम और 17 तत्वों से कम।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; उन्हें 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

और 1 तत्व के अंतर्गत।

152. वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं, निर्वाण को छोड़कर।

समुच्चयों के वर्गीकरण से, इन्हें 5 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

7 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी समूह के अंतर्गत नहीं; इन्हें वर्गीकृत नहीं किया गया है

5 आधार और 10 से कम तत्व।

XI. चिपके हुए समूह

XII. भ्रष्टाचार समूह 8

153. आसक्ति से ग्रस्त अवस्थाएँ... भ्रष्ट अवस्थाएँ;

ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी;

जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचारी दोनों हैं; ऐसे राज्य जो दोनों हैं

भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

1 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 से कम समुच्चय, 11 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

154. वे राज्य जो भ्रष्ट नहीं हैं; वे राज्य जो भ्रष्ट नहीं हैं

भ्रष्ट; भ्रष्टाचार से मुक्त राज्य, अपवाद स्वरूप

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

5 समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

155. वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार हैं; वे राज्य जो

भ्रष्टाचार के शिकार हैं, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्टाचार से अलग होते हुए भी, वे स्वयं भ्रष्टाचार के शिकार होते हैं।

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 18 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

156. वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं; वे राज्य जो

वे भ्रष्टाचार से अविभाजित हैं और भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं।

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

157. भ्रष्ट राज्य; वे राज्य जो इससे जुड़े हुए हैं

भ्रष्टाचार; ऐसे राज्य जो भ्रष्ट हैं लेकिन स्वयं भ्रष्ट नहीं हैं;

वे राज्य जो भ्रष्टाचार से जुड़े हैं लेकिन स्वयं भ्रष्ट नहीं हैं

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

XIII. अंतिम दोहे 18

158. प्रथम मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य; उच्चतर मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य

तीन मार्ग; प्रथम मार्ग द्वारा जड़ सहित सभी अवस्थाओं का उन्मूलन;

उच्चतर तीन पथों द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्यों के साथ-साथ

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

159. प्रथम मार्ग द्वारा समाप्त नहीं किए गए राज्य; समाप्त नहीं किए गए राज्य

उच्चतर तीन मार्गों द्वारा; जड़ों सहित अवस्थाएँ नष्ट नहीं हुईं

प्रथम पथ द्वारा; उच्चतर द्वारा जड़ों सहित राज्यों का उन्मूलन नहीं किया गया

तीन मार्ग, जिनमें निर्वाण को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखा गया है,

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 18 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

160. व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य; निरंतर चिंतन वाले राज्य

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 3 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 15 से कम तत्व।

161. व्यावहारिक चिंतन से रहित राज्य; निरंतर चिंतन से रहित राज्य

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 17 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

इन्हें किसी एक तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

162. परमानंद की अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो इसके साथ होती हैं

रैप्चर को 4 समूहों, 2 आधारों और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

163. परमानंद रहित अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो साथ नहीं होतीं

परमानंद द्वारा; वे अवस्थाएँ जिनमें आनंद नहीं होता, अपवाद सहित

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को वर्गीकृत किया जाता है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

164. आनंद से युक्त अवस्थाओं को निम्न श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है।

3 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 15 से कम तत्व।

165. उदासीनता से ग्रस्त अवस्थाओं को वर्गीकृत किया जाता है

3 से कम समुच्चय, 2 से कम आधार और 7 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 से कम समुच्चय, 10 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

166. वे अवस्थाएँ जिनमें उदासीनता नहीं होती, उन्हें छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

5 समुच्चय, 12 से कम आधार और 13 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

इन्हें 5 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

167. वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित हैं; वे अवस्थाएँ जो

अस्तित्व के चक्र में शामिल; वे अवस्थाएँ जो परे हैं

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 18 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

168. वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित नहीं हैं; अवस्थाएँ

जो अस्तित्व के चक्र में शामिल नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो

परे के साथ नहीं, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए

समुच्चयों को 4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

2 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

169. वे अवस्थाएँ जो सूक्ष्म-पदार्थ तल से संबंधित हैं; वे अवस्थाएँ जो

अमूर्त तल से संबंधित; वे अवस्थाएँ जो इससे बाहर निकलती हैं

अस्तित्वों का चक्र; जिन राज्यों का भाग्य निश्चित था, वे इसके बाद हार मान गए।

मृत्यु या उनके स्वयं घटित होने के बाद; वे अवस्थाएँ जो कारण हैं

विलाप को 4 समूहों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 से कम कुल योग, 10 से कम आधार और 16 से कम तत्व।

170. कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और

कितने तत्वों के अंतर्गत वे राज्य आते हैं जो इस श्रेणी में नहीं आते?

भौतिक तल; वे अवस्थाएँ जो अभौतिक तल से संबंधित नहीं हैं;

वे अवस्थाएँ जो अस्तित्व के चक्र से बाहर नहीं निकलतीं; अवस्थाएँ

जिनका भाग्य ऊपर बताए अनुसार निश्चित नहीं है; वे राज्य जो कारण नहीं हैं

विलाप का वर्गीकरण?

वे अवस्थाएँ जो सूक्ष्म-पदार्थ तल से संबंधित नहीं हैं... अवस्थाएँ

जो शोक का कारण नहीं हैं, निर्वाण को छोड़कर।

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी श्रेणी के अंतर्गत अवर्गीकृत नहीं है।

अध्याय एक की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: धातुकथा की सभी 371 जांच अवस्थाएँ।

जो या तो विशुद्ध भौतिकता, मानसिक कारक, चेतना और

निर्वाण या उनका संयोजन, इस विषयवस्तु का आधार बनता है।

अध्याय। जांच की प्रत्येक अवस्था को समुच्चय, आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

और तत्व और शेष समुच्चय, आधार और तत्व बाहर

कुल 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 18 तत्वों में से निम्नलिखित हैं

जिसे वर्गीकृत नहीं किया गया है। 371 राज्यों में सभी 105 आंतरिक राज्य शामिल हैं।

आंतरिक तालिकाओं में सूचीबद्ध जांच की अवस्थाएँ और सभी 66 त्रिक

और 200 दोहे जो जांच की बाहरी अवस्थाओं को सूचीबद्ध करते हैं

बाह्य तालिकाएँ।

चार्ट: यह चार्ट 28 राज्यों का वर्गीकरण दर्शाता है।

पदार्थ समूह, 52 मानसिक कारक, निर्वाण और चेतना के 89 प्रकार

समुच्चय, आधार और तत्वों के अंतर्गत। 28 अवस्थाएँ

पदार्थ समूह को स्थूल पदार्थ 12 और सूक्ष्म पदार्थ में विभाजित किया गया है।

16 क्योंकि पूर्व वाला 10 स्थूल आधारों के अंतर्गत आता है (आँख का आधार, कान का आधार—

मूर्त वस्तु आधार) और 10 स्थूल तत्वों के अंतर्गत (आँख तत्व, कान

तत्व— मूर्त वस्तु तत्व) और बाद वाला इसके अंतर्गत आता है

बोधगम्य आधार और बोधगम्य तत्व के अंतर्गत। सूक्ष्म पदार्थ 16,

मानसिक कारक 52 और निर्वाण संज्ञेय आधार के अंतर्गत आते हैं और

संज्ञेय तत्व के अंतर्गत।

चार्ट से यह देखा जा सकता है कि:—

(1) संवेदनशील आँख को पदार्थ समूह के अंतर्गत, आँख के आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है

और आंखों के नीचे का तत्व (चार्ट के उसी कॉलम में नीचे की ओर पढ़ें);

(2) लोभ, जो मानसिक निर्माण की 50 अवस्थाओं में से एक है,

इसे मानसिक गठन समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

संज्ञेय आधार और उसके अंतर्गत संज्ञेय तत्व;

(3) घृणा से उपजी चेतना, जो शेष 76 प्रकारों में से एक है

चेतना को चेतना समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

मन के आधार के अंतर्गत और मन-चेतना तत्व के अंतर्गत।

इस चार्ट का पूर्ण ज्ञान होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

क्योंकि समुच्चय, आधार और तत्वों का वर्गीकरण

उसमें दर्शाया गया तरीका, उसमें दी गई सभी विधियों का आधार बनता है।

इस धातु-कथा (धातु-कथा) के 14 अध्याय।

जब तक कि उन प्रकार के समुच्चयों, आधारों और तत्वों को जिनके अंतर्गत

जांच की प्रत्येक अवस्था को वर्गीकृत किया जाता है, उनकी संख्या ज्ञात होती है, जैसे

पाठ में दी गई जानकारी का पता नहीं लगाया जा सकता है। और वर्गीकरण करने में सक्षम होने के लिए

इस प्रकार जांच की प्रत्येक अवस्था, उसके विश्लेषणात्मक घटकों के अंतर्गत

पदार्थ, मानसिक कारक, चेतना और निर्वाण के शीर्ष

यह जानना आवश्यक है। यह जानकारी धम्मसंगनी में मिल सकती है, लेकिन

त्वरित संदर्भ के लिए इसे आंतरिक और बाह्य सारणियों में दिया गया है।

जो आगे दिए गए हैं। निम्नलिखित उदाहरण यह दिखाने के लिए दिए गए हैं कि

चार्ट की सहायता से, उसमें दी गई जानकारी का अनुप्रयोग।

जांच के राज्यों के वर्गीकरण के लिए तालिकाएँ

और समुच्चय, आधार और तत्वों की संख्या।

आंतरिक तालिकाएँ (अभ्भनतारा मटिका)

(नोट: A: समुच्चय; B: आधार; E: तत्व)

नोट @ : पदार्थ समूह को 1 समूह, 11 आधारों और 11 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

कुल मिलाकर 5 समुच्चय, 12 आधार और 18 तत्व हैं। अत:, पदार्थ

शेष 4 समुच्चयों, 1 आधार और 7 तत्वों के अंतर्गत समुच्चय को वर्गीकृत नहीं किया गया है।

यह नियम अन्य सभी मामलों पर लागू होगा।

नोट *: पाली पाठ के अनुसार निर्वाण को एक समूह के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

पंचखंड (पांच समुच्चय)

1. पदार्थ का समूह (रूपक्खन्धो) = पदार्थ की 28 अवस्थाएँ (A1, B11, E11)

2. भावना का समग्र योग (वेदनक्खन्धो) = भावना का मानसिक कारक (A1, B1, E1)

3. धारणा समुच्चय (सन्नखंडो) = धारणा मानसिक कारक (A1, B1, E1)

4. मानसिक गठन समुच्चय (संखरक्खन्धो) = 50

शेष मानसिक कारक (A1, B1, E1)

5. चेतना का समूह (विन्नानक्खन्धो) = 89 चेतनाएँ

समुच्चय मुक्त (खंड विमुत्तो) = निब्बान (इस प्रकार निब्बान)।

(A1, B1, E7) को एक समूह के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है

बारह आधार (द्वादश आयतनानि)

1. नेत्र आधार (चक्खयातनम्) = संवेदनशील आँख (A1, B1, E1)

2. कान का आधार (सोतयातनम) = संवेदनशील कान (A1, B1, E1)

3. नाक का आधार (घनायतनम्) = संवेदनशील नाक (ए1, बी1, ई1)

4. जीभ का आधार (जीव्हयातनम) = संवेदनशील जीभ (A1, B1, E1)

5. शरीर का आधार (काययतनम्) = संवेदनशील शरीर (A1, B1, E1)

6. दृश्य वस्तु आधार (रूपायतनम्) = दृश्य वस्तु (A1, B1, E1)

7. ध्वनि आधार (सद्दयातनम्) = ध्वनि या श्रव्य वस्तु (A1, B1, E1)

8. गंध आधार (गंडबायतनम) = गंध या घ्राण वस्तु (A1, B1, E1)

9. स्वाद आधार (रसायतनम्) = स्वाद या स्वाद वस्तु (A1, B1, E1)

10. मूर्त वस्तु आधार (फोत्थब्बायतनम) = मूर्त वस्तु

(पृथ्वी, ऊष्मा, हवा) (A1, B1, E1)

11. मन का आधार (मनायतनम्) = 89 चेतना (A1, B1, E7)

12. संज्ञेय आधार (धम्मयतनम्) - 52 मानसिक कारक, 16

सूक्ष्म पदार्थ (अर्थात जल, स्त्रीत्व, पुरुषत्व, हृदय का आधार)

शारीरिक जीवन, पोषण, पृथक स्थान, शारीरिक अंतरंगता,

मौखिक संकेत, पदार्थ का उत्प्लावन, पदार्थ की प्लास्टिसिटी,

पदार्थ की सुगमता, वृद्धि, निरंतरता, क्षय, अनित्यता) और

निब्बाना (A4, B1, E1)

अठारह तत्व (अत्तारस धातुयो)

1. नेत्र तत्व (चक्खु धातु) = संवेदनशील आँख (A1 , B1, E1)

2. कान तत्व (सोता धातु) = संवेदनशील कान (ए1, बी1, ई1)

3. नासिका तत्व (घन धातु) = संवेदनशील नाक (A1 , B1, E1)

4. जिह्वा तत्व (जीव धातु) = संवेदनशील जिह्वा (A1, B1, E1)

5. शरीर तत्त्व (काय धातु) = संवेदनशील शरीर (A1 , B1, E1)

6. दृश्यमान वस्तु तत्व (रूप धातु) = दृश्यमान वस्तु (A1, B1, E1)

7. ध्वनि तत्व (सद्दा धातु) = ध्वनि (ए1, बी1, ई1)

8. गंध तत्व (गंध धातु) = गंध (ए1, बी1, ई1)

9. स्वाद तत्व (रस धातु) = स्वाद (ए1, बी1, ई1)

10. मूर्त वस्तु तत्व (फोत्थब्बा धातु) = मूर्त वस्तु (A1, B1, E1)

11. नेत्र चेतना तत्व (चक्खुविन्नना धातु) = नेत्र चेतना 2 (A1, B1, E1)

12. कान चेतना तत्त्व (सोताविन्नन धातु) = कान विपक्ष। 2 (ए1, बी1, ई1)

13. नाक चेतना तत्व (घनविन्नना धातु) = नाक चेतना 2 (ए1, बी1, ई1)

14. जिह्वा चेतन तत्त्व (जीवविहान धातु) = जिह्वा

कंस. 2 (ए1, बी1, ई1)

15. देह चेतना तत्व (कायविन्न धातु) = देह चेतना 2 (A1, B1, E1)

16. मन तत्व (मनो धातु) = 5-द्वार ; प्राप्तकर्ता 2 (ए1, बी1, ई1)

17. मन चेतना तत्त्व (मनोविन्ना धातु)=शेष-

चेतना 76 (A1, B1, E1)

18. बोधगम्य तत्व (धम्म धातु) = 52 मानसिक कारक, 16 सूक्ष्म कारक

पदार्थ और निर्वाण (A4, B1, E1)

चार सत्य (Cattari saccani)

1. दुखदायी सत्य (दुक्कबा सच्चम) = सांसारिक चेतना 81,

लालच रहित मानसिक कारक 52 लालच को छोड़कर (अर्थात 52 - 1 = 51),

मामला 28 (A5, B12, E18)

2. उत्पत्ति सत्य (समुदय सच्चम) = लालच मानसिक कारक (ए1, बी1, ई1)

3. निरोध सत्य (निरोध सच्चम) = निब्बाना (_ , B1, E1)

4. पथ सत्य (मैग्गा सैकम) = 4 पथों पर मौजूद 8 पथ कारक

चेतना, अर्थात्: सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही

सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही

ध्यान। सही एकाग्रता (A1, B1, E1)

बाईस संकाय (बविसातिन्द्रियानी)

1. नेत्र संबंधी क्षमता (चक्खुंद्रियम) = संवेदनशील नेत्र (A1, B1, E1)

2. श्रवण शक्ति (सोतिन्द्रियम) = संवेदनशील कान (A1, B1, E1)

3. नाक की क्षमता (घनिन्द्रियम) = संवेदनशील नाक (A1, B1, E1)

4. जीभ की क्षमता (जीविहिन्द्रियम) = संवेदनशील जीभ (A1, B1, E1)

5. शारीरिक क्षमता (कयिन्द्रियम) = संवेदी शरीर (A1, B1, E1)

6. महिला संकाय (इत्तिंद्रियम) = नारीत्व (ए1, बी1, ई1)

7. पुरुष संकाय (पुरिसिंद्रियम) = पुरुषत्व (A1, B1, E1)

8. जीवन शक्ति (जीवितिन्द्रियम) = भौतिक और *मानसिक जीवन (A2, B1, E1)

9. मन की क्षमता (मनिन्द्रियम) = 89 चेतना (A1, B1, E7)

10. शारीरिक सुख की अनुभूति (सुखिंद्रियम) = मानसिक अनुभूति कारक

शारीरिक सुख चेतना में उपस्थित (A1, B1, E1)

11. शारीरिक पीड़ा का अनुभव करने की क्षमता (दुक्खिंद्रियम) = मानसिक कारक

शारीरिक दर्द की चेतना में उपस्थित (A1, B1, E1)

12. मानसिक आनंद की क्षमता (सोमनसिंद्रियम) = मानसिक अनुभूति कारक

62 मानसिक आनंद चेतना (A1, B1, E1) पर मौजूद

13. शोक की क्षमता (डोमनसिंद्रियम) = मानसिक भावना कारक

दो घृणा-आधारित चेतनाओं (A1, B1, E1) में मौजूद

14. उदासीनता की क्षमता (उपेक्खिंद्रियम) = भावना संबंधी मानसिक कारक

55 वर्ष की आयु में उदासीनता चेतना (A1, B1, E1) मौजूद है

* मनोवैज्ञानिक जीवन, जीवन शक्ति का मानसिक कारक, मानसिक के अंतर्गत आता है।

गठन समुच्चय

15. आस्था की क्षमता (सद्धिंद्रियम) = मौजूद आस्था का मानसिक कारक

59 वर्ष की आयु में सुंदर चेतना (A1, B1, E1)

16. ऊर्जा संकाय (वीरियिंद्रियम) = मौजूद ऊर्जा मानसिक कारक

89 चेतना पर 2 x 5 चेतना 10 को छोड़कर, मन

तत्व 3, जांच चेतना 3 (अर्थात 89 - 16 = 73) (A1, B1, E1)

17. सतिन्द्रियम (सतिन्द्रियम) = सतिन्द्रिय मानसिक कारक

59 सुंदर चेतना (A1, B1, E1) पर उपस्थित

18. एकाग्रता क्षमता (समाधिन्द्रियम) = एकाग्रचित्तता

संदेह को छोड़कर चेतना के 89वें स्तर पर मौजूद मानसिक कारक

चेतना 1, 2 x 5 चेतना 10, मन तत्व 3,

जांच चेतना 3 (अर्थात 89 - 17 = 72) (A1, B1, E1)

19. ज्ञान की क्षमता (पन्निंद्रियम) = ज्ञान संबंधी मानसिक कारक

39 सांसारिक त्रिमूल चेतना (A1, B1, E1) पर उपस्थित

20. मैं वह सब जान लूँगा जो मैं नहीं जानता (अनन्नतनसमित इंद्रियम)

= जीत की राह में मौजूद बुद्धिमत्तापूर्ण मानसिक कारक

पथ (अर्थात पहला पथ) (A1, B1, E1)

21. उच्चतर बोध क्षमता (अन्निन्द्रियम) = मानसिक ज्ञान

यह कारक तीन उच्च पथों और तीन निम्न फल प्राप्ति (A1, B1, E1) में मौजूद है।

22. ज्ञान रखने वाला (अन्नतविन्द्रियम) = बुद्धि

अरहट्टा फल प्राप्ति में मौजूद मानसिक कारक (A1, B1, E1)

आश्रित उत्पत्ति (पतीच्चसमुप्पदा)
कारक 12, प्रकार 17 (अंग 12, भेद 17)

1. अज्ञान (अविज्जा) = भ्रम की मानसिक स्थिति

12 अस्वस्थ चेतना (A1, B1, E1)

2. अज्ञान से प्रेरित रचनाएँ (अविज्जपच्चय संखार) = संकल्प

12 वर्ष की आयु में मौजूद मानसिक कारक अस्वस्थ चेतना

और 17 सांसारिक स्वस्थ चेतना (A1, B1, E1)

3. चेतना, निर्माण द्वारा ही वातानुकूलित होती है (संस्कारपच्चयविन्नानम्)

= 89 चेतना (A1, B1, E7)

4. चेतना द्वारा वातानुकूलित मानसिकता-भौतिकता

(विन्नाना पकाया नाम-रूपम) = मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (ए4, बी11, ई11)

5. मानसिक-भौतिकता से बद्ध 6 आधार हैं (नाम-रूप पच्चया)।

सलयातनम्) = 89 चेतना और 5 संवेदनशील अंग (A2, B6, E12)

6. 6 आधारों द्वारा वातानुकूलित संपर्क है (सलायतन-पाकाया फासो)

= चेतना के 89वें स्तर पर मौजूद मानसिक कारक से संपर्क करें (A1, B1, E1)

7. स्पर्श से प्रेरित भावना (फस्सा-पच्चया वेदना)

= चेतना के 89वें स्तर पर मौजूद मानसिक कारक की अनुभूति (A1, B1, E1)

8. भावना से प्रेरित लालसा है (वेदना-पकाया तन्हा)

= लालच से उत्पन्न चेतना के 8 स्तरों (A1, B1, E1) पर लालच का मानसिक कारक मौजूद है।

9. तृष्णा से बंधा हुआ चिपकना है (तन्हा-पकाया उपादनम्)

= लालच से उत्पन्न चेतना में 8वें स्तर पर लालच का मानसिक कारक मौजूद होता है।

और चेतना के चौथे स्तर पर मौजूद गलत-दृष्टिकोण मानसिक कारक

गलत दृष्टिकोण से संबंधित (A1, B1, E1)

10. कम्म भावो = इच्छा मानसिक कारक

12 अस्वास्थ्यकर और 17 सांसारिक स्वास्थ्यकर पर उपस्थित

चेतना (A1, B1, E1)

पुनर्जन्म बनना 9 (उपपत्ति भाव 9)

पुनर्जन्म बनना (उपपत्ति भावो) = सांसारिक परिणाम 32,

मानसिक कारक 35, कर्म-उत्पादित पदार्थ 20 (A5, B11, E17)

(ए) कामुक बनना (काम भावो) = कामुक परिणाम 23,

मानसिक कारक 38, जिनमें 3 संयम और दो असीमितताएँ शामिल नहीं हैं।

(अर्थात 38 - 5 = 33), कर्म-निर्मित पदार्थ 20 (ए5 बी11 ई17)

(ख) सूक्ष्म पदार्थ का बनना (बुपा भावो) = सूक्ष्म पदार्थ का परिणामी

5, नेत्र चेतना 2, कान चेतना 2, ग्रहण चेतना 2,

जांच चेतना 3, मानसिक कारक 35,

कर्म से उत्पन्न पदार्थ 20, स्त्रीत्व और पुरुषत्व को छोड़कर,

नाक, जीभ और शरीर (अर्थात 20 - 5 = 15) (A5 B5 E8)

(सी) अभौतिक बनना (अरूप भावो) = अभौतिक परिणाम 4,

मानसिक कारक 30 (A4 B2 E2)

(डी) प्रत्यक्ष बनना (सन्ना भावो) = सांसारिक परिणाम 32

परिणाम 1 में न तो धारणा और न ही गैर-धारणा को शामिल किया गया है

(अर्थात 32 - 1 = 31), मानसिक कारक 35, कर्म-उत्पादित

मामला 20 (A5 B11 E17)

(ई) गैर-अनुभूत बनना (असन्ना भावो) = नौ गुना जीवन शक्ति

समूह विषय (A1 B2 E2)

(f) न तो बोध और न ही अबोध होना (नेवासन्नाना)

सन्ना भावो = न तो बोध और न ही अबोध

परिणामी 1, मानसिक कारक 30 (A4 B2 E2)

(छ) एक-समुच्चय बनना (एकवोकर भावो) = समान

अगोचर विकास (A1 B2 E2)

(ज) चार समुच्चय बनना (कैटुवोकर भावो) = समान

अमूर्त बनना (A4 B2 E2)

(i) पांच-समुच्चय बनना (पंचवोकर भावो) = कामुक

परिणामी 23, सूक्ष्म-सामग्री परिणामी 5, मानसिक कारक 35,

कर्म-उत्पादित पदार्थ 20 (A5 B11 E17)

11. जन्म (जाति) = उत्पन्न पदार्थ की उत्पत्ति ही जन्म है।

पदार्थ, चार मानसिक समूहों का उदय ही जन्म है

मानसिकता (A2 B1 E1)

12. वृद्धावस्था (जरा) = उत्पन्न पदार्थ की वृद्धावस्था ही वृद्धावस्था है।

पदार्थ के संदर्भ में, चार मानसिक समूहों की वृद्धता ही वृद्धावस्था है।

मानसिकता (A2 B1 E1)

(12) मृत्यु (मरनम) = उत्पन्न पदार्थ की समाप्ति है

पदार्थ की मृत्यु, चार मानसिक समुच्चयों का क्षय ही है।

मानसिकता की मृत्यु (A2 B1 E1)

दुःख (सोको) = घृणा से प्रेरित दो स्थितियों में मौजूद दुखद भावना

चेतना (A1 B1 E1)

विलाप (पारिदेवो) = श्रव्य वस्तु जो उत्पन्न हुई हो

विकृत मानसिकता (A1 B1 E1)

दु:ख (दुक्खम) = शरीर-चेतना में उपस्थित होने की अनुभूति

पीड़ा से संबंधित (A1 B1 E1)

शोक (डोमनसम) = घृणा से प्रेरित दो स्थानों पर मौजूद शोकपूर्ण भावना

चेतना (A1 B1 E1)

„निराशा (उपायसो) = घृणा से ग्रस्त दो मानसिक कारकों में मौजूद घृणा

चेतना (A1 B1 E1)

ध्यान और अन्य के अनुप्रयोग 9 (सतिपट्ठनादि 9)

ध्यान के 4 अनुप्रयोग (चट्टारो सतिपथाना) = ध्यान

8 अलौकिक चेतना (A1 B1 E1) पर मौजूद मानसिक कारक

चार महान प्रयास (चट्टारो सम्मप्पधना) = ऊर्जा और मानसिक ऊर्जा

8 अलौकिक चेतना (A1 B1 E1) पर मौजूद कारक

मानसिक शक्ति प्राप्त करने के चार मार्ग (Cattaro iddhipada) = इरादा,

ऊर्जा, चेतना और ज्ञान जैसे मानसिक कारक मौजूद हैं

8 अलौकिक चेतना (A2 B2 E2)

4 ट्रान्स या झाना (कैटरी झानानी) = अनुप्रयुक्त-विचार,

निरंतर चिंतन, परमानंद, आनंद और मन की एकाग्रता (A2 B1 E1)

चार असीमित अवस्थाएँ (Cattasso appamannayo) = मानसिक कारक

प्रेम, करुणा और सहानुभूति जो मौजूद हैं

प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ सूक्ष्म-सामग्री ध्यान और उदासीनता

पांचवें ध्यान (A1 B1 E1) में मौजूद मानसिक कारक

पंचिन्द्रियानी (पांच इंद्रियां) = आस्था, ऊर्जा, जागरूकता,

एकाग्रता और ज्ञान जैसे मानसिक कारक 8 अलौकिक स्तरों पर मौजूद होते हैं।

चेतना (A1 B1 E1)

पंचबलानी के पाँच गुण = आस्था, ऊर्जा, जागरूकता, एकाग्रता, एकत्व

तीक्ष्णता और बुद्धिमत्ता, ये मानसिक कारक 8 अलौकिक स्तरों पर मौजूद हैं।

चेतना (A1 B1 E1)

ज्ञानोदय के 7 कारक (सत्त बोज्झंग) = सचेतनता,

बुद्धि, ऊर्जा, परमानंद, शांति (मानसिक कारकों और

चेतना), एकाग्रता और समभाव जैसे मानसिक कारक

8 अलौकिक चेतना (A1 B1 E1) पर मौजूद

महान आठ गुना पथ (एरियो अथांगिको मग्गो) = बुद्धि,

व्यावहारिक विचार, तीन संयम, ऊर्जा, जागरूकता और

एकाग्रता संबंधी मानसिक कारक 4 पथ-चेतना (A1 B1 E1) पर मौजूद हैं

समूह 7 से संपर्क करें

1. संपर्क (फासो) = 89 पर मौजूद संपर्क मानसिक कारक

चेतना (A1 B1 E1)

2. भावना (वेदना) - 89वें स्थान पर मौजूद मानसिक कारक की भावना

चेतना (A1 B1 E1)

3. धारणा (सन्ना) = 89 पर मौजूद मानसिक कारक की धारणा

चेतना (A1 B1 E1)

4. संकल्प (चेतना/चेतना) = 'संकल्पना मानसिक कारक जो 89 पर मौजूद है'

चेतना (A1 B1 E1)

5. चेतना (चित्तम) = 89 चेतना 1 1 7

6. निर्णय (अधिमोक्खो) — निर्णय लेने में मौजूद मानसिक कारक

89 चेतना, 2 x 5 चेतना को छोड़कर 10 और

संदेह चेतना के साथ था (अर्थात 89 - 11 = 78) (A1 B1 E1)

7. ध्यान (मानसिकरो) = 89 पर मौजूद ध्यान मानसिक कारक

चेतना (A1 B1 E1)

बाह्य सारणी (बहिरा मटिका)

I. त्रिक 22 (टीका 22)

1. (i) स्वस्थ अवस्थाएँ (कुसला धम्म) = 'स्वस्थ'

चेतना 21, मानसिक कारक 38 (A4 B2 E2)

(ii) अकुशल अवस्थाएँ (अकुशल धम्म) = अस्वास्थ्यकर

चेतना 12, मानसिक कारक 27 (A4 B2 E2)

(iii) अनिर्धारित अवस्थाएँ (अब्यकता धम्म) = परिणामी

चेतना 36, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक

कारक 38, पदार्थ 20 और निर्वाण (A5 B12 E18)

2. (i) सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ (सुखाय वेदनायसम्पयुत्त)।

धम्म) = आनंद से युक्त चेतना 63,

मानसिक कारक 52, भावना, घृणा को छोड़कर,

ईर्ष्या, कंजूसी, चिंता और संदेह (अर्थात 52 - 6 = 46) (A3 B2 E3)

(ii) दर्दनाक अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ (दुक्खया वेदनायसम्पयुत्त)।

धम्म) = चेतना जिसके साथ

दर्द 3, मानसिक कारक 27 (भावना, परमानंद, लालच को छोड़कर)

गलत दृष्टिकोण, अहंकार और संदेह (अर्थात 27 - 6 = 21) (A3 B2 E3)

(iii) ऐसी अवस्थाएँ जो ऐसी भावना से जुड़ी होती हैं जो न तो दर्दनाक होती हैं और न ही

सुखद (अदुक्खमासुखाय वेदनाय संपयुत्त

धम्म = उदासीनता से युक्त चेतना

55, मानसिक कारक 52, भावना, परमानंद, घृणा को छोड़कर,

ईर्ष्या, चिंता और कंजूसी (अर्थात 52 - 6 = 46) (A3 B2 E7)

3. (i) परिणामी अवस्थाएँ (विपाक धम्म) = परिणामी चेतना

36, मानसिक कारक 38 (A4 B2 E8)

(ii) परिणामी राज्य बनाने वाले राज्य (विपाक धम्म धम्म)

= अस्वस्थ चेतना 12, स्वस्थ चेतना

21, मानसिक कारक 52 (A4 B2 E2)

(iii) वे अवस्थाएँ जो न तो परिणामी हैं और न ही परिणामी उत्पन्न करती हैं

अवस्थाएँ (नेवविपाक नविपाक धम्म धम्म) = निष्क्रिय

चेतना 20, मानसिक कारक 35, पदार्थ 28,

निब्बाना (A*5 B12 E13)

4. (i) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त होती हैं और अनुकूल होती हैं

आसक्ति (उपादिननुपादनिया धम्म) = सांसारिक परिणाम

चेतना 32, मानसिक कारक 35, कर्म-उत्पादित

मामला 20 (A5 B11 E17)

(ii) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं बल्कि अनुकूल होती हैं

आसक्ति (अनुपदिननुपादनिया धम्म) = अस्वास्थ्यकर

चेतना 12, सांसारिक स्वस्थ चेतना

17, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक कारक 52, मन द्वारा निर्मित

पदार्थ 17, तापमान से उत्पन्न पदार्थ 15,

पोषक तत्वों से उत्पादित पदार्थ 14 (A5 B7 E8)

(iii) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं और अनुकूल नहीं होतीं

चिपकना (अनुपदिन्न अनुपदानिय धम्म) = सुप्रमुंडेन

चेतना 8, मानसिक कारक 36, निर्वाण (A*4 B2 E2)

5. (i) भ्रष्ट और भ्रष्ट करने वाले राज्य (Samkilittha samkilesika)

धम्म) = अस्वस्थ चेतना 12, मानसिक

कारक 27 (A4 B2 E2)

(ii) भ्रष्ट नहीं बल्कि भ्रष्ट करने वाले राज्य (Asamkilittha samkilesika)

धम्म) = सांसारिक, संपूर्ण चेतना 17, सांसारिक

परिणामी 32, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक

कारक 38, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(iii) न तो भ्रष्ट और न ही भ्रष्ट करने वाले राज्य (असमकिलित्था)

समकिलेसिका धम्म) = अलौकिक चेतना 8,

मानसिक कारक 36, निर्वाण (A*4 B2 E2)

6. (i) व्यावहारिक और सतत चिंतन वाले राज्य (सवित्तक्का)

(सविचारा धम्म) = व्यावहारिक विचार से युक्त चेतना

और निरंतर विचार 55, मानसिक कारक 52

व्यावहारिक विचार और निरंतर विचार को छोड़कर (अर्थात

52 - 2 = 50) (A4 B2 E3)

(ii) व्यावहारिक चिंतन के बिना, लेकिन निरंतर चिंतन वाले राज्य

(अवितक्क विकारमत्त धम्म) = दूसरा झाना

चेतना 11, मानसिक कारक 38 (अनुप्रयुक्त विचार को छोड़कर)
और निरंतर चिंतन (अर्थात 38 - 2 = 36), 55 अनुप्रयुक्त चिंतन

55 वर्ष की आयु में मौजूद मानसिक कारक, व्यावहारिक और निरंतर विचार

चेतना (A4 B2 E2)

(iii) व्यावहारिक और निरंतर चिंतन से रहित राज्य

(अविताक्का अविचारा धम्म) = 55 चेतना के बिना

व्यावहारिक विचार और निरंतर विचार के बिना, मानसिक

व्यावहारिक विचार और निरंतर विचार को छोड़कर कारक 38
(अर्थात 38 - 2 = 36), 11 निरंतर-विचार मानसिक

द्वितीय ध्यान की 11वीं चेतना में उपस्थित कारक,

मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E17)

7. (i) परमानंद से युक्त अवस्थाएँ (पितिसहागत धम्म)

परमानंद से युक्त चेतना 51, मानसिक

परमानंद, घृणा, ईर्ष्या, कंजूसी को छोड़कर कारक 52
चिंता और संदेह (अर्थात 52 - 6 = 46) (A4 B2 E2)

(ii) आनंद के साथ स्थितियाँ (सुखासहागत धम्म)

- आनंद से युक्त चेतना 63, मानसिक

भाव, परमानंद, घृणा, ईर्ष्या, कंजूसी को छोड़कर कारक 52
चिंता और संदेह (अर्थात 52 - 6 = 46) (A3 B2 E3)

(iii) उदासीनता के साथ राज्य (उपेक्खसहागता)।

धम्म = उदासीनता से युक्त चेतना

55, मानसिक कारक 52, भावना, परमानंद, घृणा को छोड़कर,
ईर्ष्या, चिंता और कंजूसी (अर्थात 52 - 6 = 46) (A3 B2 E7)

8. (i) प्रथम पथ द्वारा नष्ट किए गए राज्य (दस्सानेना पहतब्बा)

धम्म) - लोभ में निहित चेतना *8, चेतना

घृणा में निहित 2, संदेह चेतना 1, मानसिक

कारक 27 (A4 B2 E2)

(ii) उच्चतर तीन मार्गों द्वारा समाप्त किए गए राज्य (भवनय पहतब्बा)
धम्म = गलत दृष्टिकोण से अलग हुई चेतना

4. घृणा में निहित चेतना 2. बेचैनी चेतना

1, मानसिक कारक 27 गलत दृष्टिकोण को छोड़कर और

संदेह (अर्थात 27 - 2 = 25) (ए4 बी2 ई2)

(iii) वे राज्य जो न तो प्रथम मार्ग से और न ही उच्चतर मार्ग से समाप्त हुए 3

पथ (नेवदस्सनेना न भवनया पहतब्बा धम्म)

= संपूर्ण चेतना 21, परिणामी चेतना

36, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक कारक 38, पदार्थ

28 और निब्बाना (A*5 B12 E18)

9. (i) प्रथम पथ (दस्सानेना) द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्यों सहित

pahatabba hetuka dhamma) = चेतना

लोभ में निहित 8, घृणा में निहित चेतना 2, संदेह

चेतना 1, मानसिक कारक 27 भ्रम को छोड़कर

संदेह चेतना में उपस्थित (A4 B2 E2)

(ii) उच्चतर 3 मार्गों द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्य

(भवनया पहतब्बा हेतुका धम्म) = चेतना

गलत दृष्टिकोण 4 से अलग, चेतना जड़ जमा चुकी है

घृणा 2, बेचैनी चेतना 1, मानसिक कारक 27

गलत धारणा, संदेह और केवल मौजूद भ्रम को छोड़कर

बेचैनी चेतना (अर्थात 27 - 2 = 25) (A4 B2 E2)

(iii) प्रथम पथ द्वारा न तो जड़ सहित राज्य नष्ट किए गए

न ही उच्चतर 3 पथों द्वारा (नेवादासनेन न भवनाय

pahatabba hetuka dhamma) = संपूर्ण चेतना

21, परिणामी चेतना 36, निष्क्रिय चेतना

20, मानसिक कारक 38, भ्रम की उपस्थिति, भ्रम के 2 मूल कारण,

मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

10. (i) पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ (अचयगामिनो धम्म)

= अस्वस्थ चेतना 12, सांसारिक स्वस्थ

चेतना 17, मानसिक कारक 52 (A4 B2 E2)

(ii) निब्बाना (अपाकायगामिनो धम्म) की ओर ले जाने वाले राज्य

= पथ चेतना 4, मानसिक कारक 36 (A4 B2 E2)

(iii) ऐसी अवस्थाएँ जो न तो पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाती हैं और न ही निर्वाण की ओर।

(नेवाकायागमिनापाकायागामिनो धम्म) = परिणामी

चेतना 36, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक

कारक 38, पदार्थ 28, निर्वाण (A*5 B12 E18)

11. (i) शिक्षार्थियों से संबंधित अवस्थाएँ (सेक्खा धम्म) = 8

अरहत्त फल प्राप्ति को छोड़कर अलौकिक चेतना,

मानसिक कारक 36 (A4 B2 E2)

(ii) अरहट्टा (असेक्खा धम्म) से संबंधित राज्य

= अरहत्ता फल प्राप्ति चेतना 1, मानसिक कारक 36 (A4 B2 E2)

(iii) वे राज्य जो न तो शिक्षार्थियों से संबंधित हैं और न ही अरहट्टा से।

(नेवासेक्खा-ना-सेक्खा धम्म) = सांसारिक चेतना

81, मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

12. (i) परित्त धम्म (सीमित अवस्थाएँ) = संवेदी चेतना

54, मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) उच्चतर अवस्थाएँ (महाग्गत धम्म) = उच्चतर चेतना

27, मानसिक कारक 35 (A4 B2 E2)

(iii) अतुलनीय अवस्थाएँ (अप्पमना धम्म) == सुपरमुंडेन

चेतना 8, मानसिक कारक 36 और निर्वाण (A*4 B2 E2)

13. (i) सीमित उद्देश्यों वाले राज्य (परितरम्मन धम्म)

= संवेदी चेतना 54, अलौकिक शक्तियां 2,

मानसिक कारक 52 (A4 B2 E8)

(ii) उच्च उद्देश्यों वाले राज्य (महाग्गतरम्मन धम्म)

= अस्वस्थ चेतना 12, मन द्वार चेतावनी

1. महान स्वस्थ चेतना 8. महान निष्क्रिय चेतना

8, चेतना की अनंतता 3, न ही बोध

न ही अबोध चेतना 3, न ही अलौकिक शक्तियां 2,

मानसिक कारक 52, संयम को छोड़कर 3, असीमित 2

(अर्थात 52 - 5 = 47) (A4 B2 E2)

(iii) अतुलनीय उद्देश्यों वाले राज्य (अप्पमपरम्मना)

धम्म) = मन-द्वार सजगता चेतना 1, महान

ज्ञान से संबंधित स्वस्थ चेतना 4,

ज्ञान से जुड़ी महान निष्क्रिय चेतना 4,

असाधारण शक्तियां 2, अलौकिक चेतना

8, मानसिक कारक 38 असीमित को छोड़कर 2 (अर्थात

38 - 2 = 36) (A4 B2 E2)

14. (i) निम्न अवस्थाएँ (हीन धम्म) = अस्वस्थ चेतना

12, मानसिक कारक 27 (A4 B2 E2)

(ii) मध्यम अवस्था (मज्झिमा धम्म) = सांसारिक संपूर्ण

चेतना 17, सांसारिक परिणामी चेतना 32,

निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक कारक 38, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(iii) उच्चतर अवस्थाएँ (पानित धम्म) = अलौकिक चेतना

8, मानसिक कारक 36, निर्वाण (A*4 B2 E2)

15. (i) गलत विचारों के कारण निश्चित भाग्य वाले राज्य (मिच्छत्तनियत)

धम्म = गलत दृष्टिकोण का सातवाँ आवेग

संबद्ध चेतना 4, घृणा की सातवीं प्रेरणा 2

चेतना, मानसिक कारक 27 अभिमान को छोड़कर और

संदेह (अर्थात 27 - 2 = 25) (ए4 बी2 ई2)

(ii) सही दृष्टिकोणों के कारण निश्चित भाग्य वाले राज्य (समत्तनियाता)

धम्म) = पथ चेतना 4, मानसिक कारक 36 (A4 B2 E2)

(iii) बिना नियत नियति वाले राज्य (अनियत धम्म) = 12 अहितकर

उपरोक्त (i) में उल्लिखित 7वें आवेगों को छोड़कर चेतना,

सांसारिक स्वस्थ चेतना 17, परिणामी

चेतना 36, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक

कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

16. (i) पथ विषय वाली अवस्थाएँ (मग्गराममन धम्म) = मन का द्वार

चेतावनी चेतना 1, महान स्वस्थ चेतना

ज्ञान 4 से संबंधित, महान निष्क्रिय

ज्ञान से संबंधित चेतना 4, अलौकिक

शक्तियां 2, मानसिक कारक 38, संयम को छोड़कर 3,

और असीमित 2 (अर्थात 38 - 5 = 33) (A4 B2 E2)

(ii) पथ द्वारा वातानुकूलित राज्य (मग्गहेतुका धम्म)

= पथ चेतना 4, मानसिक कारक 38 को छोड़कर

2 अपरिमेय (अर्थात 38 - 2 = 36) (ए4 बी2 ई2)

(iii) मार्ग द्वारा संचालित राज्य (मग्गधिपतिनो धम्म)

ज्ञान से जुड़ी महान, स्वस्थ चेतना

4. महान निष्क्रिय चेतना से जुड़ी हुई

ज्ञान 4, पथ चेतना 4, मानसिक कारक 38 को छोड़कर

अपरिमेय 2 (अर्थात 38 - 2 = 36) (ए4 बी2 ई2)

17. (i) उत्पन्न अवस्थाएँ (उपन्ना धम्म) = वर्तमान चेतना

89, मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) राज्य उत्पन्न नहीं हुआ (अनुप्पन्न धम्म) = भविष्य अहितकर

चेतना 12, स्वस्थ चेतना 21, निष्क्रिय

चेतना 20, मानसिक कारक 52, मन द्वारा निर्मित

पदार्थ 17, तापमान से उत्पन्न पदार्थ 15,

पोषक तत्वों से उत्पादित पदार्थ 14 (A5 B7 E8)

(iii) उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ (उप्पडिनो धम्म) = भविष्य

परिणामी चेतना 36, मानसिक कारक 38, कर्म उत्पन्न

मामला 20 (A5 B11 E17)

18. (i) भूतकाल अवस्थाएँ (अतीत धम्म) = भूतकाल चेतना 89,

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) भविष्य की अवस्थाएँ (अनगत धम्म) = भविष्य की चेतना89

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(iii) वर्तमान अवस्थाएँ (पच्चुप्पन्न धम्म) = वर्तमान चेतना 89,

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

19. (i) भूतकाल के कर्मों से युक्त अवस्थाएँ (अतितरम्मन धम्म) — मन का द्वार

जागरूकता 1, संवेदी आवेग 29,

चेतना का पंजीकरण 11, अलौकिक शक्तियां 2,

चेतना की अनंतता 3, न तो धारणा और न ही

गैर-बोध चेतना 3, मानसिक कारक 52 को छोड़कर
संयम 3, और असीमित *2* (अर्थात 52 - 5 = 47) (A4 B2 E2)

(ii) भविष्य की वस्तु वाले राज्य (अनागतरम्मन धम्म)

= मन-द्वार जागरूकता चेतना 1, संवेदी आवेग

29, चेतना का पंजीकरण 11, अलौकिक शक्तियाँ

2, मानसिक कारक 52 असीमितता को छोड़कर 2 (अर्थात 52 — 2

= 50 (A4 B2 E2)

(iii) वर्तमान उद्देश्य वाले राज्य (पच्चुप्पन्नारम्मन धम्म)

= 2 X 5 चेतना 10, मन तत्व 3, मन-द्वार

जागरूकता 1, संवेदी आवेग 29,

चेतना का पंजीकरण 11, अलौकिक शक्तियां 2, मानसिक

52 के गुणनखंड, असीमित 2 को छोड़कर (अर्थात 52 - 2 = 50) (A4 B2 E8)

20. (i) आंतरिक अवस्थाएँ (अज्जत्त धम्म) = चेतना 89,

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) बाह्य अवस्थाएँ (बहिद्ध धम्म) = चेतना 89,

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

(iii) आंतरिक और बाह्य अवस्थाएँ (अज्जत्त बहिद्ध धम्म)

= चेतना 89, मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

21. (i) आंतरिक उद्देश्य वाले राज्य (अज्जत्तरम्मन धम्म)

= संवेदी चेतना 54, अलौकिक शक्तियां 2,

चेतना की अनंतता 3, न तो बोध और न ही अबोध

चेतना 3, मानसिक कारक 52 को छोड़कर

ईर्ष्या और असीमित 2 (अर्थात 52 - 3 = 49) (A4 B2 E8)

(ii) बाह्य वस्तु से युक्त अवस्थाएँ (बहिद्धरम्मन धम्म)

= संवेदी चेतना 54, अलौकिक शक्तियां 2,

सूक्ष्म-भौतिक चेतना 15, 2 को छोड़कर, अलौकिक

शक्तियां, अंतरिक्ष की अनंतता 3, अलौकिक चेतना 8,

मानसिक कारक 52 कंजूसी को छोड़कर (अर्थात 52 - 1 = 51) (A4 B2 E8)

(iii) आंतरिक और बाह्य उद्देश्य वाले राज्य (अज्जत्ता बहिद्धरम्मन)

धम्म) = संवेदी चेतना 54,

अलौकिक शक्तियां 2, मानसिक कारक 52 को छोड़कर

कंजूसी, ईर्ष्या और असीमित 2 (अर्थात 52 - 4 = 48) (A4 B2 E8)

22. (i) दृश्य और प्रभाव डालने वाली दोनों अवस्थाएँ (सनिदसना सप्पतिघा)

धम्म) = दृश्य वस्तु (A1 B1 E1)

(ii) अदृश्य लेकिन प्रभाव डालने वाली अवस्थाएँ (अनिदस्सनप्पतिघा)

धम्म) = स्थूल पदार्थ 12 दृश्य वस्तुओं को छोड़कर

(अर्थात 12 - 1 = 11) (A1 B9 E9)

(iii) ऐसी स्थितियाँ जो दिखाई नहीं देतीं और प्रभावित नहीं करतीं (अनिदासन-अप्पतिघा)।

धम्म) = चेतना 89, मानसिक कारक 52,

सूक्ष्म पदार्थ 16 और निर्वाण (A*5 B2 E8)

II. दोहे 100 (दुका 100)

I. रूट क्लस्टर 6 (हेतु गोचक्कम 6)

1. (i) मूल अवस्थाएँ (हेतु धम्म) = मूल की 6 अवस्थाएँ

अर्थात्: लोभ, घृणा, भ्रम, लोभहीनता, घृणाहीनता

भ्रम रहित (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो मूल नहीं हैं (नहेतु धम्म) = चेतना

89, मानसिक कारक 52 (6 मूलों को छोड़कर), पदार्थ 28,

निब्बाना (A*5 B12 E18)

2. (i) वे राज्य जिनमें सहबद्ध मूल (सहेतुका धम्म) होते हैं

= चेतना जिसमें संबद्ध मूल 71, मानसिक

दो भ्रम-आधारित कारकों में से भ्रम को छोड़कर 52 कारक

चेतना (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जिनका कोई मूल नहीं है (अहेतुक धम्म) = चेतना

बिना जड़ों के 18, मानसिक कारक 13 को छोड़कर

इरादा, भ्रम, भ्रम-आधारित चेतना में मौजूद 2

मामला 28, निर्वाण (A*5 B12 E18)

3. (i) वे अवस्थाएँ जो मूलों से संबंधित हैं (हेतु सम्पायुत्त)

धम्म) = उपरोक्त 2 (i) के समान (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो मूलों से विरक्त हैं (हेतु विप्पयुत्त)

धम्म) = उपरोक्त 2 (ii) के समान (A*5 B12 E18)

4. (i) वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और जिनके साथ संबद्ध मूल भी हैं

(हेतु सेवा स-हेतुका च धम्म) = 6 जड़ों को छोड़कर

दो भ्रामक चेतनाओं (A1 B1 E1) में भ्रम मौजूद है

(ii) वे अवस्थाएँ जिनके संबद्ध मूल हैं लेकिन वे स्वयं मूल नहीं हैं (साहेतुका)

सेवा न च हेतु धम्म) = चेतना जो

संबंधित मूल 71, मानसिक कारक 52 को छोड़कर

6 मूल (A4 B2 E2)

5. (i) वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और मूलों से संबद्ध भी हैं (हेतु)

सेवा हेतु संपायुत्त धम्म) = उपरोक्त 4 (i) के समान (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो मूलों से संबंधित हैं लेकिन स्वयं मूल नहीं हैं

(हेतु संपायुत्त सेवा न च हेतु धम्म) ;= समान

4 (ii) उपरोक्त (A4 B2 E2)

6. (i) वे अवस्थाएँ जो मूल नहीं हैं, परन्तु उनसे संबंधित मूल हैं (नाहेतु)

सहेतुका धम्म) = उपरोक्त 4 (ii) के समान (ए4 बी2 ई2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो न तो मूल हैं और न ही उनसे संबंधित मूल हैं

(Nahetu ahetuka dhamma) = उपरोक्त 2 (ii) के समान (A*5 B12 E18)

द्वितीय. लघु मध्यवर्ती दोहे 7 (कुलनतारा डुकम 7)

1. (i) चार कारणों से उत्पन्न अवस्थाएँ (सप्पच्चया धम्म) = चेतना

89, मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो 4 कारणों से उत्पन्न नहीं होतीं (अप्पच्चया धम्म)

= निब्बाना (ए_ बी1 ई1)

2. (i) चार कारणों से बद्ध अवस्थाएँ (संखत धम्म) = समान

जैसा कि 1 (i) ऊपर (A5 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो 4 कारणों से बाध्य नहीं हैं (असंखत धम्म)

= उपरोक्त 1 (ii) के समान (A_ B1 E1)

3. (i) दृश्यता वाली अवस्थाएँ (सा-निदासन धम्म) = दृश्य

वस्तु (A1 B1 E1)

(ii) दृश्यताहीन अवस्थाएँ (अ-निदासन धम्म) = चेतना

89, मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 को छोड़कर

दृश्य वस्तु (अर्थात 28 - 1 = 27), और निर्वाण (A*5 B11 E17)

4. (i) प्रभाव डालने वाले (सप्पतिघा धम्म) राज्य = स्थूल

मामला 12 (A1 B10 E10)

(ii) बिना किसी बाधा के अवस्थाएँ; (अप्पतिघा धम्म) = चेतना

89, मानसिक कारक 52, सूक्ष्म पदार्थ 16 और

निब्बाना (ए*5 बी2 ई8)

5. (i) वे अवस्थाएँ जिनमें भौतिक परिवर्तन होता है (रूपिनो धम्म)

= विषय 28 (A1 B11 E11)

(ii) वे अवस्थाएँ जिनमें कोई भौतिक परिवर्तन नहीं होता (अरुपिनो धम्म)

= चेतना 89, मानसिक कारक 52 और निर्वाण (A*4 B2 E8)

6. (i) सांसारिक अवस्थाएँ (लोकीय धम्म) = सांसारिक

चेतना 81, मानसिक कारक 52 और पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो सुपरमुंडेन (लोकुत्तरा धम्म) हैं

= अलौकिक चेतना 8, मानसिक कारक 36 और

निब्बाना (ए* 4 बी2 ई2)

7. (i) वे अवस्थाएँ जो किसी एक नेत्र-चेतना आदि द्वारा ज्ञात की जा सकती हैं।

(केनासिविन्नेय्या धम्म) = चेतना 89, मानसिक

कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो किसी भी प्रत्यक्ष चेतना द्वारा ज्ञात न हों,

आदि (केनासि न विन्नेया धम्म) = चेतना 89,

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

तृतीय. नासूर समूह 6 (असवा गोचक्कम 6)

1. (i) वे अवस्थाएँ जो दोष हैं (आसव धम्म) = लोभ,

गलत धारणा और भ्रम (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो दोष नहीं हैं। (कोई आसव धम्म नहीं) = चेतना

89, मानसिक कारक 52, 3 अवस्थाओं को छोड़कर

कैंकर (अर्थात 52 - 3 = 49), पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

2. (i) वे राज्य जो विकारों (ससव धम्म) के शिकार हैं

= सांसारिक चेतना 81, मानसिक कारक 52 और

मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) ऐसे राज्य जो नासूर नहीं हैं (ए-नासाव धम्म)

= अलौकिक चेतना 8, मानसिक कारक 36 और

निब्बाना (ए*4 बी2 ई2)

3. (i) वे अवस्थाएँ जो कैंकर (आसवासम्पायुत्त) से संबंधित हैं

धम्म) = अस्वस्थ चेतना 12, मानसिक

कारक 27, मतिभ्रम को छोड़कर, 2 घृणा-आधारित

चेतना और 2 भ्रम-आधारित चेतना (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो रोगों से मुक्त हैं (आसव विपयुत्त)

धम्म) = संपूर्ण चेतना 21, परिणामी 36,

निष्क्रिय 20, मानसिक कारक 38, भ्रम मौजूद 2

घृणा से उपजी चेतना और भ्रम से उपजी चेतना,

मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

4. (i) वे राज्य जो दोष उत्पन्न करने वाले और दोष उत्पन्न करने वाले दोनों हैं

(असव सेवा ससाव च धम्म) = नासूर की 3 अवस्थाएँ

अर्थात्: लोभ, गलत धारणा और भ्रम (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो दोष के शिकार हैं लेकिन दोष नहीं हैं (ससावा)

सेवा नो च आसव धम्म) = सांसारिक चेतना 81,

मानसिक कारक 52, कैंकर की 3 अवस्थाओं को छोड़कर (अर्थात

52 - 3 = 49) और पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

5. (i) ऐसी अवस्थाएँ जो रोगग्रस्त हों और रोगग्रस्त अवस्थाओं से संबंधित हों

(आसव सेवा असव संपयुत्त च धम्म) = 3 नासूर

अर्थात्: लोभ, गलत धारणा और भ्रम जो मौजूद हैं

8 लालच से उपजी चेतना (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो कैंकर से संबंधित हैं लेकिन स्वयं कैंकर नहीं हैं

(असव संपयुत्त सेवा नो च आसव धम्म) = अहितकर

चेतना 12, मानसिक कारक 27 को छोड़कर

3 कैंकर (अर्थात 27 - 3 = 24) (A4 B2 E2)

6. (i) वे अवस्थाएँ जो दोषों से विरक्त हैं, परन्तु जिनके विषय हैं

नासूर (असव विप्पयुत्त ससाव धम्म) = सांसारिक

स्वस्थ चेतना 17, सांसारिक परिणाम 32,

निष्क्रिय 20, मानसिक कारक 38, भ्रम मौजूद 2

घृणा से उपजी और भ्रम से उपजी चेतना और

मामला 28 (A6 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो दोषों से विरक्त हैं और वस्तुएँ नहीं हैं

नासूरों का (असव विप्पयुत्त अनासव धम्म) = सुप्रामुंडेन

चेतना 8, मानसिक कारक 36 और निर्वाण (A*4 B2 E2)

IV. बंधन समूह 6 (संयोजन गोच्छकम 6)

1. (i) वे अवस्थाएँ जो बंधन हैं (संयोजन धम्म) = 8 अवस्थाएँ

उन बंधनों के बारे में जो इस प्रकार हैं: लोभ, घृणा, अहंकार, गलत दृष्टिकोण।

संदेह, ईर्ष्या, कंजूसी और भ्रम (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो बंधन नहीं हैं (कोई संयोजन धम्म नहीं)

= चेतना 89, मानसिक कारक 52, 8 बंधनों को छोड़कर

(अर्थात 52 - 8 = 44), विषय 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

2. (i) वे राज्य जो बंधनों के अधीन हैं (संयोजनीय धम्म)

= सांसारिक चेतना 81, मानसिक कारक 52 और

मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो बंधनों के अधीन नहीं हैं (अ-समयोजनीय)

धम्म) = अलौकिक चेतना 8, मानसिक

कारक 36 और निब्बाना (A*4 B2 E2)

3. (i) वे अवस्थाएँ जो बंधनों से जुड़ी हैं (संयोजन सम्पायुत्त)

धम्म) = अस्वस्थ चेतना 12,

मानसिक कारक 27, बेचैनी में मौजूद भ्रम को छोड़कर-

साथ-साथ चेतना (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो बंधनों से मुक्त हैं (संयोजन)

विपयुत्त धम्म) = संपूर्ण चेतना 21,

परिणामी 36, निष्क्रिय 20, मानसिक कारक 38, भ्रम

बेचैनी से ग्रस्त चेतना में उपस्थित, पदार्थ

28 और निब्बाना (A*5 B12 E18)

4. (i) वे अवस्थाएँ जो बंधन भी हैं और बंधनों की वस्तुएँ भी (संयोजन)

सेवा समन्वय च धम्म) = बंधनों की 8 अवस्थाएँ (ए1 बी1 ई1)

(ii) वे राज्य जो बंधनों के अधीन हैं, परन्तु स्वयं बंधन नहीं हैं

(संयोजनीय सेवा नो च समन्वय धम्म) = सांसारिक

चेतना 81, मानसिक कारक 52, 8 अवस्थाओं को छोड़कर

बेड़ियाँ (अर्थात 52 - 8 = 44) और पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

5. (i) वे अवस्थाएँ जो बंधन भी हैं और बंधनों से संबद्ध भी हैं

(संयोजन सेवा समन्वय संपायुत्त च धम्म)

= बेचैनी की अवस्था में मौजूद भ्रम को छोड़कर बंधनों की 8 अवस्थाएँ-

साथ-साथ चेतना (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो बंधनों से जुड़े हैं लेकिन स्वयं बंधन नहीं हैं

(संयोजन संपायुत्त सेवा नो च समन्वय धम्म)

- अस्वस्थ चेतना 12, मानसिक कारक 27

बंधनों की 8 अवस्थाओं को छोड़कर (अर्थात 27 - 8 = 19) (A4 B2 E2)

6. (i) वे राज्य जो बंधनों से मुक्त हैं, परन्तु जिनके वे विषय हैं

बेड़ियाँ (संयोजना विप्पयुत्त समयोजनीय धम्म)

= सांसारिक स्वस्थ चेतना 17, सांसारिक

परिणामी 32, निष्क्रिय 20, मानसिक कारक 38, भ्रम

बेचैनी से ग्रस्त चेतना में उपस्थित और

मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो बंधनों से मुक्त हैं और वस्तुएँ नहीं हैं

बंधनों का (Samyojana vippayutta a-samyojaniya dhamma)

— अलौकिक चेतना 8, मानसिक कारक 36 और

निब्बाना (ए*4 बी2 ई2)

वी. टाई क्लस्टर्स 6 (गंथा गोचक्कम 6)

1. (i) वे अवस्थाएँ जो बंधन (गांठ एवं धम्म) हैं = बंधन की 3 अवस्थाएँ

अर्थात्: लोभ, घृणा और गलत दृष्टिकोण (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो बंधन नहीं हैं (कोई गंथा धम्म नहीं) — चेतना

89, मानसिक कारक 52, संबंधों की 3 अवस्थाओं को छोड़कर (अर्थात

52 — 3 = 49), मैटर 28 और निब्बाना (A*5 B12 E18)

2. (i) वे राज्य जो बंधों (गंथनीय धम्म) के विषय हैं

= सांसारिक चेतना 81, मानसिक कारक 52 और

मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो संबंधों की वस्तु नहीं हैं (ए-गंथानिया धम्म)

= अलौकिक चेतना 8, मानसिक कारक 36

और निर्वाण *4 2 2

3. (i) वे राज्य जो संबंधों से जुड़े हैं (गंथा सम्पायुत्ता)

धम्म) = लोभ से उपजी चेतना 8, घृणा से उपजी

चेतना 2, मानसिक कारक 27, लालच को छोड़कर मौजूद

चेतना 4 वर्ष की आयु में गलत दृष्टिकोण और घृणा से अलग हो जाती है।

घृणा से उपजी चेतना और संदेह (अर्थात) पर उपस्थित

27 - 2 = 25) (A4 B2 E2)

(ii) वे राज्य जो बंधनों से विरक्त हैं (गंथ विपयुत्त)

धम्म) = भ्रम पर आधारित चेतना 2, स्वस्थ

चेतना 21, परिणामी 36, निष्क्रिय 20, मानसिक

कारक 52, लालच, गलत धारणा, अहंकार, घृणा को छोड़कर,

ईर्ष्या, कंजूसी, चिंता, आलस्य, सुस्ती (अर्थात 52 - 9 = 43)

चौथी चेतना में मौजूद लालच गलत दृष्टिकोण से अलग हो जाता है।

घृणा, घृणा से उपजी चेतना और पदार्थ में मौजूद है।

28 और निब्बाना (A*5 B12 E18)

4. (i) वे राज्य जो संबंध और संबंधों के विषय दोनों हैं (गंथा सेवा)

गंथनिया च धम्म) = संबंधों की 3 अवस्थाएँ (ए1 बी1 ई1)

(ii) वे राज्य जो संबंधों के विषय तो हैं, लेकिन स्वयं संबंध नहीं हैं (गंथनिया)

सेवा नो च गंथा धम्म) = सांसारिक चेतना 81,

मानसिक कारक 52, टाई की 3 स्थितियों को छोड़कर (अर्थात 52 - 3)

= 49) और मामला 28 (A5 B12 E18)

5. (i) वे राज्य जो संबंधों से जुड़े हुए हैं और उनसे संबद्ध भी हैं (गांथा

सेवा गंथा संपयुत्त च धम्म) - संबंधों की 2 अवस्थाएँ

अर्थात्: 4 चेतना में मौजूद लालच और गलत दृष्टिकोण

गलत दृष्टिकोण से संबंधित (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो संबंधों से जुड़े हैं लेकिन स्वयं संबंध नहीं हैं

(गंथा संपयुत्त सेवा नो च गंथा धम्म) = लालच से युक्त

चेतना 8, घृणा से उपजी चेतना 2,

मानसिक कारक 27, संबंधों और संदेह की 3 अवस्थाओं को छोड़कर

(अर्थात 27 - 4 = 23) (A4 B2 E2)

6. (i) वे राज्य जो संबंधों से विरक्त हैं, परन्तु संबंधों के विषय हैं

(गंथा विप्पयुत्त गंथानिया धम्म) = भ्रम-जड़ित

चेतना 2, सांसारिक स्वस्थ चेतना

17, सांसारिक परिणाम 32, निष्क्रिय 20, मानसिक

कारक 52, लालच, गलत धारणा, अहंकार, घृणा को छोड़कर,

ईर्ष्या, कंजूसी, चिंता, आलस्य और सुस्ती (अर्थात 52 - 9 = 43)

चौथी चेतना में मौजूद लालच गलत दृष्टिकोण से अलग हो जाता है।

घृणा 2 घृणा-आधारित चेतना में मौजूद है और

मामला 28 (A6 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो संबंधों से विरक्त हैं और जिनके विषय नहीं हैं

संबंध (गंथा विप्पयुत्त ए-गंथानिया धम्म) = सुप्रमुंडेन

चेतना 8, मानसिक कारक 36 और निर्वाण (A*4 B2 E2)

VI. बाढ़ समूह 6 (ओघा गोचक्कम 6)

(कैंकर क्लस्टर के समान)

वी II.* बंध समूह 6 (योग गोच्छकम 6)

(कैंकर क्लस्टर के समान)

वी II . हिंड्रेंस क्लस्टर 6 (निवारण गोचक्कम 6)

1. (i) वे अवस्थाएँ जो बाधक हैं (निवारण धम्म) = 8 अवस्थाएँ

बाधाओं में शामिल हैं: लोभ, घृणा, आलस्य, सुस्ती, बेचैनी।

चिंता, संदेह और भ्रम (A1 B1 E1)

(ii) राज्य जो बाधा नहीं हैं (कोई निवारण धम्म नहीं)

चेतना 89, मानसिक कारक 52 (8 अवस्थाओं को छोड़कर)

बाधाओं (अर्थात 52 - 8 = 44), पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

2. (i) वे अवस्थाएँ जो अवरोध उत्पन्न करती हैं (निवारणीय धम्म)

= सांसारिक चेतना 81, मानसिक कारक 52 और

मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो बाधाओं के विषय नहीं हैं (अ-निवरनिया)

धम्म) = अलौकिक चेतना 8, मानसिक

कारक 36 और निब्बाना (A*4 B2 E2)

3. (i) वे अवस्थाएँ जो अवरोधों (निवारण) से जुड़ी हैं

संपयुत्त धम्म) — अस्वस्थ चेतना 12,

मानसिक कारक 27 (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो बाधाओं से मुक्त हैं (निवारण)

विपयुत्त धम्म) = संपूर्ण चेतना 21,

परिणामी 36, निष्क्रिय 20, मानसिक कारक 38, पदार्थ 28,

निब्बाना (A*5 B12 E18)

4. (i) वे राज्य जो बाधाएँ भी हैं और बाधाओं के विषय भी हैं

(निवारण सेवा निवारनीय च धम्म) = 8 अवस्थाएँ

बाधाएँ (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो बाधाओं के विषय हैं लेकिन स्वयं बाधा नहीं हैं

(निवारणीय सेवा नो च निवारण धम्म) = सांसारिक

चेतना 81, मानसिक कारक 52, 8 अवस्थाओं को छोड़कर

बाधाएँ (अर्थात 52 - 8 = 44) और पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

5. (i) वे राज्य जो बाधक भी हैं और उनसे जुड़े भी हैं

बाधाएँ (निवारण सेवा निवारण संपायुत्त च।)

धम्म) = अवरोधों की 8 अवस्थाएँ (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो बाधाओं से जुड़े हैं लेकिन नहीं हैं

बाधाएँ (निवारण संपयुत्त सेवा नो च निवारण

धम्म) = अस्वस्थ चेतना 12, मानसिक

बाधाओं की 8 अवस्थाओं को छोड़कर कारक 27 (अर्थात 27 - 8)

= 19) (A4 B2 E2)

6. (i) वे अवस्थाएँ जो बाधाओं से विरक्त हैं परन्तु वस्तुएँ हैं

बाधाओं का निवारण (निवारण विप्पयुत्त निवारनीय धम्म)

= सांसारिक स्वस्थ चेतना 17, सांसारिक

परिणामी 32, निष्क्रिय 20, मानसिक कारक 38 और

मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो बाधाओं से मुक्त हैं और नहीं हैं

बाधाओं की वस्तुएँ (निवारण विप्पयुत्त नो निवारनिया)।

धम्म) = अलौकिक चेतना 8, मानसिक

कारक 36 और निब्बाना (A*4 B2 E2)

IX. गलतफहमियों के समूह 5 (परमसा गोच्छकम 5)

1. (i) वे अवस्थाएँ जो भ्रम (परमसा धम्म) हैं

= गलत धारणा की स्थिति जो गलत दृष्टिकोण है (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ नहीं हैं (कोई परमासा नहीं)

धम्म) = चेतना 89, मानसिक कारक 52 को छोड़कर

गलत दृष्टिकोण (अर्थात 52 - 1 = 51), मामला 28 और

निर्वाण *5 12 18

2. (i) वे राज्य जो गलतफहमियों के विषय हैं (परमत्थ)

धम्म) = सांसारिक चेतना 81, मानसिक कारक 52

और मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो गलतफहमियों के विषय नहीं हैं (अ-परमत्था)

धम्म) = अलौकिक चेतना 8, मानसिक

कारक 36 और निब्बाना (A*4 B2 E2)

3. (i) वे अवस्थाएँ जो गलतफहमियों से जुड़ी हैं (परमसा)

संपयुत्त धम्म) = चेतना 4 साथ

गलत दृष्टिकोण के साथ, मानसिक कारक 27 को छोड़कर

गलत धारणा, अहंकार, घृणा, ईर्ष्या, कंजूसी, चिंता और

संदेह (अर्थात् 2 7 - 7 = 20) (ए4 बी2 ई2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो गलतफहमियों से मुक्त हैं (परमसा)

विपयुत्त धम्म) = चेतना 4 विच्छेदित

गलत दृष्टिकोण, घृणा से उपजी चेतना 2, भ्रम से उपजी

चेतना 2, स्वस्थ चेतना 21,

परिणामी चेतना 36, निष्क्रिय चेतना 20,

गलत दृष्टिकोण को छोड़कर मानसिक कारक 52 (अर्थात 52 - 1 = 51),

मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

4. (i) वे राज्य जो गलतफहमियों के भी स्रोत हैं और गलतफहमियों का शिकार भी हैं

(परमसा सेवा परमथ च धम्म)

= गलत धारणा की स्थिति जो गलत दृष्टिकोण है 1 1 1

(ii) वे राज्य जो गलतफहमियों के शिकार हैं लेकिन वास्तव में नहीं हैं

गलतफहमियां (परमत्था सेवा नो सीए परमासा

धम्म) = सांसारिक चेतना 81, मानसिक कारक 52

गलत दृष्टिकोण (अर्थात 52 - 1 = 51) और विषय 28 (A5 B12 E18) को छोड़कर

5. (i) वे राज्य जो गलतफहमियों से अलग हो चुके हैं, लेकिन

गलतफहमी की वस्तुएँ (परमसा विप्पयुत्त परमत्था)।

धम्म) = चेतना 4 से अलग

गलत दृष्टिकोण, घृणा से उपजी चेतना 2, भ्रम से उपजी

चेतना 2, सांसारिक स्वस्थ चेतना 17,

सांसारिक परिणामी चेतना 32, निष्क्रिय चेतना

20, मानसिक कारक 52 गलत दृष्टिकोण को छोड़कर

(अर्थात 52 —1 = 51) और मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो गलतफहमियों से मुक्त हैं और

गलतफहमियों के विषय नहीं (परमसा विपयुत्त)

(परमत्थ धम्म) = अलौकिक चेतना

8, मानसिक कारक 36 और निर्वाण (A*4 B2 E2)

X. महामध्यवर्ती दोहे 14 (महंतरा दुकम 14)

1. (i) वे अवस्थाएँ जिनमें वस्तुएँ होती हैं (सारम्मन धम्म) = चेतना

89 और मानसिक कारक 52 (A4 B2 E8)

(ii) ऐसे राज्य जिनके पास कोई वस्तु नहीं है (अनारम्मन धम्म)

= मैटर 28 और निर्वाण (A*1 B11 E11)

2. (i) चेतना की अवस्थाएँ (चित्त धम्म) = चेतना

89 (A1 B1 E7)

(ii) वे अवस्थाएँ जो चेतना नहीं हैं (चित्त धम्म नहीं)

= मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*4 B11 E11)

3. (i) वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं (चेतसिका धम्म)

= मानसिक कारक 52 (A3 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक नहीं हैं (अ-चेतसिका धम्म)

= चेतना 89, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*2 B12 E18)

4. (i) चेतना से संबंधित अवस्थाएँ (चित्त-संपयुत्त)

धम्म) = मानसिक कारक 52 (A3 B1 E1)

(ii) चेतना से विरक्त अवस्थाएँ (चित्त-विप्पयुत्त)

धम्म) = पदार्थ 28 और निब्बान (ए*1 बी11 ई11)

5. (i) चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ (चित्त-संस्था)

धम्म) = उपरोक्त 4 (i) के समान (A3 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो चेतना से जुड़ी नहीं हैं

(चित्तविसंसत्थ धम्म) = उपरोक्त 4 (ii) के समान (A*1 B11 E11)

6. (i) चेतना द्वारा उत्पन्न अवस्थाएँ (चित्त-समुत्थाना)

धम्म) = मानसिक कारक 52 और मन द्वारा निर्मित

मामला 17 (A4 B6 E6)

(ii) वे अवस्थाएँ जो चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होतीं (नो-चित्त-समुत्थाना)

धम्म) = चेतना 89, कर्म उत्पन्न

पदार्थ 20, तापमान से उत्पन्न पदार्थ 15,

पोषक तत्व-उत्पादित पदार्थ 14 और निर्वाण (A*2 B12 E18)

7. (i) चेतना के साथ उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ (चित्त-सहभुनो)

धम्म) = मानसिक कारक 52, और संकेत 2 (A4 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो चेतना के साथ उत्पन्न नहीं होतीं (नो-चित्त-

सहभुनो धम्म) = चेतना 89, पदार्थ 28

2 संकेतों (अर्थात 28 - 2 = 26) और निर्वाण (A*2 B12 E18) को छोड़कर

8. (i) चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ (चित्तनुपरिवत्तिनो)

धम्म) = उपरोक्त 7 (i) के समान (A4 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न नहीं होतीं

(No-citta-nuparivattino dhamma) = उपरोक्त 7 (ii) के समान। (A*2 B12 E18)

9. (i) वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं और इससे उत्पन्न भी होती हैं

चेतना (चित्त-संसत्था-समुत्थाना धम्म)

= उपरोक्त 3 (i) के समान (A3 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो इससे जुड़े हुए नहीं हैं और इससे उत्पन्न नहीं हुए हैं

चेतना (No-citta-samsattba samutthana dhamma)

- उपरोक्त 3 (ii) के समान (A*2 B12 E18)

10. (i) वे राज्य जो किसी अन्य राज्य से जुड़े हुए हैं, उससे उत्पन्न होते हैं और उससे उत्पन्न होते हैं

चेतना के साथ (चित्त-संसत्था समुत्थाना)

सहभुनो धम्म) = ऊपर 9 (i) के समान (A3 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो संयुक्त नहीं हैं, वे उत्पन्न नहीं होते हैं

और चेतना के साथ उत्पन्न नहीं होते (नो-चित्त-संसत्था-

समुत्थान-सहभूनो धम्म) - ऊपर 9 (ii) के समान (ए*2 बी12 18)

11. (i) वे राज्य जो जुड़े हुए हैं, जिनसे उत्पन्न होते हैं और जिनसे उत्पन्न होते हैं

चेतना के साथ क्रमिक रूप से (चित्त-संसत्था-समुत्थाना-)

नुपरिवत्तिनो धम्म) = ऊपर 9 (i) के समान (ए3 बी1 ई1)

(ii) वे राज्य जो संयुक्त नहीं हैं, वे उत्पन्न नहीं होते हैं

और चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न नहीं होते (नो-चित्तसमसत्था-

samutthana-nuparivattino dhamma) = उपरोक्त 9 (ii) के समान (A*2 B12 C18)

12. (i) आंतरिक अवस्थाएँ (अज्जत्तिक धम्म) = चेतना

89, संवेदनशील मामला 5 (A2 B6 E12)

(ii) बाह्य अवस्थाएँ (बहिर धम्म) = मानसिक

कारक 52, पदार्थ 28, 5 संवेदनशील पदार्थ को छोड़कर (अर्थात

28 - 5 = 23) और निब्बान (ए*4 बी6 ई 6)

13. (i) व्युत्पन्न अवस्थाएँ (उपद धम्म) = व्युत्पन्न

मामला 24 (A1 B10 E10)

(ii) वे अवस्थाएँ जो व्युत्पन्न नहीं हैं (नो-उपद धम्म) = चेतना

89, मानसिक कारक 52, महान प्राथमिक पदार्थ 4 और निर्वाण (A*5 B3 E9)

14. (i) आसक्ति से प्राप्त होने वाली अवस्थाएँ (उपादिन्न धम्म)

= सांसारिक परिणामी चेतना 32, मानसिक कारक 35

और कर्म-उत्पादित पदार्थ 20 (A5 B11 E17)

(ii) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं (अनुपदिन्ना)

धम्म) = अस्वस्थ चेतना 12, स्वस्थ

चेतना 21, निष्क्रिय चेतना 20, फल प्राप्ति

चेतना 4, मानसिक कारक 52, मन द्वारा निर्मित पदार्थ

17, तापमान से उत्पन्न पदार्थ 15, पोषक तत्व से उत्पन्न

मामला 14 और निर्वाण (A*5 B7 E8)

XI. चिपकने वाले समूह 6 (उपादान गोचक्कम 6)

1. (i) आसक्ति की अवस्थाएँ (उपदान धम्म) = आसक्ति

राज्यों का नाम इस प्रकार है: लालच और गलत दृष्टिकोण (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से रहित हैं (नो-उपदान धम्म)

= चेतना 89, मानसिक कारक 52 (2 को छोड़कर)

आसक्ति अवस्थाएँ (अर्थात 52 - 2 = 50), पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

2. (i) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति का विषय हैं (उपदानीय धम्म)

- सांसारिक चेतना 81, मानसिक कारक 52 और

मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति का विषय नहीं हैं (अनुपदानिया)

धम्म) = अलौकिक चेतना 8, मानसिक

कारक 36 और निब्बाना (A*4 B2 E2)

3. (i) आसक्ति से संबंधित अवस्थाएँ (उपदान-संपयुत्त)

धम्म) = लोभ से उपजी चेतना 8, मानसिक

4 चेतना स्तर पर मौजूद लालच को छोड़कर कारक 27।

गलत दृष्टिकोण, घृणा, ईर्ष्या, कंजूसी से विरक्त।

चिंता और संदेह (अर्थात 27 - 5 = 22) (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से मुक्त हैं (उपदान-विप्पयुत्त)

धम्म) = घृणा से उपजी चेतना 2, भ्रम से उपजी

चेतना 2, स्वस्थ चेतना 21,

परिणामी चेतना 36, निष्क्रिय चेतना 20,

मानसिक कारक 52, लालच, गलत धारणा और अहंकार को छोड़कर

(अर्थात 52 - 3 = 49), 4 चेतना पर मौजूद लालच अलग हो गया

गलत दृष्टिकोण से, मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

4. (i) वे अवस्थाएँ जो आसक्तिकारी भी हैं और आसक्ति की वस्तुएँ भी हैं

(उपादान सेवा उपदानिय च धम्म) = चिपकने वाली अवस्था

अर्थात्: लोभ और गलत दृष्टिकोण (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो आसक्ति के विषय हैं, परन्तु स्वयं आसक्ति नहीं हैं

(उपदानिय सेवा नो च उपादान धम्म) = सांसारिक

चेतना 81, मानसिक कारक 52, 2 अवस्थाओं को छोड़कर

आसक्ति (अर्थात 52 - 2 = 50) और पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

5. (i) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से ग्रस्त हैं और आसक्ति से संबद्ध हैं

(उपादान सेवा उपादान संपायुत्त च धम्म) = 2

4 चेतना स्तर पर मौजूद आसक्ति की अवस्थाएँ साथ-साथ चलती हैं

गलत दृष्टिकोण के साथ (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से संबंधित हैं, परन्तु स्वयं आसक्ति नहीं हैं

(उपादान संपायुत्त सेवा नो च उपादान धम्म)

= लोभ से उपजी चेतना 8, मानसिक कारक 22 को छोड़कर

आसक्ति की दो अवस्थाएँ (अर्थात 22 - 2 = 20) (A4 B2 E2)

6. (i) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से विरक्त हैं, परन्तु जिनके विषय हैं

चिपकना (उपादान-विप्पयुत्त उपदानिय धम्म)

= घृणा से उपजी चेतना 2, भ्रम से उपजी चेतना

2, सांसारिक स्वस्थ चेतना 17,

सांसारिक परिणामी चेतना 32, निष्क्रिय चेतना

20, मानसिक कारक 52 (लालच और गलत दृष्टिकोण को छोड़कर)

और अहंकार (अर्थात 52 - 3 = 49), लालच जो 4 पर मौजूद है

गलत दृष्टिकोण और पदार्थ से अलग हुई चेतना 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से मुक्त हैं और नहीं हैं

चिपकने वाली वस्तुएँ (उपादान-विप्पयुत्त अनुपदानिया)।

धम्म) = अलौकिक चेतना 8, मानसिक कारक

36 और निब्बाना (A*4 B2 E2)

XII. भ्रष्टाचार समूह 8 (किलेसा गोच्चकम 8)

1. (i) भ्रष्ट राज्य (किलेसा धम्म) = दस राज्य

भ्रष्टाचार के उदाहरण हैं: लोभ, घृणा, भ्रम, अहंकार।

गलत धारणा, संदेह, आलस्य, बेचैनी, निर्लज्जता और

निडरता (A1 B1 E1)

(ii) वे अवस्थाएँ जो भ्रष्टता नहीं हैं (नो-किलेसा धम्म)

= चेतना 89, मानसिक कारक 52 (10 को छोड़कर)

भ्रष्टाचार की अवस्थाएँ (अर्थात 52 - 10 = 42), पदार्थ 28 और

निब्बाना (A*5 B12 E18)

2. (i) वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार हैं (समकिलेसिका)

धम्म) = सांसारिक चेतना 81, मानसिक कारक 52

और मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं (अ-सैहकिलेसिका)

धम्म) = अलौकिक चेतना 8, मानसिक कारक

36 और निब्बाना (A*4 B2 E2)

3. (i) भ्रष्ट राज्य (समकिलित्थ धम्म) = अस्वास्थ्यकर

चेतना 12, मानसिक कारक 27 (A4 B2 E2)

(ii) वे राज्य जो भ्रष्ट नहीं हैं (अ-समकिलित्थ धम्म)

= संपूर्ण चेतना 21, परिणामी चेतना

36, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक कारक 38, पदार्थ

28 और निब्बाना (A*5 B12 E18)

4. (i) भ्रष्टाचार से जुड़े राज्य (किलेसा-संपयुत्ता)

धम्म) = उपरोक्त 3 (i) के समान (A4 B2 E2)

(ii) वे राज्य जो भ्रष्टाचार से मुक्त हैं (किलेसा-विप्पयुत्ता)

धम्म) = उपरोक्त 3 (ii) के समान (A*5 B12 E18)

5. (i) वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी हैं

(किलेसा सेवा समकिलेसिका च धम्म) = 10 अवस्थाएँ

भ्रष्टाचार (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार हैं लेकिन स्वयं भ्रष्ट नहीं हैं

(समकिलेसिका सेवा नो कै किलेसा धम्म) = सांसारिक

चेतना 81, मानसिक कारक 52, 10 को छोड़कर

भ्रष्टाचार की अवस्थाएँ (अर्थात 52 - 10 = 42), मामला 28 (A5 B12 E18)

6. (i) वे राज्य जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचारी दोनों हैं (Kilesa ceva)

samkilittha ca dhamma) = दस प्रकार के भ्रष्टाचार (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्टाचार नहीं हैं (समकिलित्था)

(ceva no ca kilesa dhamma) = अस्वस्थ चेतना

12, मानसिक कारक 27, 10 अवस्थाओं को छोड़कर

भ्रष्टाचार (अर्थात 27 - 10 = 17) (A4 B2 E2)

7. (i) वे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित हैं और इससे जुड़े हुए हैं

भ्रष्टाचार (किलेसा सेवा किलेसा-संपायुत्त च धम्म)

= उपरोक्त 6 (i) के समान (A1 B1 E1)

(ii) वे राज्य जो भ्रष्टाचार से जुड़े हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार से ग्रसित नहीं हैं

भ्रष्टाचार (किलेसा-सम्पायुत्त सेवा नो सीए किलेसा

धम्म) = उपरोक्त 6 (ii) के समान (A4 B2 E2)

8. (i) वे राज्य जो भ्रष्टाचार से मुक्त हैं, परन्तु उसके शिकार हैं

भ्रष्टाचारों का (Kilesa-vippayutta samkilesika dhamma)

= सांसारिक स्वस्थ चेतना 17, सांसारिक परिणामी

चेतना 32, निष्क्रिय चेतना 20,

मानसिक कारक 38 और पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो भ्रष्टाचार से मुक्त हैं और नहीं हैं

भ्रष्टाचार के विषय (Kilesa-vippayutta a-samkilesika)

धम्म) = अलौकिक चेतना 8, मानसिक

कारक 36 और निब्बाना (A*4 B2 E2)

XIII. अंतिम दोहे 18 (पिट्ठी दुकम 18)

1. (i) प्रथम पथ द्वारा नष्ट किए गए राज्य (दस्सानेना-पहताब्बा)

धम्म) = लोभ से उपजी चेतना 8, घृणा से उपजी

चेतना 2, संदेह चेतना 1 और मानसिक

कारक 27 (A4 B2 E2)

(ii) प्रथम पथ द्वारा उन राज्यों का उन्मूलन नहीं किया गया (ना-दस्सानेना-पहतब्बा)।

धम्म) = 4 चेतना जो गलत दृष्टिकोण से अलग हो गई है

और 2 घृणा से उपजी चेतना जो आगे नहीं ले जाती

निम्न तल, बेचैनी चेतना 1, स्वस्थ चेतना

21, परिणामी चेतना 36, निष्क्रिय

चेतना 20, मानसिक कारक 52 (गलत दृष्टिकोण को छोड़कर)

संदेह (अर्थात 52 - 2 = 50), मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

2. (i) तीन उच्चतर मार्गों द्वारा समाप्त की गई अवस्थाएँ (भवनय-पहतब्बा)

धम्म) = 4 चेतना जो इससे अलग है

गलत दृष्टिकोण, घृणा से उपजी चेतना 2, बेचैनी

चेतना 1, मानसिक कारक 27 गलत दृष्टिकोण को छोड़कर

और संदेह (अर्थात 27 - 2 = 25) (A4 B2 E2)

(ii) उच्चतर तीन मार्गों (ना-भवनय-) द्वारा समाप्त न होने वाली अवस्थाएँ

pahatabba dhamma) = 4 चेतना विच्छेदित

गलत दृष्टिकोण और घृणा से उपजी चेतना से जो

निम्न स्तरों की ओर ले जाता है, 4 चेतना के साथ

गलत दृष्टिकोण, संदेह चेतना 1, स्वस्थ चेतना

21, परिणामी चेतना 36, निष्क्रिय चेतना

20, मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

3. (i) प्रथम पथ (दस्सानेना-) द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्यों सहित

pahatabba hetuka dhamma) = लोभ से उपजी चेतना

8. घृणा से उपजी चेतना 2. संदेह की चेतना

1. मानसिक कारक 27, भ्रम को छोड़कर, मौजूद हैं

संदेह चेतना पर (A4 B2 E2)

(ii) प्रथम पथ द्वारा न मिटाए गए मूलों सहित राज्य (नदासनेना-

pahatabba hetuka dhamma) = 4 चेतना

गलत दृष्टिकोण और घृणा से उपजी चेतना से विरक्त

जो निम्न स्तरों की ओर नहीं ले जाते, बेचैनी

चेतना 1, संपूर्ण चेतना 21, परिणामी

चेतना 36, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक

गलत धारणा और संदेह को छोड़कर कारक 52 (अर्थात 52— 2 = 50),

संदेह चेतना, पदार्थ में मौजूद भ्रम

28 और निब्बाना (A*5 B12 E18)

4. (i) उच्चतर तीन मार्गों द्वारा जड़ सहित राज्य

(भवनया-पहतब्बा हेतुका धम्म) के समान

त्रिक 9 (ii) (A4 B2 E2)

(ii) उच्चतर तीन द्वारा समाप्त न की गई जड़ों सहित राज्य

पथ (ना-भावनया-पहतब्बा हेतुका धम्म) 4

चेतना गलत दृष्टिकोण और घृणा से अलग हो गई

चेतना जो निम्न स्तर की ओर नहीं ले जाती

विमान, 4 चेतना गलत दृष्टिकोण के साथ,

संदेह चेतना 1, स्वस्थ चेतना 21,

परिणामी चेतना 36, निष्क्रिय चेतना 20,

मानसिक कारक 52, बेचैनी चेतना में मौजूद भ्रम,

मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

5. (i) व्यावहारिक विचार वाली अवस्थाएँ (सविताक्क धम्म) = चेतना

व्यावहारिक विचार के साथ उपस्थित 55, मानसिक

अनुप्रयुक्त विचार को छोड़कर कारक 52 (अर्थात 52 - 1 = 51) (A4 B2 E3)

(ii) अनुप्रयुक्त विचार रहित अवस्थाएँ (अ-वितक्क धम्म) = चेतना

बिना व्यावहारिक विचार के 66, मानसिक कारक 38

व्यावहारिक विचार को छोड़कर (अर्थात 38 - 1 = 37), 55 व्यावहारिक विचार

अनुप्रयुक्त विचार चेतना में उपस्थित 55,

मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E17)

6. (i) निरंतर चिंतन की अवस्थाएँ (सा-विचार धम्म) = चेतना

निरंतर विचार के साथ उपस्थित 66, मानसिक

कारक 52 निरंतर विचार को छोड़कर (अर्थात 52-1 = 51) (A4 B2 E3)

(ii) निरंतर चिंतन के बिना अवस्थाएँ (अविचार धम्म)

= निरंतर विचार के बिना चेतना 55, मानसिक

कारक 38, व्यावहारिक विचार और निरंतर विचार को छोड़कर

(अर्थात 38 - 2 = 36), 66 निरंतर विचार उपस्थित हैं

निरंतर विचार चेतना 66, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E17) पर

7. (i) परमानंद की अवस्थाएँ (सप्पितिका धम्म) = चेतना

परमानंद 51 के साथ उपस्थित, मानसिक कारक 52 को छोड़कर

उत्साह, घृणा, ईर्ष्या, कंजूसी, चिंता और संदेह (अर्थात्

52 - 6 = 46) (A4 B2 E2)

(ii) आनंद रहित अवस्थाएँ (अप्तिका धम्म) = चेतना

परमानंद के बिना 70, मानसिक कारक 52 को छोड़कर

परमानंद, परमानंद में उपस्थित 51 परमानंद चेतना के साथ

51, मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

8. (i) वे अवस्थाएँ जो परमानंद (पिति-सहगत) से युक्त होती हैं

धम्म) = उपरोक्त 7 (i) के समान (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जिनमें परमानंद नहीं होता (ना-पिति-सहगत)

धम्म) = उपरोक्त 7 (ii) के समान (A*5 B12 E18)

9. (i) *सुख-सहगत वाली अवस्थाएँ

धम्म) = आनंद से युक्त चेतना 63,

मानसिक कारक 52, भावना, घृणा, ईर्ष्या, कंजूसी को छोड़कर,

चिंता और संदेह (अर्थात 52 - 6 = 46) (A3 B2 E3)

(ii) वे अवस्थाएँ जिनमें आनंद नहीं होता (नासुख सहगता)

धम्म) = चेतना जिसके साथ

दर्द 3, उदासीनता के साथ चेतना 55,

मानसिक कारक 52, परमानंद और सुखद अनुभूति को छोड़कर

आनंद के साथ उपस्थित चेतना 63, पदार्थ

28 और निब्बाना (A*5 B12 E18)

10. (i) उदासीनता से युक्त अवस्थाएँ (उपेक्खासहागता)

धम्म = उदासीनता से युक्त चेतना

55, मानसिक कारक 52 भावना, परमानंद को छोड़कर,

घृणा, ईर्ष्या, कंजूसी और चिंता (अर्थात 52 - 6 = 46) (A3 B2 E7)

(ii) वे अवस्थाएँ जो उदासीनता (ना-उपेक्खा-) से युक्त नहीं हैं

सहगत धम्म) = चेतना साथ में

आनंद द्वारा 63, चेतना दर्द के साथ

3. मानसिक कारक 52 संदेह को छोड़कर, 55 उदासीनता की भावना

55 वर्ष की आयु में चेतना के साथ उदासीनता भी मौजूद रहती है।

मामला 28 और निर्वाण (A*5 B12 E13)

11. (i) वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित हैं (कामवाचरा)

धम्म) = संवेदी चेतना 54, मानसिक कारक 52

और मामला 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित नहीं हैं (ना-कामवचरा)

धम्म) = उच्च चेतना 27, अलौकिक

चेतना 8, मानसिक कारक 38 और निर्वाण (A*4 B2 E2)

12. (i) वे अवस्थाएँ जो सूक्ष्म-पदार्थ तल (रूपवचारा) से संबंधित हैं

धम्म) = सूक्ष्म-भौतिक चेतना 15, मानसिक

कारक 35 (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो सूक्ष्म-पदार्थ तल (ना-रूपवचरा) से संबंधित नहीं हैं

धम्म) = संवेदी चेतना 54, अमूर्त

चेतना 12, अलौकिक चेतना 8,

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

13. (i) वे अवस्थाएँ जो अमूर्त तल (अरूपवचर) से संबंधित हैं

धम्म) = अमूर्त चेतना 12, मानसिक कारक 30 (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो अमूर्त तल से संबंधित नहीं हैं (ना-अरूपावचारा)

धम्म) = संवेदी चेतना 54, सूक्ष्म पदार्थ

चेतना 15, अलौकिक चेतना 8,

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

14. (i) वे अवस्थाएँ जो अस्तित्व के चक्र में शामिल हैं

(परियपन्ना धम्म) = सांसारिक चेतना 81, मानसिक

कारक 52 और पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे राज्य जो अस्तित्व के चक्र में शामिल नहीं हैं

(ए-परियपन्ना धम्म) = अतिमुंडन चेतना 8,

मानसिक कारक 36 और निर्वाण (A*4 B2 E2)

15. (i) वे अवस्थाएँ जो अस्तित्व के चक्र से निकलती हैं (निय्यानिका)

धम्म) = 4 पथ चेतना, मानसिक कारक 36 (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो अस्तित्व के चक्र से बाहर नहीं निकलतीं

(अ-नीयनिका धम्म) - सांसारिक चेतना 81,

फल प्राप्ति चेतना 4, मानसिक कारक 52, पदार्थ 28

और निर्वाण (A*5 B12 E18)

16. (i) वे राज्य जिनका भाग्य निश्चित है, मृत्यु के बाद या उसके बाद त्याग दिए गए

उनकी अपनी घटना (नियत धम्म) = 7वाँ आवेग

गलत दृष्टिकोण से जुड़ी चेतना का 4, 7वां आवेग

घृणा से उपजी चेतना 2, मानसिक कारक 27 को छोड़कर

अहंकार, संदेह (अर्थात 27 - 2 = 25), 4 पथ चेतना,

मानसिक कारक 36 (A4 B2 E2)

(ii) वे राज्य जिन्होंने उपरोक्त अनुसार नियति निर्धारित नहीं की है (अ-नियाता)

धम्म) = अस्वस्थ चेतना 12 को छोड़कर

गलत दृष्टिकोण से जुड़ी चेतना से उत्पन्न 7वीं प्रेरणा 4

और घृणा से उपजी चेतना 2, सांसारिक स्वस्थ 17,

परिणामी चेतना 36, निष्क्रिय चेतना 20,

मानसिक कारक 52, पदार्थ 28 और निर्वाण (A*5 B12 E18)

17. (i) वे अवस्थाएँ जो (सा-उत्तर धम्म) से परे हैं = सांसारिक

चेतना 81, मानसिक कारक 52 और पदार्थ 28 (A5 B12 E18)

(ii) वे अवस्थाएँ जो अनुत्तरा धम्म से परे नहीं हैं

= अलौकिक चेतना 8, मानसिक कारक 36 और

निब्बाना (ए*4 बी2 ई2)

18. (i) वे अवस्थाएँ जो शोक का कारण हैं (सा-रण धम्म)

= अस्वस्थ चेतना 12, मानसिक कारक 27 (A4 B2 E2)

(ii) वे अवस्थाएँ जो शोक का कारण नहीं हैं (अरण धम्म)

= संपूर्ण चेतना 21, परिणामी चेतना

36, निष्क्रिय चेतना 20, मानसिक कारक 38, पदार्थ

28 और निब्बाना (A*5 B12 E18)
तिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धातुकथा >> **अध्याय** 2
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
अनुवादित: यू नारद

अध्याय 2: वर्गीकृत और अवर्गीकृत

8 प्रश्न और उत्तर

171. नेत्र आधार को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है... मूर्त वस्तु

आधार को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है; नेत्र तत्व को इसके साथ वर्गीकृत किया गया है

इन अवस्थाओं... मूर्त वस्तु तत्व को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया जाता है।

समान समूह के अंतर्गत, लेकिन समान आधार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं।

और उसी तत्व के अंतर्गत। कितने समुच्चयों के अंतर्गत,

उन अवस्थाओं में कितने आधार और कितने तत्व शामिल हैं?

वर्गीकृत? इन्हें वर्गीकृत नहीं किया गया है, जिंदर 4 एग्रीगेट्स, अंडर 2 बेसेस

और 8 तत्वों के अंतर्गत (20).

172. नेत्र चेतना तत्व को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है;

कान चेतना तत्व; नाक चेतना तत्व; जीभ

चेतना तत्व; शरीर चेतना तत्व; मन तत्व;

मन की चेतना को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है।

समान समुच्चय और समान आधार के अंतर्गत, लेकिन वर्गीकृत नहीं

एक ही तत्व के अंतर्गत... उन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

11 आधारों के नीचे और 12 तत्वों के नीचे (7).

173. नेत्र संबंधी क्षमता को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है; कान संबंधी क्षमता;

नाक की क्रिया; जीभ की क्रिया; शरीर की क्रिया; स्त्री की क्रिया;

पुरुष शिक्षकों को इन्हीं राज्यों के साथ समान श्रेणी में रखा गया है।

लेकिन इन्हें एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

इन्हें 4 समुच्चयों के अंतर्गत नहीं, बल्कि 2 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

और 8 तत्वों के अंतर्गत (7).

174. अगोचर विकास को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है; एक

कुल योग को इन्हीं अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

कुल योग, झोपड़ी को एक ही आधार के अंतर्गत और उसके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

एक ही तत्व. . . . उन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है,

3 आधार और 9 से कम तत्व (2).

175. विलाप को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है; दोनों अवस्थाएँ

दृश्य और प्रभाव डालने वाली स्थितियों को इन्हीं राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

कुल योग, लेकिन एक ही आधार के अंतर्गत और उसके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं।

एक ही तत्व. . . . इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

2 आधारों के अंतर्गत और 8 तत्वों के अंतर्गत (2).

176. अदृश्य लेकिन प्रभाव डालने वाली अवस्थाओं को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है।

समान समूह के अंतर्गत, लेकिन समान आधार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं।

और उसी तत्व के अंतर्गत. . . . उन्हें वर्गीकृत नहीं किया गया है

4 समुच्चय, 10 आधारों से कम और 16 तत्वों से कम (1)।

177. दृश्यता वाले राज्यों को निम्नलिखित राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

समान कुल योग, लेकिन समान आधार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं।

एक ही तत्व के अंतर्गत... उन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

2 आधारों के अंतर्गत और 8 तत्वों के अंतर्गत (1).

178. सीमावर्ती राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत किया गया है; राज्य

जो व्युत्पन्न होते हैं, उन्हें इन्हीं राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

कुल योग, लेकिन एक ही आधार के अंतर्गत और उसके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं।

समान तत्व। कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत?

और वे राज्य कितने तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं?

इन्हें 4 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

तत्व (2).

स्मृति सहायक

दस आधार, सत्रह तत्व।

सात क्षमताएं, अगोचर विकास, एक-समग्र विकास।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार का विलाप

अदृश्य लेकिन प्रभाव डालने वाली, दृश्यता, प्रभाव डालने वाली, व्युत्पन्न अवस्थाओं के साथ।

अध्याय II की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: इस अध्याय में 42 राज्यों का विषयवस्तु शामिल है।

इनमें से 35, जिनमें से प्रत्येक पदार्थ समूह का केवल एक भाग है,

पदार्थ के अन्य भागों के साथ वर्गीकृत किया जाना (जिसे इस रूप में जाना जाता है)

पाठ में "ये अवस्थाएँ") एक ही समुच्चय (पदार्थ) के अंतर्गत

(कुल योग) लेकिन एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत नहीं।

शेष 7, जिनमें से प्रत्येक चेतना समूह का एक हिस्सा है,

इसे चेतना समूह के अन्य भागों के साथ वर्गीकृत किया जा सकता है

(पाठ में इन्हें "ये राज्य" के रूप में जाना जाता है) एक ही समूह के अंतर्गत

(चेतना का समूह) और एक ही आधार (मन का आधार) के अंतर्गत, लेकिन

एक ही तत्व के अंतर्गत नहीं। जांच की शेष सभी अवस्थाएँ

पाठ के कुछ अंशों को बाहर रखा गया है क्योंकि वे संपूर्ण भाग का निर्माण करते हैं।

भौतिकता और मानसिकता के आधार पर इन्हें वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

इस तरह। 42 राज्यों में से 37 आंतरिक और

5 बाह्य तालिकाओं के लिए जो जांच की सभी अवस्थाओं को दर्शाती हैं

मूलपाठ।

प्रश्न और उत्तर: 42 राज्यों को 8 सेटों में विभाजित करके समझाया गया है।

नीचे दिखाए गए अनुसार प्रश्न और उत्तर, राज्यों को समूहित किया गया है

जहां भी उत्तर समान हों, उन्हें एक ही सेट में एक साथ रखें।

समुच्चय, आधार और तत्वों की संख्याओं के लिए :-

1. 10 आधारों और 10 तत्वों का एक समूह, अर्थात् 12 स्थूल भौतिक पदार्थ

राज्य (171).

2. चेतना के 7 तत्वों का एक समूह (172)।

3. 7 संकायों का एक समूह (173)।

4. 2 बनने का एक समूह (174).

5. दो का एक समूह, अर्थात्: विलाप; दृश्य और दोनों अवस्थाएँ

प्रभाव डालना (175).

6. अदृश्य लेकिन प्रभाव डालने वाली अवस्थाएँ (176).

7. दृश्यता वाले राज्य (177).

8. राज्यों में प्रभाव और बाढ़ जो व्युत्पन्न हैं (178)।

"ये राज्य"; वे राज्य जिन्हें "ये राज्य" के रूप में दर्शाया गया है

पाठ में दी गई जानकारी चार्ट से प्राप्त की जा सकती है। निर्धारण के नियम

प्रश्न और उत्तर के प्रत्येक सेट के लिए "ये स्थितियाँ" दी गई हैं

नीचे :-

1. जब बारह स्थूल भौतिक अवस्थाओं में से कोई एक अवस्था जांच का विषय हो,

पदार्थ की शेष 27 भौतिक अवस्थाओं को सामूहिक रूप से लिया जाता है

“ये अवस्थाएँ” । उदाहरण के लिए, जब आँख के आधार की बात आती है,

शेष 27 भौतिक अवस्थाओं को “ये अवस्थाएँ” माना जाता है। केवल

तो क्या नेत्र आधार को शेष 27 शारीरिक अंगों के साथ वर्गीकृत किया जा सकता है?

इन सभी भौतिक अवस्थाओं के समान समूह के अंतर्गत आने वाली अवस्थाएँ

पदार्थ समूह के अंतर्गत। लेकिन उन्हें इसके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

आँख के आधार के समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत आता है।

आँख के आधार और आँख के नीचे के हिस्से जबकि शेष 27 शारीरिक

राज्य अन्य आधारों और अन्य तत्वों के अंतर्गत आते हैं।

मूर्त वस्तु आधार और मूर्त वस्तु तत्व के मामले, जिनमें से प्रत्येक

जिसमें तीन प्राथमिक भौतिक अवस्थाएँ शामिल हैं: पृथ्वी, ऊष्मा और वायु।

पदार्थ की शेष 25 भौतिक अवस्थाओं को सामूहिक रूप से लिया जाता है

“ये राज्य”।

2. जब चेतना के 7 तत्वों में से कोई एक, जैसे कि आँख,

चेतना तत्व, जांच की अवस्था है, शेष

चेतना के 6 तत्वों को "ये अवस्थाएँ" माना जाता है। तभी

क्या नेत्र चेतना तत्व को शेष तत्वों के साथ वर्गीकृत किया जा सकता है?

एक ही समूह के अंतर्गत और उसके अधीन चेतना के 6 तत्व

इन सभी चेतना तत्वों का आधार एक ही है।

चेतना के समूह और मन के आधार के अंतर्गत। लेकिन वे नहीं हो सकते।

नेत्र चेतना तत्व के समान तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत

यह दृष्टि चेतना तत्व के अंतर्गत आता है जबकि शेष भाग

चेतना के 6 तत्व अन्य तत्वों के अंतर्गत आते हैं।

3. नेत्र, नाक आदि की क्षमता के साथ, जो नेत्र के समान ही होती हैं।

आधार, नाक का आधार, इत्यादि, पदार्थ की शेष 27 भौतिक अवस्थाएँ

कुल योग को “ये अवस्थाएँ” माना जाता है। लेकिन महिलाओं के मामलों में

पुरुष संकाय और पुरुष संकाय, जो सूक्ष्म शारीरिक अवस्थाएँ हैं,

बारह स्थूल भौतिक अवस्थाओं को “ये अवस्थाएँ” माना जाता है। तभी

इनमें से प्रत्येक क्षमता को बारह स्थूल भौतिक अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

ये सभी भौतिक अवस्थाएँ एक ही समूह के अंतर्गत आती हैं।

पदार्थ समूह। लेकिन इन्हें एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता।

आधार और स्त्री एवं पुरुष क्षमताओं के समान तत्व के अंतर्गत

संज्ञेय आधार और संज्ञेय तत्व के अंतर्गत आते हैं जबकि

बारह स्थूल भौतिक अवस्थाएँ स्थूल आधारों और स्थूल अवस्थाओं के अंतर्गत आती हैं।

तत्व।

4. अगोचर विकास और एक-समूह विकास के साथ

जो समान हैं और जिनमें दृश्य वस्तु आधार और बोधगम्य शामिल हैं

आधार, 11 स्थूल भौतिक अवस्थाएँ (दृश्यमान वस्तु को छोड़कर)

बारह स्थूल भौतिक अवस्थाओं को "ये अवस्थाएँ" माना जाता है। तभी

क्या इनमें से प्रत्येक परिवर्तन को 11 स्थूल शारीरिक परिवर्तनों के साथ वर्गीकृत किया जा सकता है?

इन सभी भौतिक अवस्थाओं के समान समूह के अंतर्गत आने वाली अवस्थाएँ

पदार्थ समूह के अंतर्गत। लेकिन उन्हें इसके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत ही वे परिवर्तन आते हैं।

दृश्य वस्तु आधार और बोधगम्य आधार और दृश्य वस्तु के अंतर्गत

तत्व और बोधगम्य तत्व जबकि 11 स्थूल भौतिक अवस्थाएँ

अन्य आधारों और अन्य तत्वों के अंतर्गत आना।

5. विलाप, जो विकृत मन से उत्पन्न एक श्रव्य वस्तु है,

ध्वनि आधार के समान है। अतः शेष 27 भौतिक अवस्थाएँ

पदार्थ समूह को “ये अवस्थाएँ” माना जाता है। दृश्य और अदृश्य दोनों अवस्थाएँ।

और प्रभाव डालना केवल दृश्य वस्तु है जो दृश्य के समान है।

वस्तु आधार। अतः पदार्थ की शेष 27 भौतिक अवस्थाएँ एकत्रित होती हैं।

इन्हें “ये राज्य” के रूप में लिया जाता है।

6. अदृश्य लेकिन प्रभाव डालने वाली अवस्थाओं में 11 स्थूल भौतिक अवस्थाएँ शामिल हैं।

दृश्य वस्तु को बारह स्थूल भौतिक अवस्थाओं से बाहर रखा गया है। अतः

दृश्य वस्तु और 16 सूक्ष्म भौतिक अवस्थाओं को "ये" माना जाता है।

अवस्थाएँ। ये सभी भौतिक अवस्थाएँ पदार्थ समूह के अंतर्गत आती हैं।

इन्हें एक ही समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। लेकिन इन्हें नहीं किया जा सकता।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है

अदृश्य लेकिन प्रभाव डालने वाली अवस्थाएँ 9 स्थूल आधारों के अंतर्गत आती हैं और

9 स्थूल तत्वों के अंतर्गत जबकि दृश्य वस्तु और 16 सूक्ष्म तत्व

भौतिक अवस्थाएँ दृश्य वस्तु आधार और बोधगम्य आधार के अंतर्गत आती हैं।

और दृश्य वस्तु तत्व और बोधगम्य तत्व के अंतर्गत।

7. दृश्यता वाली अवस्थाएँ दृश्य वस्तु हैं जो कि समान है

दृश्य वस्तु आधार। अतः शेष 27 भौतिक अवस्थाएँ ली जाती हैं।

“ये राज्य” के रूप में।

8. आक्षेपण वाली अवस्थाएँ 12 स्थूल भौतिक अवस्थाएँ हैं। अतः

16 सूक्ष्म भौतिक अवस्थाओं को “ये अवस्थाएँ” माना जाता है। चूंकि ये सभी अवस्थाएँ

भौतिक अवस्थाएँ पदार्थ समूह के अंतर्गत आती हैं, इन्हें वर्गीकृत किया जा सकता है।

एक ही समूह के अंतर्गत। लेकिन उन्हें इसके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत, जैसे कि आपतित अवस्थाएँ।

सकल आधारों और सकल तत्वों के अंतर्गत आते हैं जबकि 16

सूक्ष्म भौतिक अवस्थाएँ बोधगम्य आधार के अंतर्गत आती हैं और इसके अंतर्गत आती हैं।

संज्ञेय तत्व।

व्युत्पन्न अवस्थाएँ पदार्थ की 24 भौतिक अवस्थाएँ हैं।

कुल योग। अतः तीन प्राथमिक भौतिक अवस्थाएँ (जल को छोड़कर)

इन्हें “ये अवस्थाएँ” माना जाता है। क्योंकि ये सभी भौतिक अवस्थाएँ आती हैं

पदार्थ समूह के अंतर्गत, उन्हें एक ही श्रेणी में वर्गीकृत किया जा सकता है।

कुल योग। लेकिन उन्हें एक ही आधार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है और

जिन अवस्थाओं का व्युत्पन्न रूप बनता है, वे भी उसी तत्व के अंतर्गत आती हैं।

अन्य सकल आधारों और अन्य सकल तत्वों के अंतर्गत जबकि 3

प्राथमिक भौतिक अवस्थाएँ मूर्त वस्तु आधार के अंतर्गत आती हैं और इसके अंतर्गत आती हैं

मूर्त वस्तु तत्व।

“वे राज्य” : “वे राज्य” उन राज्यों के समान हैं जो

इन्हें “ये राज्य” के रूप में लिया गया था।

अवर्गीकृत: वे समुच्चय, आधार और तत्व जिनके अंतर्गत

“ये राज्य” के रूप में लिए गए प्रत्येक राज्य को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है

जांच के राज्यों के वर्गीकरण से पता चला है

सारणियाँ। शेष वे समुच्चय, आधार और तत्व हैं।

जिसके अंतर्गत “वे राज्य” (जो “ये राज्य” के समान हैं)

वर्गीकृत नहीं हैं। उदाहरण के लिए, 27 भौतिक अवस्थाओं को इस प्रकार लिया गया है।

प्रश्न और उत्तर के पहले सेट में "इन राज्यों" को वर्गीकृत किया गया है

1 समुच्चय (पदार्थ समुच्चय) के अंतर्गत, 10 आधारों (9 स्थूल आधारों) के अंतर्गत

और संज्ञेय आधार) और 10 तत्वों के अंतर्गत (9 स्थूल तत्व)

और बोधगम्य तत्व)। इसलिए “वे अवस्थाएँ”, वही 27

भौतिक अवस्थाओं को शेष 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

(भावना, बोध, मानसिक संरचना और चेतना के समूह),

शेष 2 आधारों (आँख आधार और मन आधार) के अंतर्गत और उसके अंतर्गत

शेष 8 तत्व (नेत्र तत्व और 7 चेतना तत्व)।

यही बात अन्य सभी राज्यों पर भी समान रूप से लागू होनी चाहिए।

प्रश्न और उत्तर।

चार्ट को कैसे पढ़ें: आंख के आधार को उदाहरण के तौर पर लें।

आँख के आधार को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है (शेष 27 भौतिक

पदार्थ की अवस्थाओं का समूह) उसी समूह (पदार्थ) के अंतर्गत

कुल योग), लेकिन एक ही आधार (नेत्र आधार) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है और

एक ही तत्व (नेत्र तत्व) के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन अवस्थाओं में कितने तत्व हैं (शेष 27 भौतिक

पदार्थ की अवस्थाओं का समूह) वर्गीकृत नहीं है? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत (भावना, बोध, मानसिक गठन और

चेतना समूह), 2 आधारों के अंतर्गत (आँख आधार और मन आधार)

और 8 तत्वों के अंतर्गत (नेत्र तत्व और 7 चेतना तत्व)।

इसके बाद नाक का आधार आता है, जिसका पाठ में उल्लेख नहीं किया गया है।

आधार को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है (शेष 27 भौतिक अवस्थाएँ)

पदार्थ समूह का) उसी समूह के अंतर्गत (पदार्थ समूह)

लेकिन एक ही आधार (नाक का आधार) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है और इसके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है

समान तत्व (नाक तत्व)।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन अवस्थाओं में कितने तत्व हैं (शेष 27 भौतिक

पदार्थ की अवस्थाओं का समूह) वर्गीकृत नहीं है? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत (भावना, बोध, मानसिक गठन और

चेतना समूह), 2 आधारों के अंतर्गत (नाक आधार और मन आधार)

और 8 तत्वों के अंतर्गत (नाक तत्व और चेतना के 7 तत्व)।

अन्य स्थूल आधारों और स्थूल तत्वों पर विचार किया जाना है।

इसी प्रकार अलग-अलग। मूर्त वस्तु के मामले में,

जिसमें पृथ्वी, ऊष्मा और वायु शामिल हैं, शेष 25 भौतिक तत्व

पदार्थ की अवस्थाओं के समूह को "ये अवस्थाएँ" के रूप में लिया जाता है।

"उन राज्यों" (या "इन राज्यों") के प्रकार: जाँच करने पर

"उन राज्यों" के स्तंभों में यह पाया गया है कि 8 प्रकार हैं।

उन राज्यों की संख्या। जांच के दायरे में आने वाले राज्यों की संख्या जो

समान प्रकार के उत्तर प्रश्नों के साथ कोष्ठकों में दिखाए गए हैं।

बाद वाले को एक ही प्रकार के लिए एक साथ समूहीकृत किया गया है।

"वे राज्य"	**प्रश्न संख्याएँ**	**राज्यों की संख्या**
(1) शेष 27 भौतिक अवस्थाएँ।	171(18),173 (5), 175(2), 177(1)	26
(2) शेष 25 भौतिक अवस्थाएँ	171 (2)	2
(3) शेष 6 चेतना तत्व।	172 (7)	7
(4) 12 स्थूल भौतिक अवस्थाएँ।	173 (2)	2
(5) 11 स्थूल भौतिक अवस्थाएँ।	174 (2)	2
(6) दृश्य वस्तु + 16 सूक्ष्म भौतिक अवस्थाएँ	176(1)	1
(7) 16 सूक्ष्म भौतिक अवस्थाएँ।	178(1)	1
(8) पृथ्वी, ऊष्मा, हवा	178(1)	1
		कुल 42

पहले तीन प्रकारों के मामले में, आंकड़े समान हैं लेकिन नहीं

उदाहरण के लिए, यदि आँख के आधार की बात करें, तो 28 भौतिक अवस्थाएँ होती हैं।

आँख के आधार को छोड़कर, यानी 27, को "उन अवस्थाओं" के रूप में लिया जाता है। नाक के साथ

आधार, 28 जिसमें नाक का आधार, यानी 27 शामिल नहीं है, लिया जाता है।

उत्तरों के प्रकार: चार्ट के नीचे दी गई तालिका दर्शाती है कि

पाँच प्रकार के उत्तर हैं। "उन" के साथ भी वही उत्तर दिया गया है।

राज्यों की संख्याएँ जो तालिका के समान कॉलम में हैं।

जांच की वे अवस्थाएँ जो एक ही प्रकार का परिणाम देती हैं, कोष्ठकों में दर्शाई गई हैं।

प्रश्नों के साथ-साथ, बाद वाले को एक साथ समूहीकृत किया गया है

प्रत्येक प्रकार का।

जवाब	**प्रश्न संख्याएँ**	**राज्यों की संख्या**
(1) 4, 2, 8	178 (20), 173 (7), 175(2) 177(1)	30
(2) 4, 11, 12	172 (7)	7
(3) 4, 3,9	174 (2)	2
(4) 4, 10, 16	176 (1)	1
(5)4,11,17	178 (2)	2
		कुल 42

यद्यपि समुच्चय, आधार और तत्वों की संख्याएँ

प्रत्येक उत्तर में समान होने के बावजूद, प्रकार हमेशा एक जैसे नहीं होते जैसा कि दिखाया गया है।

तालिका के नीचे। यह जानकारी पाठ में नहीं दी गई है।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धातुकथा >> **अध्याय** 3
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 3: अवर्गीकृत और वर्गीकृत

12 **प्रश्न और उत्तर**

179. भावना समूह को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है;

बोध समूह; मानसिक निर्माण समूह; मूल सत्य; पथ

सत्य को इन अवस्थाओं के साथ एक ही समूह में वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

लेकिन इन्हें एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? वे, को छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

3 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत (5).

180. . . . समाप्ति सत्य को इन अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

वही कुल योग, लेकिन उसी आधार के अंतर्गत और उसके अंतर्गत वर्गीकृत।

वही तत्व. . . . इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व (1) के अंतर्गत।

181. . . . जीवन शक्ति को इन अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

समान कुल योग, लेकिन समान आधार के अंतर्गत और उसके अंतर्गत वर्गीकृत।

वही तत्व. . . . उन्होंने, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखा

समुच्चयों को 2 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है और

1 तत्व (1) के अंतर्गत।

182. महिला संकाय को इन राज्यों में वर्गीकृत नहीं किया गया है; पुरुष

शारीरिक सुख का अनुभव करने की क्षमता; शारीरिक पीड़ा का अनुभव करने की क्षमता; मानसिक क्षमता

आनंद की क्षमता; शोक की क्षमता; उदासीनता की क्षमता; आस्था की क्षमता;

ऊर्जा क्षमता; ध्यान क्षमता; एकाग्रता क्षमता;

ज्ञान की क्षमता; मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे नहीं पता था; उच्चतर

बोध शक्ति; ज्ञानी की शक्ति; अज्ञान;

अज्ञानता से प्रेरित, संरचनाएँ; 6 आधारों से प्रेरित।

संपर्क; संपर्क से प्रभावित, भावना; भावना से प्रभावित।

लालसा; लालसा से प्रेरित, आसक्ति; कर्म का होना

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है, लेकिन

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत... वे,

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

3 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत (22)।

183. जन्म; वृद्धावस्था; मृत्यु; ध्यान को इनके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही समूह के अंतर्गत आने वाले राज्य, लेकिन एक ही आधार के अंतर्गत वर्गीकृत।

और उसी तत्व के अंतर्गत. . . . वे, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 2 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

1 आधार और 1 तत्व के नीचे (4).

184. दुःख; पीड़ा; शोक; निराशा; ध्यान का अनुप्रयोग;

महान प्रयास; असीमित; 5 क्षमताएं; 5 खूबियां;

ज्ञानोदय के 7 कारक; आर्य अष्टांगिक मार्ग; संपर्क;

भावना; बोध; इच्छाशक्ति; निर्णय; ध्यान; अवस्थाएँ

जो मूल हैं; वे राज्य जो मूल हैं और उनसे संबद्ध भी हैं

मूल; वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और मूलों से भी जुड़ी हैं, वे नहीं हैं

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, लेकिन वर्गीकृत किया गया है

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत, वे, को छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

3 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत (20)।

185. वे अवस्थाएँ जो 4 कारणों से उत्पन्न नहीं होतीं; वे अवस्थाएँ जो इनसे प्रभावित नहीं होतीं।

इन राज्यों के साथ 4 कारणों को एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

लेकिन इन्हें एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

... इन्हें 4 समूहों, 1 आधार और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 तत्व (2).

186. वे अवस्थाएँ जो कलंक हैं; वे अवस्थाएँ जो दोनों प्रकार से कलंक हैं

और दोष के कारक; वे अवस्थाएँ जो दोष भी हैं और उनसे संबंधित भी हैं

कैंकर से संक्रमित व्यक्तियों को इन राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

कुल योग, लेकिन एक ही आधार और एक ही के अंतर्गत वर्गीकृत

तत्व. . . . उन्होंने निर्वाण को वर्गीकरण से बाहर रखा है

समुच्चयों को 3 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

1 तत्व (3).

187. बेड़ियाँ... बंधन... बाढ़... बंधन... बाधाएँ...

ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो दोनों ही गलतफहमियाँ हैं

और गलतफहमियों की वस्तुओं को वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

इन राज्यों को एक ही समूह के अंतर्गत रखा गया है, लेकिन इन्हें वर्गीकृत किया गया है

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत... वे, अपवाद स्वरूप

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

3 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत (17)।

188. वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं; वे अवस्थाएँ जो संबद्ध हैं

चेतना के साथ; चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो चेतना से जुड़ी हुई हैं और उसी से उत्पन्न होती हैं;

वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं, इससे उत्पन्न होती हैं और इससे उत्पन्न होती हैं

चेतना के साथ; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं,

चेतना द्वारा उत्पन्न और उसके साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होने वाले नहीं हैं

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, लेकिन वर्गीकृत किया गया है

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत, वे, को छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत (6).

189. वे अवस्थाएँ जो चेतना के साथ उत्पन्न होती हैं; वे अवस्थाएँ जो

चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होने वाली चीजों को इनके साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही समूह के अंतर्गत आने वाले राज्य, लेकिन एक ही आधार के अंतर्गत वर्गीकृत।

और उसी तत्व के अंतर्गत... उन्हें किसी भी श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

समुच्चय; उन्हें 1 आधार और 1 तत्व (2) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

190. आसक्ति से ग्रस्त अवस्थाएँ. . . . भ्रष्ट अवस्थाएँ;

ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी;

ऐसे राज्य जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचार से ग्रसित दोनों हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार से जुड़े दोनों को वर्गीकृत नहीं किया गया है।

इन राज्यों को एक ही समूह के अंतर्गत रखा गया है, लेकिन इन्हें वर्गीकृत किया गया है

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? वे, को छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

3 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत (7).

स्मृति सहायक

तीन समूह, उसी प्रकार सत्य, सोलह इंद्रियां।

चौदह आश्रित उत्पत्ति, अगली चौदह।

दस समूहों से संबंधित तीस प्रकार।

लघु दोहे से दो प्रकार, मध्यवर्ती दोहे से आठ प्रकार

दोहे।

अध्याय III की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: संज्ञेय आधार के अंतर्गत आने वाले 90 राज्य, अर्थात्

सूक्ष्म पदार्थ, भावना, बोध, मानसिक निर्माण और निर्वाण।

इस अध्याय का विषय ये राज्य हैं जो

इन्हें एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

लेकिन समान कुल योग के अंतर्गत नहीं। शेष सभी राज्यों के

पाठों को इसमें शामिल नहीं किया गया है क्योंकि उनमें स्थूल पदार्थ और चेतना शामिल हैं।

पहला वाला विभिन्न आधारों और विभिन्न तत्वों के अंतर्गत आता है।

जबकि बाद वाला विभिन्न तत्वों के अंतर्गत आता है। इनमें से

90 राज्यों में से 50 आंतरिक और 40 बाह्य राज्यों से संबंधित हैं।

जाँच करना।

प्रश्न और उत्तर: प्रश्नों के 12 सेट हैं।

उत्तर, क्रमांक 179-190

"ये राज्य": "इन राज्यों" को निर्धारित करने के नियम इस प्रकार हैं:

निम्नलिखित नुसार :-

1. जब जांच का विषय 5 राज्यों में से किसी एक राज्य से संबंधित हो,

अर्थात्; सूक्ष्म पदार्थ, भावना, बोध, मानसिक संरचना और

निर्वाण, जो संज्ञेय आधार के अंतर्गत आता है, शेष 4 राज्य
इन्हें "ये राज्य" माना जाता है **। चूंकि ये 5 राज्य इसके अंतर्गत आते हैं**

विभिन्न समूहों को एक ही समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

लेकिन वे संज्ञेय आधार और संज्ञेय के अंतर्गत आते हैं

तत्व और इसलिए, उन्हें एक ही आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

और उसी तत्व के अंतर्गत। उदाहरण के लिए, जब समग्र भावना महसूस होती है।

जब इन चार शेष अवस्थाओं, सूक्ष्म पदार्थ और बोध पर चर्चा हो जाती है,

मानसिक निर्माण और निर्वाण को "ये अवस्थाएँ" माना जाता है।

भावना समुच्चय, भावना समुच्चय के अंतर्गत आता है और शेष भाग

चार राज्य अलग-अलग समूहों के अंतर्गत आते हैं, इसलिए उन्हें शामिल नहीं किया जा सकता।

एक ही समूह के अंतर्गत वर्गीकृत। लेकिन सामूहिक भावना आती है।

संज्ञेय आधार के अंतर्गत और संज्ञेय तत्व के अंतर्गत, और ऐसा ही अन्य मामलों में भी होता है।

शेष 4 राज्य। इस प्रकार इन्हें एक ही आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

और उसी तत्व के अंतर्गत।

वह मामला जहां, क्रमांक 179 में भावना समूह की तरह, शेष

"ये राज्य" के रूप में 4 राज्यों को लिया गया है, यह नियम क्रमांक 180 और 182 पर भी लागू होता है।

184, 185, 186, 187 और 190 में जांच के 77 राज्यों पर चर्चा की गई है।

इस मामले में। क्रमांक 180 और 185 में, जहाँ निब्बाना राज्य है

जांच के दौरान, यह याद रखना चाहिए कि निर्वाण को इससे बाहर रखा गया है।

समुच्चयों का वर्गीकरण।

2. जब जांच का विषय 5 राज्यों में से 2 राज्यों से संबंधित हो

संज्ञेय आधार के अंतर्गत, शेष 3 राज्यों को "ये" माना जाता है।

राज्यों के मामले में भी यही स्थिति है। क्रमांक 181 और 183 में 5 राज्यों के मामले में भी यही स्थिति है।

पूछताछ का निपटारा किया जाता है।

क्रमांक 181 में जीवन शक्ति में भौतिक और मानसिक दोनों शक्तियाँ शामिल हैं।

जीवन में, पहला सूक्ष्म पदार्थ के अंतर्गत आता है और दूसरा इसके अंतर्गत।

मानसिक गठन। तो शेष 3 अवस्थाएँ, भावना, बोध और

निर्वाण को "ये अवस्थाएँ" के रूप में लिया जाता है।

क्रमांक 183 में जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु भौतिकता और दोनों को संदर्भित करते हैं।

वह मानसिकता जिसमें पूर्व सूक्ष्म पदार्थ के अंतर्गत आता है और

बाद में मानसिक गठन के अंतर्गत, इसलिए "ये अवस्थाएँ" समान हैं।

जैसा कि ऊपर जीवन-क्षमता के बारे में बताया गया है।

क्रमांक 183 में वर्णित ध्यान में व्यावहारिक विचार और निरंतर विचार शामिल हैं।

परमानंद, आनंद और एकाग्रता। आनंद एक अनुभूति है और मन की एकाग्रता।

बाकी सब मानसिक रचनाएँ हैं। अतः शेष 3 अवस्थाएँ सूक्ष्म पदार्थ हैं,

बोध और निर्वाण को "ये अवस्थाएँ" के रूप में लिया जाता है।

3. जब जांच का विषय उन 5 राज्यों में से 3 राज्यों से संबंधित हो, जिनके अंतर्गत

संज्ञेय आधार के आधार पर, शेष 2 अवस्थाओं को "ये अवस्थाएँ" माना जाता है।

मामला संख्या 188 का है, जिसमें जांच के 6 राज्यों पर विचार किया गया है।

साथ। ये सभी मानसिक कारक हैं, अर्थात् भावना, धारणा और

मानसिक गठन। तो शेष 2 अवस्थाएँ, सूक्ष्म पदार्थ और

निर्वाण को "ये अवस्थाएँ" के रूप में लिया जाता है।

4. जब जांच का विषय उन 5 राज्यों में से 4 राज्यों से संबंधित हो जिनके अंतर्गत

बोधगम्य आधार के बाद, शेष अवस्था को "ये अवस्थाएँ" माना जाता है।

मामला संख्या 189 का है, जिसमें जांच के दो चरणों पर विचार किया जा रहा है।

साथ में। प्रत्येक में 52 मानसिक कारक और 2 संकेत होते हैं,

पूर्व में भावना, धारणा और मानसिक गठन के अंतर्गत आना और

बाद वाला सूक्ष्म पदार्थ के अंतर्गत आता है। अतः एकमात्र शेष अवस्था निर्वाण है।

इसे इन राज्यों के रूप में लिया जाता है।

"वे राज्य": "वे राज्य" उन राज्यों के समान हैं

जिन्हें "इन राज्यों" के लिए लिया गया था। यह चिह्न द्वारा दर्शाया गया है।

स्तंभ में समानता।

वर्गीकृत: "उन राज्यों" में शामिल कुल योग इस प्रकार हो सकते हैं:

संबंधित "इन राज्यों" में दिए गए लोगों से पढ़ें

समुच्चय, आधार और तत्वों के अंतर्गत वर्गीकरण का उद्देश्य।

जहां कहीं भी निब्बाना को "उन राज्यों" में शामिल किया गया है, उसे बाहर रखा गया है।

कुल वर्गीकरण के अंतर्गत। वर्गीकरण के संबंध में

आधारों और तत्वों के अंतर्गत, यह हमेशा एक ही होता है, अर्थात्: बोधगम्य

आधार और बोधगम्य तत्व। क्रमांक 189 के मामले में, शून्य

वर्गीकृत समुच्चय तालिका से पता चलता है कि निब्बाना को इससे बाहर रखा गया है।

वर्गीकरण। यह अवर्गीकृत में भी इसी प्रकार दिखाया गया है।

क्रमांक 180 और 185 वाले एग्रीगेट कॉलम में, जांच की स्थिति इस प्रकार है:

निर्वाण।

चार्ट को कैसे पढ़ें: भावना समूह को एक उदाहरण के रूप में लें।

भावना समूह को इन अवस्थाओं (सूक्ष्म) के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है

पदार्थ, बोध, मानसिक निर्माण और निर्वाण) एक ही

सामूहिक (भावनात्मक सामूहिक) लेकिन एक ही आधार के अंतर्गत वर्गीकृत

(संज्ञेय आधार) और उसी तत्व के अंतर्गत (संज्ञेय तत्व)।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

वे कितने तत्व हैं जो अवस्थाएँ हैं (सूक्ष्म पदार्थ, बोध,

मानसिक गठन और निर्वाण को वर्गीकृत किया गया है? निर्वाण को छोड़कर, इन्हें वर्गीकृत किया गया है।

समुच्चयों के वर्गीकरण के आधार पर, इन्हें 3 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

(पदार्थ, बोध और मानसिक निर्माण समूह), 1 आधार के अंतर्गत

(पहचानने योग्य आधार) और 1 तत्व के अंतर्गत (पहचानने योग्य तत्व)।

“उन राज्यों” (या “इन राज्यों”) के प्रकार: जांच करने पर

“उन राज्यों” के स्तंभों में यह पाया गया है कि

“उन राज्यों” के 9 प्रकार। जांच के राज्यों की संख्या।

जो एक ही प्रकार के परिणाम देते हैं, उन्हें कोष्ठकों में दर्शाया गया है।

प्रश्न। यह जानकारी "इन राज्यों" वाले कॉलम में मिल सकती है।

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 179 (1), 182 (6), 184 (4)	11
2. 179 (1), 184 (1)	2
3. 179 (3), 182 (14), 184 (15), 186 (3), 187 (17), 190 (7)	59
4. 180 (1), 185 (2)	3
5. 181 (1), 183 (3)	4
6. 182 (2)	2
7. 183(1)	1
8. 188 (6)	6
9. 189(2)	2
	कुल 90

उत्तरों के प्रकार: चार्ट के नीचे दी गई वर्गीकृत तालिका दर्शाती है

कि पाँच प्रकार के उत्तर होते हैं। एक ही उत्तर एक द्वारा दिया जाता है।

उन राज्यों की संख्या “जांच के दायरे में आने वाले राज्यों की संख्या”

जिनसे एक ही प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है, उसे चार्ट से पढ़ा जा सकता है।

जवाब	**प्रश्न संख्याएँ**	**राज्यों की संख्या**
(1) 3, 1, 1	179 (5), 182 (22), 184 (20), 186 (3), 187 (17), 190 (7)	74
(2) 4, 1, 1	180 (1), 185 (2)	3
(3) 2, 1, 1	181 (1), 183 (4)	5
(4) 1, 1, 1	188 (6)	6
(5) 0, 1, 1	189 (2)	2
		कुल 90

उन समुच्चयों, आधारों और तत्वों के प्रकार जो इनके अनुरूप हैं

इन संख्याओं को संबंधित स्तंभ से ज्ञात किया जा सकता है।

"ये राज्य"। ये "उन राज्यों" के समान हैं।

अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 4: वर्गीकृत और वर्गीकृत

2 प्रश्न और उत्तर

191. उत्पत्ति सत्य को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है; पथ सत्य है

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत। उन अवस्थाओं को वर्गीकृत किया जाता है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और उसी तत्व के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? उन्हें वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व (2) के अंतर्गत।

192. महिला संकाय को इन राज्यों में वर्गीकृत किया गया है; पुरुष संकाय;

शारीरिक सुख का अनुभव करने की क्षमता; शारीरिक पीड़ा का अनुभव करने की क्षमता; मानसिक आनंद का अनुभव करने की क्षमता;

दु:ख की क्षमता; उदासीनता की क्षमता; आस्था की क्षमता; ऊर्जा

संकाय; ध्यान संकाय; एकाग्रता संकाय; ज्ञान

संकाय; मैं वह जानूंगा जो मैं नहीं जानता था; उच्चतर बोध

संकाय; वह-जो-पात्रता-जानता-है (15).

अज्ञान; अज्ञान से ग्रस्त, संरचनाएँ; ग्रस्त

6 आधारों द्वारा। संपर्क; भावना से प्रेरित। लालसा; प्रेरित

लालसा से। आसक्ति; कर्म से उत्पन्न; शोक; विलाप;

पीड़ा; शोक; निराशा (11).

ध्यान का अनुप्रयोग; महान प्रयास; असीमित;

5 शक्तियाँ; 5 सामर्थ्य; ज्ञानोदय के 7 कारक; आर्य अष्टांगिक विधि

पथ; संपर्क; इच्छाशक्ति; निर्णय; ध्यान (11).

वे राज्य जो मूल हैं; वे राज्य जो मूल हैं और जिनमें ये भी शामिल हैं

संबंधित मूल; वे राज्य जो मूल हैं और साथ ही संबंधित भी हैं

जड़ें; ऐसी अवस्थाएँ जो नासूर हैं... बेड़ियाँ हैं... बंधन हैं... बाढ़ हैं...

बंधन... बाधाएँ... गलतफहमियाँ... आसक्ति... अवस्थाएँ

जो भ्रष्टाचार हैं; ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार और

भ्रष्टाचार के शिकार; ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार और

भ्रष्ट; ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित हैं और इससे जुड़े हुए हैं

भ्रष्टाचार को इन राज्यों के साथ एक ही श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत। वे अवस्थाएँ हैं

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? उन्हें वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत (30)।

स्मृति सहायक

दो सत्य, पंद्रह क्षमताएँ, ग्यारह आश्रित उत्पत्तियाँ।

अगले ग्यारह, तीस प्रकार जो समूहों से संबंधित हैं।

अध्याय IV की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: 69 अवस्थाएँ जो मानसिक संरचना के भाग हैं

कुल योग, 5 संवेदी इंद्रियां, सूक्ष्म पदार्थ और 3 प्रकार की श्रव्य ध्वनियाँ

वस्तुएँ इस अध्याय का विषयवस्तु बनाती हैं। इनमें से प्रत्येक को

अन्य राज्यों के साथ समान श्रेणी में वर्गीकृत (इनमें से पहला)

चार्ट में राज्यों को दर्शाने वाले समान कुल योग के अंतर्गत, समान

आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत। और क्योंकि वे इससे संबंधित हैं।

समान समुच्चय, समान आधार और समान तत्व, अवस्थाएँ

तुलना के अंतर्गत, क्या उन्हें एक ही तरह से विनिमेय और वर्गीकृत किया जा सकता है?

जैसा कि ऊपर बताया गया है। 69 राज्यों में से 39 आंतरिक राज्य हैं और 30 अन्य राज्यों से संबंधित हैं।

जांच के बाह्य राज्य।

“ये राज्य”: “इन राज्यों” को निर्धारित करने के नियम इस प्रकार हैं:

निम्नलिखित नुसार :-

1. जब मानसिक संरचना की 50 अवस्थाओं में से कोई एक अवस्था एकत्रित होती है

जांच का विषय राज्य है, शेष 49 राज्य, जो भी इसमें शामिल हैं

समान योगफल के तहत, समान आधार के तहत और समान के तहत

तत्व को पहले "ये अवस्थाएँ" के रूप में लिया जाता है। अदला-बदली करने पर,

जांच की स्थिति को दूसरी "इन स्थितियों" के रूप में लिया जाता है।

उदाहरण के लिए, जब उत्पत्ति की सच्चाई पर विचार किया जाता है, तो शेष 49 राज्य

मानसिक गठन समूह के पहले "ये" के रूप में लिए जाते हैं

राज्यों”। उत्पत्ति सत्य और इसके अंतर्गत आने वाले 49 राज्य दोनों।

मानसिक गठन समग्र, बोधगम्य आधार के अंतर्गत और उसके अंतर्गत

संज्ञेय तत्व को एक ही समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत। अदला-बदली करने पर,

इन 49 राज्यों को उत्पत्ति सत्य, जांच की स्थिति आदि के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

जिसे उसी समूह के अंतर्गत दूसरे "ये राज्य" के रूप में लिया जाता है।

पहले मामले के समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

यह दूसरे "ये राज्य" कॉलम में दिखाया गया है।

चार्ट।

सत्य पथ के मामले में, केवल अलौकिक अष्टांगिक पथ ही एकमात्र मार्गदर्शक है।

यह 4 पथ चेतना से जुड़ा है। चूंकि सांसारिक

संपूर्ण चेतना और अन्य से संबंधित अष्टांग मार्ग है

यदि शामिल नहीं किया गया है, तो मानसिक गठन की 50 अवस्थाओं का कुल योग लिया जाता है।

"इन राज्यों" के रूप में।

उन अवस्थाओं के मामलों में जो मूल हैं, इत्यादि, 6 मूल इस प्रकार हैं:

बहिष्कृत और मानसिक गठन की 44 अवस्थाओं के समूह को लिया जाता है

“ये राज्य”।

2. जब सूक्ष्म पदार्थ की 16 अवस्थाओं में से एक, जैसे कि स्त्री शक्ति, प्रकट होती है।

जांच की स्थिति यह है कि शेष 15 भी इसके अंतर्गत आते हैं।

पदार्थ समुच्चय, संज्ञेय आधार के अंतर्गत और संज्ञेय के अंतर्गत

इन तत्वों को पहले “ये अवस्थाएँ” के रूप में लिया जाता है। फिर इन्हें आपस में बदलने पर,

जांच की स्थिति को दूसरे “ये स्थितियाँ” के रूप में लिया जाता है। यह भी

यह पुरुष शिक्षकों पर लागू होता है।

3. जब पाँच इंद्रियों में से कोई एक, जैसे शारीरिक सुख, प्रकट होती है।

संकाय जांच की अवस्था है, शेष 4 संकाय, जो भी

भावना समूह के अंतर्गत आना, बोधगम्य आधार के अंतर्गत आना और इसके अंतर्गत आना

बोधगम्य तत्व को प्रथम "ये अवस्थाएँ" माना जाता है। फिर आगे

अदला-बदली करने पर, जांच की स्थिति को दूसरे "इन" के रूप में लिया जाता है।

राज्यों ”।

4. जब विलाप जैसी तीन प्रकार की श्रव्य वस्तुओं में से कोई एक हो

जांच की स्थिति यह है, शेष 2, जो इसके अंतर्गत भी आते हैं

पदार्थ समूह, ध्वनि आधार और ध्वनि तत्व को लिया जाता है

पहले “ये अवस्थाएँ”। फिर अदला-बदली करने पर, जाँच की अवस्था।

इसे दूसरे “ये राज्य” के रूप में लिया जाता है।

“वे राज्य”: पहले और दूसरे “वे राज्य” हैं

पहले और दूसरे स्थान पर लिए गए राज्यों के समान ही "ये राज्य"

क्रमशः। यह चार्ट से देखा जा सकता है।

चार्ट को कैसे पढ़ें: उत्पत्ति सत्य को एक उदाहरण के रूप में लें।

उत्पत्ति सत्य को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है (शेष 49 अवस्थाएँ)

मानसिक गठन समूह) उसी समूह के अंतर्गत (मानसिक

गठन समुच्चय), एक ही आधार (पहचानने योग्य आधार) के अंतर्गत और

एक ही तत्व (संज्ञानात्मक तत्व) के अंतर्गत। वे अवस्थाएँ (

मानसिक गठन की शेष 49 अवस्थाओं को वर्गीकृत किया गया है।

इन अवस्थाओं (उत्पत्ति सत्य) के साथ समान समूह (मानसिक) के अंतर्गत

गठन समुच्चय), एक ही आधार (पहचानने योग्य आधार) के अंतर्गत और

एक ही तत्व (संज्ञानात्मक तत्व) के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन अवस्थाओं (मूल सत्य) को कितने तत्वों में वर्गीकृत किया गया है?

इन्हें 1 समूह (मानसिक गठन समूह) के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

1 आधार (पहचानने योग्य आधार) और 1 तत्व (पहचानने योग्य तत्व) के अंतर्गत।

पहले “ये” और “वे” राज्यों के प्रकार: एक ही

विभिन्न प्रकारों को एक साथ समूहीकृत किया गया है और कोष्ठकों में उल्लेख किया गया है।

प्रश्नों की संख्या:—

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
191 (उत्पत्ति सत्य 1), 192 (विश्वास, ऊर्जा, जागरूकता, अज्ञान, संपर्क, लालसा, आसक्ति, निराशा, संपर्क, इच्छाशक्ति, निर्णय, ध्यान + 30 समूह)	43
191 (मार्ग सत्य), 192 (एकाग्रता, ज्ञान, मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे नहीं पता था। उच्चतर बोध क्षमता, ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता। गठन, कर्म का बनना। आर्य अष्टांगिक मार्ग में ध्यान का अनुप्रयोग	15
192 महिला संकाय, पुरुष संकाय	2
192 शारीरिक सुख की क्षमता . . . उदासीनता की क्षमता (5), दुःख, पीड़ा, शोक	8
192 विलाप	1
	कुल 69

उत्तरों के प्रकार: उत्तर समान हैं

उनकी संख्या के अनुसार नहीं, बल्कि समुच्चय, आधार और तत्वों के प्रकारों के अनुसार।

वे जिन चीजों का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे वर्गीकृत कॉलम में पाई जा सकती हैं
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धातुकथा >> **अध्याय 5**
पालि संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 5: अवर्गीकृत और अवर्गीकृत

35 प्रश्न और उत्तर

193. पदार्थ समूह को इन अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

समान समुच्चय, समान आधार के अंतर्गत और समान तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों में कितने तत्व वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय, 1 आधार और 7 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत (1)।

194. भावना समूह को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है;

धारणा समूह; मानसिक गठन समूह को वर्गीकृत नहीं किया गया है

ये राज्य एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और

एक ही तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 बेस के अंतर्गत वर्गीकृत।

तत्व (3).

195. चेतना समूह; मन का आधार; नेत्र चेतना

तत्व. . . . मन तत्व; मन चेतना तत्व; मन

संकाय को इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

4 एग्रीगेट्स के तहत, 11 बेस के तहत और 11 के तहत वर्गीकृत

तत्व (10).

196. आँख का आधार इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं है। . . . मूर्त

ऑब्जेक्ट बेस; आई एलिमेंट; ... टैंजिबल ऑब्जेक्ट एलिमेंट नहीं है

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

4 समुच्चयों, 2 आधारों और 8 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया

तत्व (20).

197. संज्ञेय आधार; संज्ञेय तत्व; महिला संकाय;

पुरुष संकाय; आजीवन संकाय को इन राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

समान योग, समान आधार के अंतर्गत और समान के अंतर्गत

तत्व।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

1 कुल योग, 1 आधार और 7 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है

तत्व (5).

198. उत्पत्ति सत्य; पथ सत्य; समाप्ति सत्य का वर्गीकरण नहीं किया गया है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और उसी तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 बेस के अंतर्गत वर्गीकृत।

तत्व (3).

199. नेत्र संबंधी क्षमता... शरीर संबंधी क्षमता को इन अवस्थाओं में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

समान योगफल के तहत, समान आधार के तहत और समान के तहत

तत्व।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 8 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत (5)।

200. शारीरिक सुख का अनुभव; शारीरिक पीड़ा का अनुभव; मानसिक आनंद

क्षमता; शोक क्षमता; उदासीनता क्षमता; आस्था क्षमता;

ऊर्जा क्षमता; ध्यान क्षमता; एकाग्रता क्षमता;

ज्ञान की क्षमता; वह क्षमता जिससे मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे पहले नहीं पता था;

उच्चतर बोध क्षमता; ज्ञानी की क्षमता; अज्ञान;

अज्ञानता से प्रेरित। निर्माण को इनके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जाता।

एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और एक ही आधार के अंतर्गत राज्य

समान तत्व।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

तत्व (15).

201. गठन द्वारा वातानुकूलित। चेतना को वर्गीकृत नहीं किया जाता है

ये राज्य एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और

एक ही तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

4 एग्रीगेट्स के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं, 11 बेस के अंतर्गत और 11 के अंतर्गत

तत्व (1).

202. चेतना द्वारा नियंत्रित, मानसिक-भौतिकता नहीं है

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

1 समुच्चय, 1 आधार और 7 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत (1)।

203. मानसिकता-भौतिकता से वातानुकूलित, 6 आधारों का वर्गीकरण नहीं किया गया है।

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत, समान

आधार और उसी तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

3 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत (1)।

204. 6 आधारों द्वारा नियंत्रित, संपर्क; ओन्टएमटी द्वारा नियंत्रित,

भावना; भावना से प्रेरित, लालसा; लालसा से प्रेरित

आसक्ति; कम्मा अवस्था को इन अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

समान योग, समान आधार के अंतर्गत और समान के अंतर्गत

तत्व।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 बेस के अंतर्गत वर्गीकृत।

तत्व (5).

205. अमूर्त विकास; न तो अनुभूति और न ही अअनुभूति

विकास; चार-समूह विकास; मानसिक शक्ति का मार्ग

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

1 कुल योग, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत

तत्व (4).

206. अगोचर विकास; एक-समूह विकास; जन्म;

वृद्धावस्था; मृत्यु को इन अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है।

इन्हें 1 समुच्चय, 1 आधार और 7 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

तत्व (5).

207. विलाप को इन अवस्थाओं के साथ एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है।

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 8 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

तत्व (1).

208. दुःख; पीड़ा; शोक; निराशा; ध्यान का अनुप्रयोग;

महान प्रयास; ध्यान; असीम; 5 शक्तियाँ; 5 सामर्थ्य;

ज्ञानोदय के 7 कारक; आर्य अष्टांगिक मार्ग; संपर्क;

भावना; बोध; इच्छाशक्ति; निर्णय; ध्यान

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 बेस के अंतर्गत वर्गीकृत।

तत्व (18).

209. चेतना को इन अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

समान समुच्चय, समान आधार के अंतर्गत और समान तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

4 एग्रीगेट्स के तहत, 11 बेस के तहत और 11 के तहत वर्गीकृत

तत्व (1).

त्रिक

210. स्वस्थ राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है;

अस्वस्थ अवस्थाएँ; सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ; अवस्थाएँ

दर्दनाक अनुभूति से संबंधित; ऐसी अवस्थाएँ जो इस भावना से जुड़ी हैं कि

न तो कष्टदायक है और न ही सुखदायक; परिणामी अवस्थाएँ; उत्पन्न करने वाली अवस्थाएँ

परिणामी अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं और न ही

आसक्ति के लिए अनुकूल; भ्रष्ट और भ्रष्ट करने वाले राज्य; भ्रष्ट नहीं

और भ्रष्ट राज्यों को नहीं; व्यावहारिक सोच वाले राज्य और

निरंतर चिंतन; व्यावहारिक चिंतन के बिना लेकिन व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य

निरंतर चिंतन; परमानंद से युक्त अवस्थाएँ; साथ में अवस्थाएँ

आनंद; उदासीनता से ग्रस्त अवस्थाएँ; द्वारा समाप्त की गई अवस्थाएँ

पहला मार्ग; उच्चतर 3 मार्गों द्वारा समाप्त किए गए राज्य; राज्य एक साथ

प्रथम पथ द्वारा जड़ से उखाड़े गए; जड़ों सहित राज्य

उच्चतर तीन मार्गों द्वारा उन्मूलन; पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ;

निर्वाण की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ; शिक्षार्थियों से संबंधित अवस्थाएँ;

अरहत्त से संबंधित राज्य; उच्च राज्य; अतुलनीय

राज्य; सीमित उद्देश्यों वाले राज्य; उच्च उद्देश्यों वाले राज्य;

अतुलनीय उद्देश्यों वाले राज्य; निम्न राज्य; उच्च राज्य;

गलत विचारों के कारण नियति निर्धारित राज्य; नियति निर्धारित राज्य

सही दृष्टिकोण के कारण नियति; पथ वस्तुओं वाले राज्य;

पथ द्वारा निर्धारित अवस्थाएँ; पथ द्वारा नियंत्रित अवस्थाएँ; पथ से प्रभावित अवस्थाएँ

भूतकाल की वस्तुएँ; भविष्य की वस्तुओं वाली अवस्थाएँ; वर्तमान की वस्तुओं वाली अवस्थाएँ

वस्तुएँ; आंतरिक वस्तुओं वाले राज्य; बाह्य वस्तुओं वाले राज्य;

आंतरिक और बाह्य वस्तुओं वाले राज्यों को वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

ये राज्य एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और

एक ही तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

1 कुल योग, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत

तत्व (41).

211. दृश्य और प्रभाव डालने वाली दोनों अवस्थाएँ; अदृश्य अवस्थाएँ लेकिन

अतिक्रमण करने वाले राज्यों को इन राज्यों के साथ एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 8 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत (2)।

दोहे

212. जो राज्य मूल हैं उन्हें इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया जाता है;

वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और जिनसे संबंधित मूल भी हैं; वे अवस्थाएँ जो

जड़ और जड़ों से जुड़े अन्य तत्व इनके साथ वर्गीकृत नहीं किए गए हैं।

एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और एक ही आधार के अंतर्गत राज्य

वही तत्व।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 बेस के अंतर्गत वर्गीकृत।

तत्व (3).

213. वे राज्य जिनमें संबद्ध मूल हैं; वे राज्य जो

जड़ों से संबद्ध; वे राज्य जिनमें संबद्ध जड़ें हैं लेकिन

मूल नहीं; वे अवस्थाएँ जो मूलों से संबंधित हैं लेकिन स्वयं मूल नहीं हैं;

वे राज्य जो मूल इकाई नहीं हैं, लेकिन उनसे संबंधित मूल इकाइयाँ हैं, उन्हें वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और उसी तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

1 कुल योग के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 के अंतर्गत नहीं

तत्व (5).

214. वे अवस्थाएँ जो 4 कारणों से उत्पन्न नहीं होतीं; वे अवस्थाएँ जो किसी शर्त से बंधी नहीं होतीं।

इन राज्यों के अंतर्गत 4 कारणों को वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

तत्व (2).

215. दृश्यता वाले राज्य; अतिक्रमण करने वाले राज्यों को वर्गीकृत नहीं किया गया है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और उसी तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

4 समुच्चयों, 2 आधारों और 8 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया

तत्व (2).

216. भौतिक परिवर्तन वाली अवस्थाओं को इस श्रेणी में नहीं रखा जाता है।

ये राज्य एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और

एक ही तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

1 कुल योग, 1 आधार और 7 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है

तत्व (1).

217. वे अवस्थाएँ जिनमें कोई भौतिक परिवर्तन नहीं होता; वे अवस्थाएँ जो

अलौकिक अवस्थाओं को इन अवस्थाओं के साथ एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

1 कुल योग के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 के अंतर्गत नहीं

तत्व (2).

218. वे अवस्थाएँ जो कलंक हैं; वे अवस्थाएँ जो दोनों प्रकार से कलंक हैं

और रोग के कारक; वे अवस्थाएँ जो रोग और उससे संबंधित दोनों हैं

कैंकर से संक्रमित व्यक्तियों को इन राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे नहीं हैं

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 बेस के अंतर्गत वर्गीकृत।

तत्व (3).

219. वे राज्य जो दोषग्रस्त नहीं हैं; वे राज्य जो

कैंकर से संबंधित; कैंकर से संबंधित राज्य

लेकिन वे रोग नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो रोगों से अलग हैं और

कैंकर के शिकार नहीं हैं, इन्हें इन राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

समान योग, समान आधार के अंतर्गत और समान के अंतर्गत

तत्व।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

1 कुल योग के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 के अंतर्गत नहीं

तत्व (4).

220. वे राज्य जो बंधन हैं... वे राज्य जो बंधन हैं... राज्य

जो बाढ़ हैं... राज्य जो बंधन हैं... राज्य जो हैं

बाधाएँ... ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो...

गलतफहमियां और गलतफहमियों के विषय दोनों ही एक जैसे नहीं होते।

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

तत्व (37).

221. वे राज्य जो गलतफहमियों के विषय नहीं हैं; राज्य

जो गलतफहमियों से जुड़े हैं; वे राज्य जो

गलतफहमियों से अलग हैं और इनके विषय नहीं हैं

गलतफहमियाँ; जिन राज्यों के उद्देश्य हैं, उन्हें वर्गीकृत नहीं किया जाता है

ये राज्य एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और

एक ही तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

1 कुल योग के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 के अंतर्गत नहीं

तत्व (4).

222. वे अवस्थाएँ जिनमें कोई वस्तु नहीं होती; वे अवस्थाएँ जो चेतना नहीं होतीं;

वे अवस्थाएँ जो चेतना से विरक्त हैं; अवस्थाएँ

जो चेतना से जुड़े नहीं हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो

चेतना द्वारा उत्पन्न; चेतना के साथ उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होती हैं;

बाह्य अवस्थाओं का वर्गीकरण नहीं किया जाता है; व्युत्पन्न अवस्थाओं को भी वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और उसी तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

1 कुल योग, 1 आधार और 7 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है

तत्व (9).

223. चेतना की अवस्थाओं को इनके साथ वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और एक ही आधार के अंतर्गत राज्य

वही तत्व।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

4 एग्रीगेट्स के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं, 11 बेस के अंतर्गत और 11 के अंतर्गत

तत्व (1).

224. वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं; वे अवस्थाएँ जो संबद्ध हैं

चेतना के साथ; चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और उनसे उत्पन्न भी होती हैं

चेतना; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं, इससे उत्पन्न होती हैं

और चेतना के साथ उत्पन्न होते हैं; वे अवस्थाएँ जो संयुक्त हैं

चेतना के साथ, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होते हैं।

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

तत्व (6).

225. आंतरिक राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

समान योगफल के तहत, समान आधार के तहत और समान के तहत

तत्व।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

3 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया

तत्व (1).

226. आसक्ति से ग्रस्त अवस्थाएँ... भ्रष्ट अवस्थाएँ;

ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी;

ऐसे राज्य जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचार से ग्रसित दोनों हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार से जुड़े दोनों को वर्गीकृत नहीं किया गया है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और उसी तत्व के अंतर्गत।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है। . . . वे

2 एग्रीगेट, 11 बेस और 17 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

तत्व (11).

227. वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं; वे राज्य जो

भ्रष्ट; भ्रष्टाचार से जुड़े राज्य; राज्य

जो भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्टाचार नहीं हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्टाचार से जुड़े हुए हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं; ऐसे राज्य जो

वे भ्रष्टाचार से अविभाजित हैं और भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं;

प्रथम मार्ग द्वारा नष्ट किए गए राज्य; द्वारा नष्ट किए गए राज्य

उच्चतर 3 पथ; राज्यों के साथ-साथ जड़ों को भी जड़ से उखाड़ दिया गया

पहला मार्ग; राज्यों के साथ-साथ जड़ों को भी जड़ से उखाड़ दिया गया

उच्चतर 3 मार्ग; व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य;

निरंतर चिंतन; परमानंद की अवस्थाएँ; ऐसी अवस्थाएँ जो

परमानंद से युक्त; आनंद से युक्त अवस्थाएँ;

उदासीनता से युक्त अवस्थाएँ; उदासीनता से युक्त अवस्थाएँ

इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित; सूक्ष्म अवस्थाओं से संबंधित अवस्थाएँ

भौतिक तल; अभौतिक तल से संबंधित अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो अस्तित्व के चक्र में शामिल नहीं हैं;

जो अस्तित्व के चक्र से निकलते हैं; ऐसी अवस्थाएँ जिनमें

मृत्यु के बाद या स्वयं घटित होने के बाद निश्चित नियति का परिणाम मिलता है;

वे अवस्थाएँ जो परे नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो कारण हैं

विलाप को इन अवस्थाओं के साथ एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

उन राज्यों को इन राज्यों के साथ एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों में कितने तत्व वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 कुल योग, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 से कम के अंतर्गत वर्गीकृत

तत्व (24).

स्मृति सहायक

(क) सभी समुच्चय, सभी आधार और तत्व, तीन सत्य,

सभी संकाय, तेईस आश्रित उत्पत्तियाँ,

अगले सोलह, तैंतालीस तिगुने बच्चे।

बहत्तर समूह, सात छोटे मध्यवर्ती दोहे।

अठारह जो बड़े मध्यवर्ती दोहों से संबंधित हैं, और फिर

अंतिम दोहे के अठारह प्रकार। ये (257) प्रकार की अवस्थाएँ हैं

व्याख्या की,

अध्याय V की व्यवस्था में बुद्ध द्वारा। शेष (114)

इनकी व्याख्या नहीं की गई है।

(ख) पदार्थ समूह, संज्ञेय आधार, संज्ञेय तत्व।

स्त्री और पुरुष की क्षमताएँ, जीवन शक्ति, मानसिकता-भौतिकता,

दो अवस्थाएँ - जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु - भौतिक अवस्थाएँ।

वस्तुहीन अवस्थाएँ, अचेतनता, चेतना से विरक्त अवस्थाएँ।

चेतना से जुड़ा हुआ नहीं, चेतना से उत्पन्न।

चेतना के साथ उत्पन्न होना, चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होना,

बाह्य, व्युत्पन्न अवस्थाएँ। इस प्रश्न की विधि और

उत्तर को ठीक से समझा जाना चाहिए।

अध्याय V की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: 257 राज्य जो 5 समूहों का हिस्सा हैं

या वे जो निर्वाण के प्रतीक हैं, इस विषयवस्तु का निर्माण करते हैं।

अध्याय। ये वे राज्य हैं जिन्हें अन्य राज्यों के साथ वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

चार्ट में पहले "ये राज्य" के रूप में जाने जाने वाले राज्यों के अंतर्गत

समान समुच्चय, समान आधार के अंतर्गत और समान तत्व के अंतर्गत।

फिर से अन्य राज्य (जिन्हें चार्ट में "वे राज्य" के रूप में जाना जाता है)

संभावित अवस्थाओं (जिन्हें द्वितीय अवस्था के रूप में जाना जाता है) के साथ वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है

चार्ट में "ये राज्य") समान कुल योग के अंतर्गत,

दूसरे अवर्गीकृत में, समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

वे अवस्थाएँ जिनमें सूक्ष्म पदार्थ और चेतना दोनों समाहित होते हैं

कुल योग को इस प्रकार से नहीं माना जा सकता है और इसलिए

बाहर रखा गया। 257 राज्यों में से 99 आंतरिक और 158 राज्य हैं।

जांच के बाह्य राज्यों से संबंधित हैं।

“ये राज्य” और “वे राज्य”: निर्धारण के नियम

“ये राज्य” और “वे राज्य” निम्नलिखित हैं:—

1. जब पदार्थ समूह जांच का विषय होता है, तो चेतना

कुल योग, जो एक ही कुल योग के अंतर्गत नहीं आता है, के अंतर्गत

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत, इसे प्रथम "ये" के रूप में लिया जाता है

अवस्थाएँ ” . पदार्थ का समूह, चेतना के समूह के विपरीत, आता है

1 समुच्चय (पदार्थ समुच्चय) के अंतर्गत, 11 आधारों (10 सकल) के अंतर्गत

आधार और संज्ञेय आधार) और 11 तत्वों के अंतर्गत (10 स्थूल तत्व)

और संज्ञेय तत्व)। अतः ये प्रथम अवर्गीकृत समुच्चय का निर्माण करते हैं,

आधार और तत्व। फिर चेतना का समूह (पहला)

“ये अवस्थाएँ”) पहले “वे अवस्थाएँ” बन जाती हैं और 28 भौतिक

पदार्थ की अवस्थाएँ, समूह, भावना, बोध, मानसिक संरचनाएँ

और निर्वाण, जो एक ही समूह के अंतर्गत नहीं आते,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत, दूसरे के रूप में लिया जाता है।

“ये राज्य” (और फिर दूसरा “वे राज्य” बन जाता है)।

बाद वाले को 1 समूह (चेतना) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जाता है

कुल योग), 1 आधार (मन का आधार) के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत

(चेतना के तत्व)। इसलिए वे दूसरे अवर्गीकृत का निर्माण करते हैं।

समुच्चय, आधार और तत्व

समुच्चय, आधारों के अंतर्गत वर्गीकरण और अवर्गीकृत

उपरोक्त राज्यों के तत्वों का विस्तृत विवरण इसमें दिया गया है।

पहला उदाहरण। अगले उदाहरणों में, इसका संक्षेप में उल्लेख किया जाएगा।

लेकिन विवरण चार्ट में दिए गए हैं। इन्हें भी पाया जा सकता है।

अध्याय I में दिए गए राज्यों के वर्गीकरण के संदर्भ में।

2. जब भावना, बोध, मानसिक संरचनाएँ या निर्वाण प्राप्त हो जाए

जब बारह स्थूल भौतिक अवस्थाओं और चेतना के समूह पर चर्चा की जाती है, तो

इन्हें प्रथम “ये अवस्थाएँ” माना जाता है। (यदि 28 भौतिक अवस्थाओं में से

पदार्थ समूह को लिया जाता है, फिर उनमें से कुछ, अर्थात्

सूक्ष्म भौतिक अवस्थाएँ एक ही आधार के अंतर्गत और एक ही के अधीन आ जाएँगी

तत्व)। जब पहले "ये अवस्थाएँ" अब पहले के रूप में ली जाती हैं

इन अवस्थाओं पर बारी-बारी से चर्चा की जाती है: भावना, बोध, मानसिक अवस्थाएँ।

संरचनाएं और निर्वाण, जो एक ही श्रेणी में नहीं आते हैं

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित होने वाले तत्व हैं

इसे दूसरे के रूप में लिया जाता है "ये राज्य और बाद में दूसरा बन जाता है

"वे राज्य"।

3. जब चेतना के समूह की बात आती है, तो 28 भौतिक अवस्थाएँ होती हैं।

पदार्थ, भावना, बोध, मानसिक संरचनाओं आदि का समूह

निर्वाण को पहली "ये अवस्थाएँ" माना जाता है। फिर जब

बाद वाले राज्यों को पहले "उन राज्यों" के रूप में लेते हुए, इस पर विचार किया जाता है।

चेतना का समूह, जो एक ही श्रेणी में नहीं आता

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत कुल योग है

इसे दूसरे "ये राज्य" के रूप में लिया जाता है और बाद में यह दूसरा बन जाता है

"वे राज्य"।

4. जब नेत्र आधार जैसी स्थूल भौतिक अवस्था से निपटा जाता है, तो

चार मानसिक समुच्चय और निर्वाण को प्रथम "इन" के रूप में लिया जाता है

राज्यों"। फिर जब बाद वाले राज्यों को पहले "उन" के रूप में लिया जाता है।

"अवस्थाओं" पर बारी-बारी से चर्चा की जाती है, बारह स्थूल भौतिक अवस्थाओं को ध्यान में रखा जाता है।

पहले "ये राज्य" और बाद में दूसरे "वे राज्य" के रूप में प्रयोग किया गया।

जब स्त्री की शारीरिक क्षमता जैसी सूक्ष्म शारीरिक अवस्था की बात आती है,

चेतना के समूह को पहली "इन अवस्थाओं" के रूप में लिया जाता है जब

बाद वाले राज्य को पहले राज्य के रूप में लेते हुए, "उन राज्यों" पर चर्चा की गई है।

मोड़, पदार्थ की 28 भौतिक अवस्थाएँ, समुच्चय, भावना, बोध,

मानसिक संरचनाएँ और निर्वाण को दूसरे "इन" के रूप में लिया जाता है।

राज्य" और बाद में दूसरा "वे राज्य" बन जाता है। यह महिला

संकाय, पदार्थ के समुच्चय के समान ही होता है, लेकिन इसे दर्शाया नहीं जाता है।

चार्ट।

5. जब आधार (जो कि 5 भौतिक आधार हैं जैसे कि नेत्र आधार,

आदि, और मन का आधार) से निपटा जाता है, भावना, धारणा, मानसिक

संरचनाओं और निर्वाण को पहली "ये अवस्थाएँ" माना जाता है।

जब बाद वाले राज्यों को पहले "उन राज्यों" के रूप में लिया जाता है तो उनसे निपटा जाता है

इसके साथ ही, 12 स्थूल भौतिक अवस्थाएँ और चेतना का समूह बनता है।

इन्हें दूसरे "ये राज्य" के रूप में और बाद में दूसरे के रूप में लिया जाता है

"वे राज्य"।

6. जब अमूर्त विकास होता है, जिसमें चार मानसिक अवस्थाएँ शामिल होती हैं।

जब समुच्चय की बात आती है, तो 12 स्थूल भौतिक अवस्थाओं को आधार माना जाता है।

पहले "ये राज्य"। जब बाद वाले राज्यों को पहले के रूप में लिया जाता है

"उन अवस्थाओं" पर बारी-बारी से चर्चा की जाती है, 4 मानसिक समुच्चय और

निर्वाण को दूसरी "ये अवस्थाएँ" के रूप में और बाद में इसके रूप में लिया जाता है।

दूसरा "वे राज्य"।

बुनियादी नियम: किसी विशेष राज्य या राज्यों से निपटते समय,

अन्य सभी राज्य जिन्हें एक ही समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है,

आधार और तत्व को तुलनात्मक अवस्थाओं के रूप में लिया जाना चाहिए।

चार्ट को कैसे पढ़ें: पदार्थ का समग्र रूप केवल एक उदाहरण के रूप में लिया गया है।

पदार्थ समूह को इन अवस्थाओं (चेतना) के साथ वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

उसी समुच्चय (पदार्थ समुच्चय 1) के अंतर्गत समुच्चय

समान आधार (10 सकल आधार और संज्ञेय आधार, यानी 11) और इसके अंतर्गत

समान तत्व (10 स्थूल तत्व और संज्ञेय तत्व, अर्थात् 11)।

उन अवस्थाओं (चेतना समूह) को इनके साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है।

अवस्थाएँ (पदार्थ की 28 भौतिक अवस्थाएँ, समग्र, भावना, बोध,

मानसिक संरचनाओं और निर्वाण) को एक ही समूह के अंतर्गत रखा गया है।

(चेतना समूह 1), एक ही आधार (मन आधार 1) के अंतर्गत और उसके अंतर्गत

वही तत्व (चेतना तत्व 7)।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन अवस्थाओं में कितने तत्व होते हैं (पदार्थ की 28 भौतिक अवस्थाएँ)

(समुच्चय, भावना, धारणा, मानसिक संरचनाएं और निर्वाण) नहीं

वर्गीकृत? उन्हें 1 समूह (चेतना) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

कुल योग), 1 आधार (मन का आधार) के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत

(चेतना तत्व 7)।

उत्तरों के प्रकार: छह प्रकार के उत्तर हैं।

इस अध्याय में इतने सारे प्रश्न और उत्तर हैं कि सभी

इन्हें चार्ट में शामिल नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 193 (1), 197 (5), 202 (1), 206 (5), 216 (1). 222 (9)	22
2. 194 (3), 198 (3), 200 (15), 204 (5), 208 (18), 212 (3), 214 (2), 218 (3), 220 (17), 224 (5), 226 (7)	82
3. 195 (10), 201 (1), 209 (1), 223 (1)	13
4.196 (20),199 (5),207 (1),211 (2),215 (2)	30
5. 203 (1), 225 (1)	2
6. 205 (4), 210 (41), 213 (5), 217 (2), 219 (4), 220 (20), 221 (4), 226 (4), 227 (24)	108
	कुल 257

उन समुच्चयों, आधारों और तत्वों के प्रकार जो निम्नलिखित के अनुरूप हैं

संख्याएँ अंतिम अवर्गीकृत स्तंभ में पाई जाती हैं। इसलिए

दूसरे प्रकार के "वे राज्य" समुच्चय के समान ही हैं।

उत्तरों के आधार और तत्व।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धातुकथा >> **अध्याय** 6
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 6: जुड़ाव और अलगाव

78 प्रश्न और उत्तर

1. **समुच्चय**

228. कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कितने आधारों के साथ

पदार्थ समूह कितने तत्वों से संबंधित है? किसी से नहीं।

यह कितने समूहों से वियोजित होता है? यह 4 समूहों से वियोजित होता है।

1 आधार और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्व से (1).

229. . . . भावना का समूह; धारणा का समूह; मानसिक गठन

एग्रीगेट 3 एग्रीगेट, 1 बेस और के साथ जुड़ा हुआ है।

7 तत्व; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (3).

230. . . . चेतना समूह 3 समूहों से जुड़ा है;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

2. आधार

231. कितने के साथ . . . नेत्र आधार . . . मूर्त वस्तु आधार है?

किसी से संबंधित नहीं।

यह कितने समूहों से वियोजित होता है? यह 4 समूहों से वियोजित होता है।

1 आधार और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्व से (10).

232. मन का आधार 3 समूहों से जुड़ा है; आंशिक रूप से जुड़ा हुआ है

1 आधार और 1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

3. तत्व

233. आँख का तत्व कितने से . . . है . . . मूर्त वस्तु

क्या यह तत्व किसी से संबद्ध है?

यह कितने समूहों से वियोजित होता है? यह 4 समूहों से वियोजित होता है।

1 आधार और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्व से (10).

234. नेत्र चेतना तत्व... मन तत्व; मन चेतना

यह तत्व 3 समूहों से जुड़ा है; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व से संबंधित।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (7).

4. सत्य इत्यादि

235. मूल सत्य; पथ सत्य 3 समुच्चयों से जुड़ा है,

1 आधार और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से 1 समूह से संबद्ध,

1 आधार और 1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (2).

236. कितने के साथ... समाप्ति सत्य है; नेत्र शक्ति... शरीर

संकाय; महिला संकाय; पुरुष संकाय संबद्ध 1 किसी से नहीं।

यह कितने समूहों से वियोजित होता है? यह 4 समूहों से वियोजित होता है।

1 आधार और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्व से (8).

237. मानसिक क्षमता 3 समूहों से जुड़ी है; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व से संबंधित।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

238. शारीरिक सुख का अनुभव; शारीरिक पीड़ा का अनुभव; मानसिक आनंद

संकाय; शोक संकाय 3 समूहों से जुड़ा है, जिसमें 1 आधार है।

और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से 1 आधार और के साथ संबद्ध

1 तत्व।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (4).

239. उदासीनता क्षमता 3 समूहों से जुड़ी है, जिनमें शामिल हैं:

1 आधार और 6 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से 1 आधार से संबद्ध और

1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 11 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1)

240. आस्था शक्ति; ऊर्जा शक्ति; ध्यान शक्ति; एकाग्रता

ज्ञान की क्षमता; बुद्धि की क्षमता; मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे नहीं पता था;

उच्चतर अनुभूति की क्षमता; वह जिसने जान लिया है

क्षमता; अज्ञान; अज्ञान से ग्रस्त, मानसिक संरचनाएँ

ये 3 समुच्चयों, 1 आधार और 1 तत्व से जुड़े होते हैं;

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 से संबद्ध

तत्व।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (10)।

241. संरचनाओं द्वारा वातानुकूलित। चेतना इससे जुड़ी है

3 समुच्चय; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

242. 6 आधारों द्वारा नियंत्रित। संपर्क 3 समूहों से जुड़ा है।

1 आधार और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से संबंधित

1 समुच्चय, जिसमें 1 आधार और 1 तत्व है।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

243. संपर्क द्वारा नियंत्रित, भावना 3 समूहों से जुड़ी होती है,

1 आधार और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से संबंधित

1 आधार और 1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

244. भावना से प्रेरित। लालसा; लालसा से प्रेरित।

आसक्ति; कर्म का बनना 3 समुच्चयों से जुड़ा है, जिनके साथ

1 आधार और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से 1 समूह से संबद्ध,

1 आधार और 1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (3).

245. महीन पदार्थ कितने पदार्थों के साथ जुड़ रहा है?

किसी के साथ नहीं।

यह कितनों से पृथक है? यह किसी से पृथक नहीं है।

किसी भी आधार से अविभाजित समुच्चय; यह इससे विभाजित है

3 तत्व (1).

246. कितने के साथ..., अमूर्त बन रहा है; न ही बोध

न ही अबोध का बनना; चार-समूह का बनना

किसी से संबंधित नहीं।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (3).

247. कितने के साथ... अगोचर हो रहा है; एक

सामूहिक 'बनना'; विलाप किसी से संबंधित नहीं है।

यह कितने समूहों से वियोजित होता है? यह 4 समूहों से वियोजित होता है।

1 आधार और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्व से (3).

248. शोक; पीड़ा; दुःख तीन स्कंधों से संबंधित है।

एक आधार और एक तत्व के साथ; आंशिक रूप से एक आधार से संबद्ध

और 1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (3).

249. निराशा; ध्यान का प्रयोग; बहुत प्रयास आवश्यक है

3 समुच्चयों, 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध;

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और के साथ संबद्ध

1 तत्व।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (3).

250. मानसिक शक्ति का मार्ग 2 समुच्चयों से जुड़ा है;

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 से संबद्ध

तत्व।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

251. ज्ञान 2 समुच्चयों, 1 आधार और 1 आधार से जुड़ा हुआ है।

1 तत्व; आंशिक रूप से 1 समुच्चय से संबद्ध, 1 आधार के साथ

और 1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

252. असीमित; 5 क्षमताएँ; 5 शक्तियाँ; ज्ञानोदय के 7 कारक;

नोबल एटफोल्ड पाथ 3 समुच्चयों से जुड़ा है।

1 आधार और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से 1 समूह से संबद्ध,

1 आधार और 1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (5).

253. संपर्क; इच्छाशक्ति; ध्यान 3 समूहों से संबंधित है,

1 आधार और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से संबंधित

1 समुच्चय, जिसमें 1 आधार और 1 तत्व है।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (3).

254. भावना; बोध 3 समूहों से जुड़ा है, जिनके साथ

1 आधार और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से 1 आधार से संबद्ध और

1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (2).

255. चेतना 3 समूहों से जुड़ी है; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व से संबंधित।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

256. निर्णय 3 समुच्चयों, 1 आधार और इसके साथ जुड़ा हुआ है।

2 तत्व; आंशिक रूप से 1 समुच्चय से संबद्ध, 1 आधार के साथ और

1 तत्व के साथ।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समुच्चय से वियोजित होता है।

10 क्षारकों और 15 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

5. ट्रिपलेट्स

257. कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कितने आधारों के साथ

अच्छे और बुरे तत्वों में कितने तत्व होते हैं?

किसी से संबंधित नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

258. सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ; सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ

दर्दनाक अनुभूति के साथ 1 समूह से जुड़े होते हैं; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व से संबंधित।

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 15 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

259. ऐसी अवस्थाएँ जो न तो दर्दनाक और न ही दर्द से जुड़ी भावनाओं से संबंधित हैं।

सुखद 1 समूह से जुड़े हैं; आंशिक रूप से जुड़े हुए हैं

1 आधार और 1 तत्व के साथ।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 11 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

260. परिणामी अवस्थाएँ कितनी . . . से संबद्ध हैं?

कोई नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

261. कितने राज्यों के साथ परिणामी राज्य उत्पन्न हो रहे हैं?

क्या भ्रष्ट और भ्रष्टाचार फैलाने वाले राज्य किसी से जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

262. ऐसे कितने राज्य हैं जो न तो परिणामी हैं और न ही...?

न ही परिणामी अवस्थाओं का उत्पादन करना; ऐसी अवस्थाएँ जो प्राप्त नहीं होतीं

आसक्ति लेकिन आसक्ति से संबंधित अनुकूल? किसी के साथ नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

5 तत्वों (2) से अलग हो गया।

263. ऐसे कितने राज्य हैं जिनका अधिग्रहण नहीं किया गया है?

आसक्ति से प्रेरित और आसक्ति के अनुकूल नहीं; भ्रष्ट नहीं और नहीं

क्या भ्रष्ट राज्य इससे जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

6 तत्वों (2) से अलग हो गया।

264. व्यावहारिक चिंतन और निरंतर चिंतन वाले राज्य हैं

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 से संबद्ध

तत्व।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 15 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

265. व्यावहारिक चिंतन के बिना, लेकिन निरंतर चिंतन वाले राज्य;

परमानंद से युक्त अवस्थाएँ आंशिक रूप से 1 समुच्चय से जुड़ी होती हैं,

1 आधार और 1 तत्व के साथ।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

266. व्यावहारिक चिंतन के बिना कितने राज्य हैं?

और निरंतर चिंतन से संबंधित? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

1 तत्व (1) से अलग हो गया।

267. आनंद से युक्त अवस्थाएँ 1 समूह से जुड़ी होती हैं;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 15 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

268. उदासीनता से ग्रस्त अवस्थाएँ निम्नलिखित से संबंधित हैं:

1 समुच्चय; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 11 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

269. प्रथम पथ द्वारा कितने राज्यों का उन्मूलन किया गया है?

उच्चतर 3 पाठ द्वारा नष्ट किए गए राज्य; जड़ों सहित राज्य

प्रथम पथ द्वारा उन्मूलन; राज्यों को जड़ों सहित उन्मूलन द्वारा

उच्चतर 3 मार्ग; पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ; आगे बढ़ने वाली अवस्थाएँ

निर्वाण की ओर; शिक्षार्थियों से संबंधित अवस्थाएँ; संबंधित अवस्थाएँ

अरहत्ता से; उच्चतर राज्य किसी से संबंधित नहीं हैं?

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (9) से अलग हो गया।

270. कितने . . . अतुलनीय अवस्थाएँ हैं; उच्चतर

किन राज्यों का इससे संबंध है? किसी से नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

6 तत्वों (2) से अलग हो गया।

271. सीमित उद्देश्यों वाले राज्यों की संख्या कितनी है?

किसी से संबंधित नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

272. कितने राज्यों के उच्च उद्देश्य हैं?

अतुलनीय वस्तुओं के साथ; निम्न अवस्थाएँ; निश्चित भाग्य वाली अवस्थाएँ

गलत विचारों के कारण; सही विचारों के कारण निश्चित भाग्य वाले राज्य;

पथ ऑब्जेक्ट वाले स्टेट्स; पथ द्वारा निर्धारित स्टेट्स; स्टेट्स

क्या यह पथ किसी से संबंधित नहीं है?

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (8) से अलग हो गया।

273. राज्य कितने . . . से संबद्ध नहीं हैं?

किसी के साथ नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

5 तत्वों (1) से अलग किया गया।

274. भूतकाल की वस्तुओं वाले राज्यों की संख्या कितनी है?

क्या भविष्य में इससे संबंधित कोई वस्तु है? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

275. वर्तमान उद्देश्यों वाले राज्य कितने हैं?

आंतरिक वस्तुओं वाले राज्य; बाह्य वस्तुओं वाले राज्य; राज्य

क्या आंतरिक और बाह्य वस्तुएं संबद्ध हैं? कोई नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (4) से अलग हो गया।

276. कितने राज्यों के साथ... वे दृश्य और प्रभाव दोनों हैं;

अदृश्य अवस्थाएँ लेकिन संबद्ध 1 किसी के साथ नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 आधार और 7 तत्वों से बने 4 समुच्चय; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (2).

6. दोहे

277. वे अवस्थाएँ जो मूल हैं; वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और साथ ही

संबद्ध मूल हैं; वे राज्य जो मूल हैं और संबद्ध भी हैं

जड़ों के साथ 3 समूह जुड़े होते हैं, 1 आधार के साथ और

1 तत्व; आंशिक रूप से 1 समुच्चय से संबद्ध, 1 आधार के साथ और

1 तत्व के साथ।

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (3) से अलग हो गया।

278. ऐसे कितने राज्य हैं जिनके साथ संबद्धता है?

मूल; वे अवस्थाएँ जो मूलों से संबंधित हैं?

कोई नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

279. वे अवस्थाएँ जिनके सहबद्ध मूल हैं लेकिन वे स्वयं मूल नहीं हैं; अवस्थाएँ

जो जड़ों से संबंधित हैं लेकिन स्वयं जड़ नहीं हैं; वे राज्य जो

ये मूल नहीं हैं, लेकिन इनसे संबद्ध मूल आंशिक रूप से संबद्ध हैं।

1 समुच्चय के साथ, 1 आधार के साथ और 1 तत्व के साथ।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (3) से अलग हो गया।

280. कितने राज्यों का उद्भव 4 कारणों से नहीं हुआ है?

वे राज्य जो 4 कारणों से प्रभावित नहीं हैं; दृश्यता वाले राज्य; राज्य

प्रभाव डालने के साथ; वे अवस्थाएँ जिनमें भौतिक परिवर्तन होता है?

किसी के साथ नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (5) से अलग हो गया।

281. कितनी अवस्थाएँ अलौकिक हैं?

किसी से संबंधित नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

6 तत्वों (1) से अलग किया गया।

282. वे अवस्थाएँ जो कलंक हैं; वे अवस्थाएँ जो दोनों प्रकार से कलंक हैं

और दोष के कारक; वे अवस्थाएँ जो दोष भी हैं और उनसे संबंधित भी हैं

कैंकर के साथ 3 समूह जुड़े होते हैं, जिनमें 1 आधार होता है और

1 तत्व; आंशिक रूप से 1 समुच्चय से संबद्ध, 1 आधार के साथ और

1 तत्व के साथ।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (3) से अलग हो गया।

283. ऐसे कितने राज्य हैं जो वस्तु नहीं हैं?

कैंकर से संबंधित; वे अवस्थाएँ जो कैंकर से अलग हैं और नहीं हैं

कैंकर से संबंधित वस्तुएं? किसी से नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

6 तत्वों (2) से अलग हो गया।

284. वे राज्य कितने राज्यों से संबद्ध हैं?

क्या किसी से कोई घाव संबंधित है?

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

285. वे अवस्थाएँ जो कैंकर रोग से संबंधित हैं लेकिन स्वयं कैंकर रोग नहीं हैं

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और के साथ जुड़े हुए हैं

1 तत्व।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

286. वे राज्य जो बंधन हैं... वे राज्य जो बंधन हैं... राज्य

जो बाढ़ हैं... राज्य जो बंधन हैं... राज्य जो हैं

बाधाएँ* . . . ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो

दोनों ही गलतफहमियां और गलतफहमियों के विषय हैं।

3 समुच्चयों, 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध;

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (37) से अलग हो गया।

287. कितने राज्यों के साथ... वे राज्य हैं जो इसके विषय नहीं हैं

गलतफहमियां; वे राज्य जो गलतफहमियों से मुक्त हैं

और क्या ये गलतफहमियों से जुड़े विषय नहीं हैं?

कोई नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

6 तत्वों (2) से अलग हो गया।

288. वे राज्य जो गलतफहमियों से जुड़े हैं, वे हैं

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

289. ऐसे कितने राज्य हैं जिनके उद्देश्य हैं?

किसी से संबंधित नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

290. ऐसे कितने राज्य हैं जिनके कोई उद्देश्य नहीं हैं?

वे अवस्थाएँ जो चेतना से विरक्त हैं; वे अवस्थाएँ जो

चेतना से जुड़ा हुआ नहीं; व्युत्पन्न अवस्थाएँ

किसी से संबंधित नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (4) से अलग हो गया।

291. चेतना की अवस्थाएँ 3 समूहों से जुड़ी होती हैं;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

292. वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं; वे अवस्थाएँ जो संबद्ध हैं

चेतना के साथ; चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और उनसे उत्पन्न भी होती हैं

चेतना; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं, इससे उत्पन्न होती हैं

और चेतना के साथ उत्पन्न होते हैं; वे अवस्थाएँ जो संयुक्त हैं

चेतना के साथ, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होते हैं।

1 समुच्चय, 1 आधार और 7 तत्वों से संबंधित।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (6) से अलग हो गया।

293. ऐसे कितने राज्य हैं जिनका अधिग्रहण नहीं किया गया है?

किसी से भी जुड़ाव नहीं है?

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

5 तत्वों (1) से अलग किया गया।

294. आसक्ति से ग्रस्त अवस्थाएँ... भ्रष्ट अवस्थाएँ;

ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी;

ऐसे राज्य जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचार से ग्रसित दोनों हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार से जुड़े दोनों ही आपस में जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चयों के साथ, 1 आधार के साथ और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से

1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व से संबंधित।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (11) से अलग हो गया।

295. कितने राज्यों के साथ... वे राज्य हैं जो इसके विषय नहीं हैं

भ्रष्टाचार; वे राज्य जो भ्रष्टाचार से मुक्त हैं और

क्या ये भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं हैं? किसी से भी नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

6 तत्वों (2) से अलग हो गया।

296. कितने राज्यों में भ्रष्टाचार व्याप्त है?

जो भ्रष्टाचार से जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व से पृथक (2)

297. वे राज्य जो भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्टाचार नहीं हैं;

जो भ्रष्टाचार से जुड़े हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

298. प्रथम द्वारा कितने राज्यों का उन्मूलन किया गया है?

पथ; उच्चतर 3 पथों द्वारा समाप्त किए गए राज्य; राज्य एक साथ

प्रथम पथ द्वारा जड़ से उखाड़े गए; जड़ों सहित राज्य

उच्चतर 3 पथों द्वारा उन्मूलन किया गया? किसी से संबंधित नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (4) से अलग हो गया।

299. व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य; निरंतर चिंतन वाले राज्य

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और के साथ जुड़े हुए हैं

1 तत्व।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 15 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

300. व्यावहारिक चिंतन से रहित कितने राज्य हैं?

क्या ऐसी अवस्थाएँ हैं जिनमें निरंतर चिंतन का कोई संबंध नहीं है? किसी से भी नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

1 तत्व (2) से अलग हो गया।

301. परमानंद की अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो इसके साथ होती हैं

परमानंद आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और के साथ जुड़ा हुआ है

1 तत्व के साथ।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

302. आनंद से युक्त अवस्थाएँ संबंधित हैं

1 समुच्चय के साथ; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 के साथ संबद्ध

तत्व।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 15 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

303. उदासीनता से युक्त अवस्थाएँ संबद्ध होती हैं

1 समुच्चय के साथ; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 के साथ संबद्ध

तत्व।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 11 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

304. ऐसे कितने राज्य हैं जो इनमें से किसी से संबंधित नहीं हैं?

इंद्रिय-संबंधी तल; वे अवस्थाएँ जो चक्र में शामिल नहीं हैं

अस्तित्व; ऐसी अवस्थाएँ जो परे से संबद्ध नहीं हैं?

कोई नहीं।

वे कितनों से वियोगित हैं? वे वियोगित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

6 तत्वों (3) से अलग हो गया।

305. कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कितने आधारों के साथ

सूक्ष्म पदार्थ से संबंधित अवस्थाओं में कितने तत्व होते हैं?

समतल; वे अवस्थाएँ जो अमूर्त समतल से संबंधित हैं; वे अवस्थाएँ जो

अस्तित्व के चक्र से बाहर निकलें; वे अवस्थाएँ जो निश्चित हैं

मृत्यु के बाद या स्वयं घटित होने के बाद नियति ने त्याग दिया; राज्य

शोक के कौन-से कारण जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (5) से अलग हो गया।

स्मृति सहायक

बोधगम्य आधार, बोधगम्य तत्व, पीड़ादायक सत्य, जीवन शक्ति,

छह आधार, मानसिकता-भौतिकता, चार महान विकास,

जन्म, बुढ़ापा, मृत्यु, उन्नीस तिगुने बच्चे।

पचास समूह, आठ छोटे मध्यवर्ती दोहे।

पंद्रह बड़े मध्यवर्ती दोहे, और फिर अठारह अंतिम दोहे

दोहे।

इन 123 राज्यों को यहां शामिल नहीं किया गया है।

अध्याय VI की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: वे अवस्थाएँ जो (1) संबद्ध हैं, (2) पृथक हैं और

(3) संबद्ध और पृथक दोनों।

(1) सहभागिता: चारों मानसिक समूह परस्पर सहभागी हैं

(1 के साथ 3 ; 3 के साथ 1 ; 2 के साथ 2) क्योंकि (1) वे एक साथ उत्पन्न होते हैं,

(2) एक साथ समाप्त हो जाएं, (3) एक ही उद्देश्य हो और (4) एक ही आधार हो।

ये साहचर्य की चार विशेषताएं हैं।

(2) वियोजन: अवस्थाओं को वियोजनित तब कहा जाता है जब वे

सहभागिता की 4 विशेषताओं का अनुपालन नहीं करते हैं।

(क) हमेशा अलग-थलग: (1) भौतिकता और 4 मानसिक

समुच्चय, (2) निर्वाण और 4 मानसिक समुच्चय हमेशा

पृथक।

(1) मन द्वारा उत्पन्न भौतिकता जो प्रथम जीवन निरंतरता से

पुनर्जन्म-चेतना के बाद से लेकर मृत्यु-चेतना तक,

चार अमूर्त परिणामी चेतनाओं के अपवाद के रूप में,

2 x 5 इंद्रिय चेतना और अंतिम मृत्यु-चेतना

अरहत प्रत्येक चेतना के साथ ही उत्पन्न होता है। भौतिकता

कर्म से उत्पन्न कर्म भी मानसिक कर्म के साथ-साथ उत्पन्न होता है।

गर्भाधान के समय ये समूह बनते हैं। ये 17 विचारों तक बने रहते हैं।

क्षण या 51 चरण और फिर किसी के साथ एक साथ समाप्त हो जाते हैं

एक प्रकार की चेतना। मन द्वारा उत्पन्न दो संकेत भी।

चेतना के साथ ही उत्पन्न और समाप्त होते हैं। क्योंकि 4 मानसिक

जैसा कि ऊपर दिखाया गया है, समुच्चय और भौतिकता एक साथ उत्पन्न होते हैं और एक साथ समाप्त होते हैं।

यह संदिग्ध है कि वे जुड़े हुए हैं या अलग-अलग हैं।

इस विषय पर सभी शंकाओं को दूर करने के लिए, बुद्ध ने यहाँ इसका विस्तार से वर्णन किया है।

और साथ ही पट्टाना की वियोजन अवस्था में भी।

बाद में संदर्भ यह है कि "भौतिकता मानसिकता से इस प्रकार संबंधित है"

वियोग की स्थिति। मानसिकता भौतिकता से इस प्रकार संबंधित है:

पृथक्करण की स्थिति

(2) निर्वाण को मानसिक अवस्था कहा जाता है क्योंकि यह व्यक्तिपरक चेतना है।

और मानसिक कारक इसे समझते हैं और इसकी ओर झुकाव रखते हैं।

वस्तु। चेतना और मानसिक कारक भी मानसिकता हैं। चूंकि

निर्वाण और चेतना, मानसिक कारकों के साथ मिलकर, दोनों ही

मानसिकता के लिहाज से, ऐसा प्रतीत होता है कि वे जुड़े हुए हैं। लेकिन बुद्ध

यहां यह स्पष्ट किया गया है कि वे असंबद्ध हैं, संबद्ध नहीं।

(ख) कभी-कभी वियोगित: 4 मानसिक समूहों के संबंध में,

यदि भावना और अन्य 3, धारणा और अन्य 3, मानसिक

गठन और अन्य 3, चेतना और अन्य 3 अनुपालन करते हैं

सहभागिता की 4 विशेषताओं के आधार पर, वे आपस में जुड़े हुए हैं।

अन्यथा वे अलग हो जाते हैं।

(ग) न तो संबद्ध और न ही पृथक: (1) भौतिकता और

निर्वाण, (2) भौतिकता और भौतिकता, (3) भावना और भावना,

(4) बोध और धारणा, (5) मानसिक गठन और मानसिक

गठन, (6) चेतना और चेतना, (7) संपर्क और

संपर्क, (8) इच्छाशक्ति और इच्छाशक्ति, आदि। ये जोड़े कभी अनुपालन नहीं करते।

सहभागिता की 4 विशेषताओं के साथ। इसलिए वे न तो हैं और न ही

न तो जुड़ा हुआ है और न ही अलग है। ठीक वैसे ही जैसे यह नहीं कहा जा सकता कि कोई व्यक्ति है

स्वयं के समान या भिन्न होना, लेकिन केवल इतना ही कि कोई दूसरे के समान या भिन्न है।

इसलिए यह भी नहीं कहा जा सकता कि पृथ्वी किसी चीज से जुड़ी हुई है या उससे अलग है।

पृथ्वी से संबंधित या भावना से असंबंधित है।

इसलिए, वे न तो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और न ही अलग-अलग हैं।

अपवाद: जब यह कहा जाता है कि मानसिक गठन और मानसिक

गठन न तो संबद्ध हैं और न ही पृथक, इसका अर्थ है कि साथ

मानसिक निर्माण की 50 अवस्थाएँ, समूह, संपर्क और संपर्क,

इच्छाशक्ति और इच्छाशक्ति इत्यादि न तो संबद्ध हैं और न ही असंबद्ध।

लेकिन संपर्क और इच्छाशक्ति, संपर्क और ज्ञान और इस तरह के जोड़े

मानसिक निर्माण की विभिन्न अवस्थाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं।

इसी प्रकार, जब यह कहा जाता है कि चेतना और चेतना हैं

न तो संबद्ध और न ही पृथक, यही अर्थ है

समान जोड़ों के लिए नेत्र-चेतना और नेत्र-चेतना इत्यादि। लेकिन

नेत्र-चेतना और शेष 6 चेतनाएँ अलग-अलग हैं।

(घ) चार प्रकार के वियोजन:

(1) तलों द्वारा वियोजन: यह निम्नलिखित के बीच का अंतर है:

संवेदी, सूक्ष्म भौतिक, अभौतिक और अलौकिक तल।

(2) वर्गों द्वारा पृथक्करण: यह संपूर्ण और कुछ के बीच का अंतर है,

अस्वस्थ, परिणामी, निष्क्रिय, मूल-निर्धारित और

गैर-मूल-आधारित चेतना के वर्ग।

स्वस्थ और अस्वस्थ चेतना वर्ग में भिन्न होती है, और

इसलिए, उन्हें वर्गों द्वारा अलग किया हुआ कहा जाता है।

(3) समय के अनुसार वियोजन: यह इनके बीच का अंतर है

अतीत, भविष्य, वर्तमान। हालाँकि स्वस्थ चेतना

अतीत, भविष्य और वर्तमान एक समान हैं।

समय में भिन्नता होती है और इसलिए इन्हें पृथक कहा जाता है।

बार।

(4) निरंतरता द्वारा पृथक्करण (संतना); यही अंतर है

जो एक आत्मा में और दूसरी आत्मा में या आंतरिक रूप से उत्पन्न होता है, उसके बीच

बाह्य रूप से। यद्यपि जो स्वस्थ चेतना उत्पन्न होती है

स्वयं और दूसरे में एकरूपता है, उनमें निरंतरता का अंतर है।

और इसलिए, उन्हें निरंतरता द्वारा विच्छेदित कहा जाता है।

नोट: नेत्र चेतना तत्व का पृथक्करण

शेष 6 चेतना तत्व वियोजन के अंतर्गत आते हैं।

समय-समय पर।

जांच के दायरे में आने वाले राज्य: कुल 250 राज्य, जिनमें से 92 राज्य निम्नलिखित राज्यों के हैं:

आंतरिक और बाह्य जांच की 158 अवस्थाएँ विषय का निर्माण करती हैं।

इस अध्याय का विषय।

चार्ट

'इसमें 4 मुख्य कॉलम हैं, जिनमें से 2 एसोसिएशन के लिए हैं, यानी संबद्ध (कुल)'

और आंशिक रूप से संबद्ध तथा 2 पृथक्करण के लिए, अर्थात् पृथक

(पूर्ण) और आंशिक रूप से विघटित।

आंशिक सहसंबंध के संदर्भ में, जब भौतिकता विषय हो

जांच के संदर्भ में, इस कॉलम में कुछ भी डालने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इस मामले में

मानसिक स्थिति के संदर्भ में, इससे जुड़े सभी मानसिक कारकों को इसमें दर्शाया गया है।

स्तंभ।

आंशिक पृथक्करण के संबंध में, जब भौतिकता

जांच का विषय, विच्छेदित 52 मानसिक कारक हैं

इस कॉलम में इंगित किया गया है, लेकिन मानसिकता के मामले में, 16 सूक्ष्म

यहां भौतिक अवस्थाओं और निर्वाण, जो वियोजित हैं, का संकेत दिया गया है।

इस कॉलम में।

प्रश्न और उत्तर का प्रारूप

यह अध्याय I के समान है। यहाँ सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।

समुच्चय, आधार और तत्वों की संख्या के बारे में जो हैं

जांच की प्रत्येक अवस्था से संबद्ध और पृथक।

(1) सहभागिता: जब भौतिकता या निर्वाण की बात हो

जहां कोई संबद्ध अवस्थाएं नहीं हैं और उत्तर हमेशा यही होता है

“बिना किसी के”। जब भी यही उत्तर होता है, तो कोई आंशिक उत्तर नहीं होता।

संगठन।

पृथक्करण: लेकिन भौतिकता को मानसिकता से अलग किया जाता है क्योंकि

ऊपर बताए गए अनुसार उत्तर है “4 (मानसिक) समूहों से,

1 (मन) आधार और 7 (चेतना) तत्वों से। यह प्राप्त होता है।

चार मानसिक समूहों को समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत करके,

क्षार और तत्व। यह पूर्ण वियोजन है।

आंशिक वियोग: जब मानसिक स्थिति का केवल एक हिस्सा ही सक्रिय होता है।

संज्ञेय आधार और संज्ञेय तत्व के अंतर्गत विखंडित होते हैं।

इसे “आंशिक वियोजन” के नाम से जाना जाता है। इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

उदाहरण से। सबसे पहले यह याद रखना चाहिए कि

16 सूक्ष्म शारीरिक अवस्थाएँ, 52 मानसिक कारक और निर्वाण हैं।

संज्ञेय आधार के अंतर्गत आने वाले राज्यों की कुल संख्या और इसके अंतर्गत आने वाले राज्यों की कुल संख्या

बोधगम्य तत्व। अब यह सिद्ध हो चुका है कि भौतिकता और

भौतिकता, भौतिकता और निर्वाण न तो आपस में जुड़े हुए हैं और न ही

पृथक हो गया। अतः, पदार्थ के समुच्चय (भौतिकता) के संबंध में

16 सूक्ष्म भौतिक तत्वों से जुड़ाव या अलगाव

बोधगम्य आधार और बोधगम्य की अवस्थाएँ (भौतिकता) और निर्वाण

इस तत्व पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है। इससे केवल 52 मानसिक तत्व ही शेष रह जाते हैं।

विचारणीय आधार और विचारणीय तत्व के कारक।

अब पदार्थ समूह को 52 मानसिक कारकों से अलग किया गया है।

क्योंकि वे मानसिकता हैं। लेकिन चूंकि बाद वाला केवल एक हिस्सा बनता है

बोधगम्य आधार और बोधगम्य तत्व, पदार्थ समुच्चय है

बोधगम्य आधार और बोधगम्य तत्व के एक भाग से पृथक।

अतः यहाँ उत्तर है “1 (संज्ञानात्मक) से आंशिक रूप से पृथक”

आधार और 1 (पहचानने योग्य) तत्व से"।

(2) भावना, बोध या मानसिक संरचना के साथ, जिनमें से प्रत्येक

उनकी मानसिकता परस्पर जुड़ी हुई है, यानी प्रत्येक एक दूसरे से संबंधित है।

शेष 3 (मानसिक) समूह, 1 (मन) आधार के साथ और

7 (चेतना) तत्व। इसके अलावा, चूंकि उनमें से प्रत्येक भी है

52 मानसिक कारकों (मानसिकता) से जुड़ा हुआ जो इसका हिस्सा हैं

संज्ञेय आधार और संज्ञेय तत्व के वे आंशिक रूप से हैं

1 (पहचानने योग्य) आधार और 1 (पहचानने योग्य) तत्व से संबद्ध।

हालांकि, जब भावनाओं की बात आती है, तो चूंकि भावनाएं जुड़ी नहीं होती हैं

भावना के साथ, इसे 52 मानसिक कारकों से बाहर रखा गया है और केवल

51 मानसिक कारक आंशिक रूप से संबंधित हैं। इसी प्रकार धारणा के साथ भी।

52 मानसिक कारकों से प्राप्त धारणा को इसमें शामिल नहीं किया गया है।

वियोग: मानसिकता और भौतिकता अलग हो जाती हैं। अतः

भावना, धारणा या मानसिक संरचना 1 (पदार्थ) से अलग है।

दस (स्थूल) आधारों और दस (स्थूल) तत्वों से बना कुल योग।

इनमें से प्रत्येक 16 सूक्ष्म भौतिक अवस्थाओं से भी पृथक है।

और निर्वाण जो बोधगम्य आधार और बोधगम्य का हिस्सा हैं

यह तत्व है और इसलिए 1 (पहचानने योग्य) से आंशिक रूप से अलग है।

आधार और 1 (पहचानने योग्य) तत्व से।

(3) सहभागिता: चेतना समूह के साथ, यह सहभागिता है

शेष 3 मानसिक समूहों के साथ। यह इससे संबद्ध नहीं है।

मन का आधार और चेतना के 7 तत्व, क्योंकि ये आते हैं

चेतना के अंतर्गत चेतना का संबंध चेतना से नहीं है।

लेकिन यह उन्हीं तीन मानसिक कारकों से भी जुड़ा हुआ है।

कारक समूह, अर्थात् 52 मानसिक कारक, बोधगम्य के अंतर्गत

आधार और बोधगम्य तत्व के अंतर्गत। इस प्रकार यह आंशिक रूप से संबद्ध है।

1 (पहचानने योग्य) आधार और 1 (पहचानने योग्य) तत्व के साथ।

वियोग: यह भावना समूह के समान ही वियोगित है क्योंकि

दोनों ही मानसिकता हैं।

(4) साहचर्य: नेत्र-चेतना के साथ, जो एक प्रकार का है

चेतना, इसे भी चेतना के समग्र रूप में ही समझा जाता है।

लेकिन यह केवल 7 प्राथमिक मानसिक कारकों से जुड़ा है और

इसलिए आंशिक रूप से बोधगम्य आधार से जुड़ा हुआ है और

संज्ञेय तत्व।

पृथक्करण: चूंकि यह मानसिकता है, इसलिए यह 1 (पदार्थ) से पृथक है।

कुल योग और 10 (स्थूल) आधारों से। जहाँ तक वियोजन का संबंध है

तत्व, क्योंकि नेत्र-चेतना न तो जुड़ी हुई है

न ही नेत्र-चेतना से अलग होकर, इसे इससे बाहर रखा गया है

वियोग में चेतना के 7 तत्व। यह इससे भी वियोगित है।

बोधगम्य तत्व, क्योंकि बाद वाला आंशिक पृथक्करण के अंतर्गत आता है।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जब भी मानसिकता जांच का विषय हो।

इसमें 16 सूक्ष्म शारीरिक अवस्थाएँ और निर्वाण हमेशा शामिल होते हैं।

आंशिक रूप से विघटित अवस्थाएँ।

(5) साहचर्य: मूल सत्य मानसिक संरचना का एक हिस्सा है

कुल योग और इसलिए, यह शेष 3 से जुड़ा हुआ है।

(मानसिक) समूह, जिसमें 1 (मन) आधार और 1 (मन-चेतना) होती है।

तत्व और साथ ही मानसिक अवस्था की शेष 21 अवस्थाओं के साथ

गठन समुच्चय। बाद वाले मामले में यह आंशिक रूप से जुड़ा हुआ है।

मानसिक गठन समूह के साथ।

वियोग: मूल सत्य मन-चेतना से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, इस तत्व को चेतना के 7वें भाग से बाहर रखा जाना चाहिए।

वियोजन में तत्व। यह बोधगम्य से भी वियोगित है।

तत्व, क्योंकि बाद वाला आंशिक वियोजन के अंतर्गत आता है। शेष

यह चार्ट से स्पष्ट है।

(6) शारीरिक सुख की अनुभूति एक संवेदना है और इसलिए इससे जुड़ी हुई है।

समुच्चय और आधारों के साथ उसी तरह जैसे भावना समुच्चय के साथ होता है।

लेकिन चूंकि यह शरीर की चेतना के साथ जुड़ा एक सुखद अहसास है,

यह केवल 1 (शारीरिक चेतना) तत्व से जुड़ा है।

आंशिक संबंध, यह 6 प्राथमिक मानसिक प्रक्रियाओं से जुड़ा हुआ है।

कारक, बहिष्कृत महसूस करना। वियोग में, शरीर-चेतना।

तत्व को अन्य तत्वों से बाहर रखा गया है। बाकी सब स्पष्ट है।

चार्ट।

(7) संबंध: उदासीनता क्षमता 55 प्रकारों से संबंधित है

उदासीनता की भावना के साथ चेतना का, न कि उसके साथ

इसलिए, शरीर की चेतना को बाहर रखा गया है। इसके अलावा, चूंकि

यह 46 मानसिक कारकों से जुड़ा है (अर्थात, भावना, परमानंद आदि को छोड़कर)।

घृणा, ईर्ष्या, कंजूसी और चिंता (ये 52 मानसिक कारकों में से हैं)

आंशिक रूप से संबद्ध।

वियोग: यहाँ शरीर की चेतना, जो संबद्ध नहीं है,

इसमें शामिल है। बाकी बातें चार्ट से स्पष्ट हैं।

(8) 6 आधारों द्वारा नियंत्रित। संपर्क मानसिक का एक हिस्सा है।

गठन समूह जो 89 प्रकारों से जुड़ा है

चेतना। इस प्रकार यह मानसिक संरचना समूह से संबंधित है।

आंशिक जुड़ाव में। अलगाव मानसिक अलगाव के समान है।

समुच्चय।

(9) उत्तम-भौतिक विकास में मानसिकता और दोनों शामिल हैं

भौतिकता और इसलिए कोई संबंध नहीं है। साथ ही कोई संबंध भी नहीं है।

समुच्चयों और क्षारों से वियोजन। लेकिन चूंकि नाक

चेतना, जीभ की चेतना और शरीर की चेतना हैं

इस विकास में, संबंधित भौतिकता और मानसिकता अनुपस्थित हैं।

इसके साथ ही वे चेतना के इन 3 तत्वों से अलग हो जाते हैं।

(10) अमूर्त विकास में 4 मानसिक समूह शामिल हैं

और इसलिए, कोई संबंध नहीं है। लेकिन यह इससे अलग है।

पदार्थ का समूह और स्थूल आधार। और चूंकि यह हो रहा है

मन-चेतना और बोधगम्य तत्वों के अंतर्गत आने वाली ये चीजें हैं:

तत्वों से पृथक्करण में अपवर्जित। आंशिक पृथक्करण

यह चार्ट से स्पष्ट है।

(11) एसोसिएशन: मानसिक शक्ति का मार्ग मानसिक गतिविधियों से मिलकर बनता है।

निर्माण और चेतना का समूह है, और इसलिए यह इससे जुड़ा हुआ है।

शेष मानसिक समूहों, अर्थात् भावना और धारणा के साथ

समूह। चूंकि इसमें चेतना शामिल है, इसलिए यह नहीं है।

आधार और तत्व से जुड़ा हुआ। और इरादे के कारण,

ऊर्जा और बुद्धि जैसे मानसिक कारक इसके घटक हैं।

इन्हें बाहर रखा गया है और इसलिए, यह शेष के साथ जुड़ा हुआ है।

आंशिक सहसंबंध में 33 मानसिक कारक।

पृथक्करण: चूंकि यह मानसिकता है, इसलिए यह भौतिकता से पृथक है।

और, मन-चेतना और बोधगम्य तत्वों को छोड़कर,

शेष 16 तत्व। यह 16 सूक्ष्म तत्वों से भी अलग है।

आंशिक वियोजन में भौतिक अवस्थाएँ और निर्वाण।

(12) ध्यान के साथ, 5 कारक भावना और मानसिक के अंतर्गत आते हैं

गठन समूह है और इसलिए, यह धारणा से जुड़ा हुआ है।

और चेतना, मन के आधार और मन-चेतना के साथ एकत्रित होती है।

तत्व। आंशिक जुड़ाव में यह इसके साथ भी जुड़ा हुआ है।

मानसिक-गठन का समग्र रूप और, 5 झानिक कारकों को छोड़कर,

शेष 33 मानसिक कारकों के साथ। आंशिक वियोग के लिए

यह चार्ट से स्पष्ट है।

(13) निर्णय, जो मानसिक गठन समूह के अंतर्गत आता है,

यह संदेह को छोड़कर 78 प्रकार की चेतना से संबंधित है।

चेतना और 2 x 5 इंद्रिय-चेतना। इसलिए यह है

शेष 3 मानसिक समूहों से जुड़ा हुआ, मन के आधार के साथ

और मन-तत्व और मन-चेतना तत्व के साथ, लेकिन नहीं

पांच इंद्रिय-चेतना तत्वों के साथ। और, चूंकि यह इसका एक हिस्सा है

मानसिक गठन समूह, आंशिक जुड़ाव में यह जुड़ा हुआ है

उस कुल योग के साथ और संदेह को छोड़कर 50 मानसिक कारकों के साथ

जिससे यह संबद्ध नहीं है। यह 15 से अलग है।

तत्व, अर्थात् 10 स्थूल तत्व और 5 इंद्रिय-चेतना

तत्व।

(14) संबंध: सुखद भावनाओं से जुड़े राज्यों में शामिल हैं

भावना समूह को छोड़कर शेष 3 मानसिक समूह

और इसलिए, वे भावना समूह से जुड़े होते हैं। चूंकि चेतना

यदि उन्हें शामिल किया जाता है, तो वे निश्चित रूप से इससे जुड़े नहीं हैं।

आधार और तत्व के साथ। आंशिक सहभागिता में, यह जुड़ा होता है।

63 प्रकार की सुखद भावनाओं के साथ।

वियोजन; वियोजनित तत्व वे हैं जो नहीं हैं

जांचधीन मानसिकता से संबंधित। यह किया जाएगा

स्पष्ट। सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाओं में निम्नलिखित 3 तत्व शामिल हैं:

शरीर चेतना, मन चेतना और बोधगम्य तत्व।

लेकिन संज्ञेय तत्व से केवल आंशिक अलगाव ही होता है, और

अतः, शरीर चेतना और मन चेतना को छोड़कर

जब तत्व अलग हो जाते हैं, तो वे शेष तत्वों से अलग हो जाते हैं।

(15) ऐसी अवस्थाओं के साथ जो न तो दर्दनाक और न ही

सुखद, ध्यान देने वाली एकमात्र बात यह है कि वे आंशिक रूप से

55 प्रकार की उदासीनता भावनाओं से संबंधित। जैसा कि इसमें कहा गया है

ऊपर बताए गए उदासीनता संकाय के मामले में, ये अवस्थाएँ अलग हो जाती हैं

शरीर की चेतना, लेकिन शेष 6 चेतनाओं से नहीं।

वे तत्व जिनसे वे जुड़े हुए हैं।

(16) परिणामी अवस्थाओं में 4 मानसिक समुच्चय शामिल होते हैं और,

इसलिए कोई संबंध नहीं है। वे केवल इससे अलग हैं।

भौतिकता।

(17) एसोसिएशन: ऐसी अवस्थाएँ जो न तो परिणामी हैं और न ही उत्पादक।

परिणामी अवस्थाओं में चारों मानसिक समूह और दोनों शामिल होते हैं।

भौतिकता का अभाव है, और इसलिए कोई संबंध नहीं है।

वियोजन: क्योंकि इन अवस्थाओं में भौतिकता समाहित है, इसलिए

कुल योग और आधार से कोई पृथक्करण नहीं होता है। लेकिन इसके साथ

तत्व से वियोजन के संबंध में, क्योंकि ये अवस्थाएँ

निष्क्रिय चेतना और भौतिकता से युक्त, वे हैं

केवल पांच इंद्रिय चेतना तत्वों से विरक्त। फिर से,

क्योंकि भौतिकता शामिल है, इसलिए आंशिक पृथक्करण संभव नहीं है।

(18) वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं और अनुकूल नहीं होतीं

आसक्ति में चारों मानसिक समुच्चय और निर्वाण दोनों शामिल हैं।

और इसलिए, जैसा कि ऊपर बताया गया है, कोई संबंध नहीं है और न ही कोई

कुल योग और आधार से पृथक्करण। लेकिन इसके संबंध में

तत्व से वियोजन के कारण, क्योंकि ये अवस्थाएँ इसके अंतर्गत आती हैं।

विच्छेदन में मन-चेतना तत्व को बाहर रखा जाता है।

और वे शेष 6 चेतनाओं से अलग हो जाते हैं।

तत्व। और चूंकि निर्वाण शामिल है, इसलिए कोई आंशिक नहीं है।

पृथक्करण।

(19) संघ: व्यावहारिक विचार और निरंतर प्रगति वाले राज्य

विचार में चेतना के 55 प्रकार शामिल हैं जो इससे जुड़े हैं।

इन दो विचारों को छोड़कर, 50 मानसिक कारकों को भी शामिल किया जा सकता है।

ये चार मानसिक समूहों से संबंधित हैं, और इसलिए, यहाँ हो सकता है

कोई संबंध न हो। लेकिन व्यावहारिक विचार और निरंतरता के कारण

विचार, जो मानसिक निर्माण समूह का हिस्सा हैं, वे नहीं हैं

इन राज्यों में शामिल होने पर, बाद वाला उनसे जुड़ा होता है। इस प्रकार

मानसिक गठन समूह के साथ आंशिक संबंध है और

व्यावहारिक चिंतन और निरंतर चिंतन के साथ।

वियोग: चेतना के पाँचों तत्व अलग नहीं हैं

व्यावहारिक चिंतन और निरंतर चिंतन से संबंधित,

इसलिए, उन्हें वियोग में शामिल किया गया है। इसमें कोई अंतर नहीं है।

आंशिक वियोजन के संबंध में उपरोक्त बातें लागू होती हैं।

(20) व्यावहारिक विचार के बिना लेकिन निरंतर राज्यों के साथ

हालांकि बाद वाले को बाहर रखा गया है और इसलिए, जैसा कि ऊपर बताया गया है, वहाँ

यह मानसिक गठन समूह और इसके साथ आंशिक संबंध है

निरंतर विचार। विच्छेदन के संबंध में एकमात्र अंतर।

क्या यह मन-चेतना का वह तत्व है जो इनसे जुड़ा हुआ है?

राज्यों को इसमें शामिल नहीं किया गया है।

(21) व्यावहारिक और निरंतर चिंतन से रहित राज्य

चार मानसिक समुच्चयों, भौतिकता और निर्वाण में से, और इसलिए,

कोई संबंध नहीं है। साथ ही, इससे कोई अलगाव भी नहीं है।

कुल योग और आधार से, लेकिन केवल मन तत्व से जो है

इन अवस्थाओं से संबद्ध नहीं है। आंशिक पृथक्करण संभव नहीं है।

(22) वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं, उनमें 3 मानसिक कारक शामिल हैं

ये समूह हैं और इसलिए चेतना से जुड़े हुए हैं।

मन के आधार और चेतना के 7 तत्वों के साथ समग्र रूप से। चूंकि

सभी 52 मानसिक कारकों को शामिल किया गया है, कोई आंशिक संबंध नहीं है।

भौतिकता के समुच्चय, आधार और तत्व हैं

वियोग में शामिल। जैसा कि चार्ट में दिखाया गया है, 16 सूक्ष्म

आंशिक वियोजन में भौतिक अवस्थाएं और निर्वाण शामिल हैं।

नोट: ऊपर बताई गई विधि को सभी पर लागू किया जा सकता है।

इस अध्याय के शेष जांच विषय।

चार्ट को कैसे पढ़ें: भौतिक समुच्चय और भावना समुच्चय

ये उदाहरण के तौर पर लिए गए हैं।

(1) पदार्थ समूह; कितने समूहों के साथ, कितने

पदार्थ का समूह किन आधारों से और कितने तत्वों से जुड़ा होता है?

किसी के साथ नहीं।

यह कितने समूहों से वियोजित होता है? यह 4 समूहों से वियोजित होता है।

(भावना, बोध, मानसिक संरचना और चेतना)

1 आधार (मन का आधार) से और 7 तत्वों से मिलकर बना है (समूहों सहित)।

(चेतना के 7 तत्व); 1 आधार से आंशिक रूप से पृथक (52 मानसिक)

कारक) और 1 तत्व (52 मानसिक कारक) से।

(2) भावना समूह: कितने समूहों के साथ, कैसे

कई आधार और कितने तत्वों के साथ भावना का समग्र रूप बनता है

संबंधित? यह 3 समूहों (धारणा, मानसिक) से संबंधित है।

गठन और चेतना समूह) 1 आधार (मन आधार) के साथ

और 7 तत्वों के साथ (चेतना के 7 तत्व)।

यह कितने से वियोजित होता है? यह 1 समूह से वियोजित होता है।

(पदार्थ समुच्चय), 10 आधारों से (10 स्थूल आधारों से) और से

10 तत्व (10 स्थूल तत्व); 1 आधार से आंशिक रूप से वियोजित

(16 सूक्ष्म भौतिक अवस्थाएँ और निर्वाण) और 1 तत्व से (16

सूक्ष्म शारीरिक अवस्थाएँ और निर्वाण)।

उत्तरों के प्रकार: कुल 22 प्रकार के उत्तर हैं। चूंकि सभी

इस अध्याय में वर्णित 250 जांच के चरण शामिल नहीं किए जा सकते।

चार्ट में केवल उन्हीं विकल्पों को दिखाया गया है जिनका उत्तर भिन्न है।

जिन राज्यों में जांच के एक ही उत्तर आए हैं, उनकी संख्या इस प्रकार है:

प्रश्नों के साथ कोष्ठकों में दी गई जानकारी।

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 228 (1), 231 (10), 233 (10), 236 (8), 247 (3), 276 (2), 280 (5), 290 (4)	43
2. 229 (3), 243 (1), 254 (2)	6
3. 230 (1), 232 (1), 237 (1), 241 (1), 255 (1), 291 (1)	6
4. 234 (7)	7
5. 235 (2), 240 (10), 244 (3), 249 (3), 252 (5), 277 (3), 282 (3) 286 (17), 294 (7)	53
6. 238 (4), 248 (3)	7
7. 239 (1)	1
8. 242 (1), 253 (3)	4
9. 245 (1)	1
10. 246 (3), 257 (2), 261 (2), 269 (9), 272 (8), 274 (2), 278 (2) 284 (1), 286 (5), 294 (1), 296 (2), 298 (4), 305 (5)	46
11. 250 (1)	1
12. 251 (1)	1
13. 256 (1)	1
14. 258 (2), 267 (1), 302 (1)	4
15. 259 (1), 268 (1), 303 (1)	3
16. 260 (1), 271 (1), 275 (4), 289 (1)	7
17. 262 (2), 272 (1), 293 (1)	4
18. 263 (2), 270 (2), 281 (1), 283 (2), 286 (10), 287 (2), 295 (2) 296 (2), 304 (3)	26
19. 264 (1), 299 (2)	3
20. 265 (2), 279 (3), 285 (1), 286 (5), 288 (1), 294 (1), 297 (2) 301 (2)	17
21. 266 (1), 310 (2)	3
22. 292 (6)	6

	कुल 250

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 7: संबद्ध और पृथक

11 प्रश्न और उत्तर

306. भावना समूह इन अवस्थाओं से जुड़ा है; बोध

समूह; मानसिक संरचना समूह; चेतना

कुल योग; मन का आधार इन अवस्थाओं से जुड़ा है। वे अवस्थाएँ

इन अवस्थाओं से विरक्त हैं।

कितने समुच्चयों से, कितने आधारों से और कितने से

उन अवस्थाओं में कितने तत्व विघटित होते हैं? वे हैं

4 समुच्चयों, 1 आधार और 7 तत्वों से पृथक;

1 आधार और 1 तत्व (5) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

307. नेत्र चेतना तत्व; . . . मन तत्व; मन चेतना

तत्व इन अवस्थाओं से जुड़ा है। वे अवस्थाएँ हैं

इन अवस्थाओं से अलग।

वे किसी भी समूह से अलग नहीं हैं, किसी भी समूह से अलग नहीं हैं

कोई भी आधार; वे 1 तत्व (7) से अलग हो जाते हैं।

308. मन की क्षमता इन अवस्थाओं से जुड़ी है। वे अवस्थाएँ

इन अवस्थाओं से विरक्त हैं।

वे 4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 1 से अलग हो जाते हैं।

7 तत्व; 1 आधार और 1 तत्व (1) से आंशिक रूप से अलग।

309. उदासीनता की क्षमता इन अवस्थाओं से जुड़ी होती है।

राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे किसी भी समूह से अलग नहीं होते; अलग नहीं होते

किसी भी आधार से; वे 5 तत्वों (1) से अलग हो जाते हैं।

310. निर्माण द्वारा वातानुकूलित। चेतना; द्वारा वातानुकूलित

6 आधार। संपर्क; संपर्क द्वारा वातानुकूलित। भावना; संपर्क;

भावना; बोध; इच्छाशक्ति; चेतना; ध्यान है

इन अवस्थाओं से जुड़े हुए। वे अवस्थाएँ इनसे अलग हैं।

इन राज्यों।

वे 4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 से अलग हो जाते हैं।

तत्व; 1 आधार और 1 तत्व (9) से आंशिक रूप से अलग हो गए।

311. निर्णय इन राज्यों से संबंधित है। वे राज्य हैं

इन अवस्थाओं से अलग।

वे किसी भी समूह से अलग नहीं हैं, पृथक नहीं हैं।

किसी भी आधार से; वे 1 तत्व (1) से अलग हो जाते हैं।

312. ऐसी अवस्थाएँ जो न तो दर्दनाक और न ही दर्द से जुड़ी भावनाओं से संबंधित हैं।

सुखद; उदासीनता से जुड़ी अवस्थाएँ इससे संबंधित हैं

ये राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे किसी भी समूह से अलग नहीं हैं, पृथक नहीं हैं।

किसी भी आधार से; वे 5 तत्वों (2) से अलग हो जाते हैं।

313. व्यावहारिक चिंतन और निरंतर चिंतन वाले राज्य हैं

इन अवस्थाओं से जुड़े हुए। वे अवस्थाएँ इनसे अलग हैं।

इन राज्यों।

वे किसी भी समूह से अलग नहीं हैं, पृथक नहीं हैं।

किसी भी आधार से; वे 1 तत्व (1) से अलग हो जाते हैं।

314. चेतना की अवस्थाएँ; मानसिक अवस्थाएँ

कारक; चेतना से संबंधित अवस्थाएँ; अवस्थाएँ

जो चेतना से जुड़े हुए हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो दोनों हैं

चेतना से जुड़े और चेतना द्वारा उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ; ऐसी अवस्थाएँ जो

साथ में जुड़े हुए हैं, साथ में उत्पन्न होते हैं और साथ में पैदा होते हैं

चेतना; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं, इससे उत्पन्न होती हैं और

चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होने वाले ये कारक इनसे जुड़े होते हैं।

वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे 4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 1 से अलग हो जाते हैं।

7 तत्व; 1 आधार और 1 तत्व (7) से आंशिक रूप से अलग।

315. व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य; निरंतर चिंतन वाले राज्य

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से जुड़ी हैं। वे अवस्थाएँ इनसे अलग हैं।

इन राज्यों।

वे किसी भी समूह से अलग नहीं हैं, पृथक नहीं हैं।

किसी भी आधार से; वे 1 तत्व (2) से अलग हो जाते हैं।

316. उदासीनता से युक्त अवस्थाएँ संबद्ध होती हैं

इन राज्यों के साथ। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

कितने समुच्चयों से, कितने आधारों से और कितने से

उन अवस्थाओं में कितने तत्व विघटित होते हैं? वे विघटित नहीं होते।

किसी भी समुच्चय से पृथक, किसी भी आधार से पृथक नहीं;

वे 5 तत्वों (1) से अलग हो जाते हैं।

स्मृति सहायक

चार समुच्चय, एक आधार।

सात तत्व, जिनमें से दो संकायों से हैं।

तीन आश्रित उत्पत्ति, और फिर संपर्क वाले पाँच राज्य

पांचवें के रूप में,

निर्णय, ध्यान, तीन जुड़वाँ बच्चे,

सात उच्च मध्यवर्ती दोहे, जिनमें से दो व्यावहारिक और निरंतर विचार हैं।

मन तत्व से संबंधित, तीन अवस्थाएँ इसके साथ होती हैं

उदासीनता की भावना

अध्याय VII की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: 37 अवस्थाएँ जो या तो शुद्ध चेतना हैं या

मानसिक कारक इस अध्याय का विषय है। यहाँ

जांच के दायरे से जुड़े राज्य और अन्य राज्य

उन अवस्थाओं पर विचार किया जाता है जो संबंधित अवस्थाओं से अलग होती हैं।

यह विधि केवल (1) भावना समूह और अन्य पर ही लागू की जा सकती है

जहां मानसिक कारक 7 चेतनाओं से जुड़े होते हैं

तत्व, (2) निर्णय और अन्य जहां मानसिक कारक हैं

मन तत्व और मन चेतना तत्व से संबंधित और

(3) वे अवस्थाएँ जो शुद्ध चेतना का समूह हैं। यह लागू नहीं होता।

(1) मूल सत्य, पथ सत्य और अन्य जो इससे संबंधित हैं

मन चेतना तत्व के एक भाग के साथ, (2) भौतिकता और (3)

निर्वाण। 37 राज्यों में से 24 आंतरिक राज्य हैं और 13 अन्य राज्यों से संबंधित हैं।

जांच के बाह्य राज्य।

"ये राज्य" और "वे राज्य": निर्धारण के नियम

"ये राज्य" और "वे राज्य" निम्नलिखित हैं:—

1. जब चार मानसिक समूहों में से एक जांच की अवस्था हो

(जैसा कि क्रमांक 306 में है), शेष 3 मानसिक समुच्चयों को लिया जाता है

पहले "ये राज्य"। फिर जांच के दायरे में आने वाला कुल योग।

इन तीन संबंधित मानसिक समूहों ("ये अवस्थाएँ") के साथ,

ऊपर बताए गए 4 मानसिक समूह, पहले "उन अवस्थाओं" के रूप में लिए जाते हैं।

(यह चार्ट में "उन राज्यों" के कॉलम में दर्शाया गया है)

क्योंकि "राज्यों - इन राज्यों" के लिए यह प्रत्येक राज्य के साथ करना होगा।

जांच का। इसका कारण यह है कि "ये राज्य" और राज्य दोनों

जांच के पहलू भी उसी तरह से अलग हो जाते हैं— इस मामले में

भौतिकता और निर्वाण। इसके अलावा, यह दर्शाता है कि थोड़ा सा

राज्यों के बीच अंतर को पहले "ये राज्य" के रूप में लिया गया है।

और "वे अवस्थाएँ")। फिर से, "वे अवस्थाएँ," 4 मानसिक समूह,

भौतिकता और निर्वाण से विरक्त हैं जिन्हें लिया गया है

दूसरे "ये राज्य" के रूप में और बाद में, दूसरे "वे" के रूप में

राज्यों"। (यह दूसरे "ये राज्य" कॉलम में दिखाया गया है)

चार्ट में)। बाद में, भौतिकता और निर्वाण अलग-अलग हैं।

चार मानसिक समूहों से, मन के आधार से और सात चेतनाओं से

तत्व। वे 52 मानसिक कारकों से भी अलग हैं।

आंशिक पृथक्करण में संज्ञेय आधार और संज्ञेय तत्व।

2. नेत्र-चेतना तत्व (संख्या 307) के साथ, संबद्ध

राज्यों में, 7 प्राथमिक मानसिक कारकों को पहले "ये" के रूप में लिया जाता है।

राज्यों में ". नेत्र-चेतना तत्व के साथ-साथ 7 प्राथमिक तत्व भी शामिल हैं"।

मानसिक कारक (जिन्हें नेत्र-चेतना तत्व के रूप में भी जाना जाता है)

समूहीकरण, जो चेतना और उसके संक्षेप में दर्शाने का तरीका है

संबंधित मानसिक कारक), पहला "वे अवस्थाएँ", अलग हैं

चेतना के 6 तत्वों से मानसिक समूह, भौतिकता और

निर्वाण। वे सभी बाद की अवस्थाएँ जिन्हें दूसरी अवस्था माना जाता है, "ये

राज्यों को किसी भी समूह से अलग नहीं किया जाता है, अलग नहीं किया जाता है

किसी भी आधार से, लेकिन केवल नेत्र-चेतना तत्व से विरक्त।

3. निर्णय (संख्या 311) के साथ, संबद्ध राज्यों, 78 प्रकार के

चेतना और निर्णय को छोड़कर 50 मानसिक कारक

संदेह को पहली "ये अवस्थाएँ" माना जाता है। फिर निर्णय लिया जाता है।

इससे संबंधित अवस्थाओं के साथ, जो चेतना के 78 प्रकारों का निर्माण करती हैं।

और संदेह को छोड़कर 51 मानसिक कारक, जिन्हें पहले "उन अवस्थाओं" के रूप में वर्णित किया गया है।

बाद वाले 2 x 5 इंद्रिय चेतना तत्वों से अलग हैं,

मानसिक समूहीकरण, भौतिकता और निर्वाण पर संदेह करना, ये सभी

इन्हें दूसरे "ये अवस्थाएँ" के रूप में लिया गया है। बाद वाली अवस्थाएँ अविभाजित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अलग नहीं बल्कि अलग हो गया

केवल मन के तत्व से।

4. व्यावहारिक चिंतन और सतत चिंतन वाले राज्य (संख्या 313)

ये दो विचार इससे जुड़े हैं जिन्हें प्रथम माना जाता है।

"ये राज्य"। व्यावहारिक और निरंतर चिंतन वाले राज्य

इन दो विचारों के साथ मिलकर, कुल 55 प्रकार बनते हैं।

व्यावहारिक विचार और निरंतर विचार के साथ चेतना का

52 मानसिक कारकों को पहले "उन अवस्थाओं" के रूप में लिया जाता है। बाद वाले

व्यावहारिक विचार और निरंतर विचार के बिना विच्छेदित होते हैं

मानसिक समूह, भौतिकता और निर्वाण, जिन्हें माना जाता है

दूसरा "ये अवस्थाएँ"। बाद वाली अवस्थाएँ किसी से भी अविभाजित नहीं हैं।

कुल योग, किसी भी आधार से अलग नहीं होता है, बल्कि केवल इससे अलग होता है

मन का तत्व।

5. उदासीनता की क्षमता (संख्या 309) के साथ, जो कि भावना है

चेतना के 55 प्रकारों से संबंधित,

उदासीनता, उपरोक्त मानसिक समूहों में से, उदासीन को छोड़कर

भावनाएँ वे संबंधित अवस्थाएँ हैं जिन्हें प्रथम "ये" के रूप में लिया जाता है।

अवस्थाएँ। उदासीनता की भावना के साथ-साथ उससे जुड़ी मानसिक स्थिति।

समूहों को पहले "उन अवस्थाओं" के रूप में लिया जाता है। वे अलग-अलग हैं।

शारीरिक सुख, शारीरिक पीड़ा, मानसिक आनंद और दुःख से लेकर मानसिक पीड़ा तक।

समूह, भौतिकता और निर्वाण जिन्हें द्वितीय माना जाता है

“ये अवस्थाएँ”। बाद वाली अवस्थाएँ किसी भी समूह से अविभाजित नहीं होती हैं।

किसी भी आधार से विरक्त नहीं, बल्कि नेत्र-चेतना से विरक्त।

कान की चेतना, नाक की चेतना, जीभ की चेतना

और मन के तत्व।

6. ऐसी अवस्थाएँ जो न तो दर्दनाक होती हैं और न ही दर्द रहित होती हैं।

सुखद (संख्या 312) मानसिक समूह हैं जिनके साथ

उदासीनता की भावना लेकिन बाद वाले को बाहर रखता है, जो कि संबंधित है

अवस्था। उदासीनता की भावना और उसके मानसिक समूह हैं

इन्हें प्रथम “ये अवस्थाएँ” के रूप में लिया गया है और ये इसमें अलग-अलग हैं।

ठीक उसी प्रकार जैसे ऊपर उदासीनता की भावना, अर्थात् शारीरिक सुख से,

शारीरिक पीड़ा, मानसिक सुख और दुःख, मानसिक समूह, भौतिकता

और निर्वाण जो 5 तत्वों से भी विरक्त हैं (

उदासीनता की क्षमता से एकमात्र अंतर उन अवस्थाओं में है जिन्हें माना जाता है

पहला “ये राज्य बाकी सब समान हैं)।

चार्ट को कैसे पढ़ें: भावनाओं का समग्र रूप केवल एक उदाहरण के रूप में लिया गया है।

इन अवस्थाओं (89 प्रकार की) के साथ समग्र भावना जुड़ी हुई है।

चेतना और 51 मानसिक कारक (भावना को छोड़कर)।

(भावना और उससे संबंधित उपरोक्त अवस्थाएँ, अर्थात् चेतना के 89 प्रकार)

और 52 मानसिक कारक) इन अवस्थाओं (भौतिकता) से अलग हैं

और निर्वाण)।

कितने समुच्चयों से, कितने आधारों से और कैसे

क्या अनेक तत्व उन अवस्थाओं (भौतिकता और निर्वाण) से वियोगित हैं?

वे 4 समूहों (मानसिक समूहों) से अलग हैं।

एक आधार (मन का आधार) और सात तत्वों (सात चेतना) से।

तत्व); 1 (संज्ञानात्मक) आधार से आंशिक रूप से अलग (52 मानसिक

कारक) और 1 (संज्ञानात्मक) तत्व (52 मानसिक कारक) से।

उत्तरों के प्रकार: तीन प्रकार के उत्तर हैं। वही

उत्तर उन राज्यों की संख्या द्वारा दिया जाता है।

जांच की वे अवस्थाएँ जो एक ही प्रकार का परिणाम देती हैं, उन्हें कोष्ठकों में दर्शाया गया है।

प्रश्नों के साथ-साथ।

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 306 (5), 308 (1), 310 (9), 314 (7)	22
2. 307 (7), 311 (1), 313 (1), 315 (2)	11
3. 309 (1), 312 (2), 316 (1)	4
	कुल 37

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धातुकथा >> **अध्याय** 8
पालो संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 8: विच्छेदित और संबद्ध

2 प्रश्न और उत्तर

317. पदार्थ का समूह इन अवस्थाओं से अलग हो जाता है। कैसे?

अनेक समुच्चय, कितने आधारों के साथ और कितने तत्वों के साथ

क्या वे राज्य संबद्ध हैं? किसी से नहीं (1)।

318. भावना समूह इन अवस्थाओं से अलग है;

बोध समूह; मानसिक निर्माण समूह; चेतना

कुल मिलाकर... वे राज्य जो शोक का कारण हैं; वे राज्य जो...

शोक के कारण इन अवस्थाओं से असंबद्ध नहीं हैं।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व वे अवस्थाएँ हैं जो किसी से भी जुड़ी नहीं हैं (323)।

स्मृति सहायक

बोधगम्य आधार, बोधगम्य तत्व, फिर जीवन शक्ति, मानसिक भौतिकता।

छह आधार, जन्म, उम्र बढ़ना, मृत्यु, दो तिगुने बच्चे। ये अवस्थाएँ नहीं हैं

शामिल है।

प्रथम लघु मध्यवर्ती युग्मों से सात अवस्थाएँ, दस समूह।

फिर चौदह बड़े-मध्यवर्ती दोहे, छह अंतिम दोहे।

इन्हें भी शामिल नहीं किया गया है। ये सभी सैंतालीस राज्य शामिल नहीं हैं।

इस नकारात्मक अध्याय में अध्याय 14 के साथ-साथ इसे भी शामिल किया गया है।

अध्याय VIII और XIV की विधियों और चार्टों की व्याख्या

विषयवस्तु: 324 अवस्थाएँ जो तलों द्वारा वियोजित हैं,

समय और निरंतरता के आधार पर, ये वर्ग इन विषयों का आधार बनते हैं।

दो अध्याय। यहाँ वे अवस्थाएँ हैं जो अवस्था से विच्छेदित हैं।

जांच के दायरे और उपरोक्त से जुड़े राज्यों के संबंध में।

विखंडित अवस्थाओं पर विचार किया जाता है। यह विधि केवल तभी लागू की जा सकती है।

उन अवस्थाओं की ओर जो शुद्ध भौतिकता, निर्वाण और मानसिक समुच्चय हैं

और उन अवस्थाओं के लिए जिनमें भौतिकता और मानसिकता दोनों शामिल हैं

लेकिन अलग-अलग हैं। 324 राज्यों में से 97 आंतरिक राज्यों से संबंधित हैं।

और 227 को बाहरी राज्यों की जांच के लिए भेजा गया।

अध्याय VIII में जांच की सभी अवस्थाओं का उल्लेख नहीं किया गया है।

जिसमें केवल 2 प्रश्न और उत्तर हैं। इसका कारण यह है कि सभी

वे दोनों एक ही नकारात्मक उत्तर देते हैं, यानी "बिना किसी के"। हालाँकि,

उनका उल्लेख अध्याय XIV में किया गया है, जिसका संदर्भ लिया जा सकता है।

इनमें से कुछ को यहाँ इसलिए शामिल किया गया है ताकि स्पष्ट रूप से दिखाया जा सके कि

जिन राज्यों को “ये राज्य” माना जाता है

वियोगित अवस्थाएँ: पीड़ा, सत्य और अलौकिक मानसिक अवस्थाएँ

समूहों को तलों द्वारा अलग किया जाता है। नौ महान विकास इस प्रकार हैं:

इन्हें बारी-बारी से "ये अवस्थाएँ" कहा जाता है क्योंकि ये भी असंबद्ध हैं।

विमानों द्वारा। लेकिन जैसा कि अध्याय VI में समझाया गया है, भौतिकता और

भौतिकता अलग नहीं होती, जब अनुभवजन्य विकास होता है

जांच की अवस्था, अगोचर विकास को नहीं माना जा सकता

“ये अवस्थाएँ”। इसी प्रकार पाँच-समूह बनने पर, एक-समूह प्राप्त होता है।

बनना को “ये अवस्थाएँ” के रूप में नहीं लिया जा सकता। हालाँकि, इसके साथ

शुद्ध मानसिकता, जैसे कि चार-समूह जैसी जांच की अवस्था।

बनना और न तो बोध और न ही अबोध बनना,

अबोधित विकास और एक-समूह विकास, जो कि हैं

शुद्ध भौतिकता को क्रमशः "ये अवस्थाएँ" के रूप में लिया जाता है।

“ये राज्य”: “इन राज्यों” को निर्धारित करने के नियम इस प्रकार हैं:

निम्नलिखित नुसार :-

1. जब भौतिकता या निर्वाण जांच की अवस्था हो, तब

अलग-अलग 4 मानसिक समूहों को "ये अवस्थाएँ" माना जाता है और

बाद में इन्हें “उन राज्यों” के रूप में जाना जाता है। चूंकि बाद वाले राज्यों से कोई संबद्ध राज्य नहीं हैं,

इसका उत्तर है "बिना किसी के"।

2. भावनाओं, समग्रता आदि जैसे मानसिक कारकों के साथ।

जो सभी प्रकार की चेतना और 89 प्रकारों से जुड़े हैं

चेतना जैसे चेतना का समूह, पृथक

अवस्थाओं, भौतिकता और निर्वाण को "ये अवस्थाएँ" के रूप में लिया जाता है।

3. उत्पत्ति, सत्य आदि जैसे मानसिक कारकों के साथ

सभी प्रकार की चेतना से जुड़े नहीं हैं और उनमें से एक के साथ

7 चेतना तत्व जैसे नेत्र-चेतना तत्व इत्यादि।

वियोगित मानसिकता, भौतिकता और निर्वाण के साथ

इन्हें “ये अवस्थाएँ” माना जाता है। (मूल सत्य, जो लालच और घृणा है)

या भ्रम को वर्ग के आधार पर अलग किया जाता है)।

4. पुनर्जन्म के साथ भौतिकता और मानसिकता दोनों का केंद्र बन जाता है।

यदि ये शामिल हैं, तो वियोगित मानसिक अवस्थाओं को "ये" माना जाता है।

राज्यों ”।

चार्ट को कैसे पढ़ें: पदार्थ का समुच्चय केवल उदाहरण के तौर पर लिया गया है।

पदार्थ का समूह इन अवस्थाओं (4 मानसिक समूहों) से अलग हो जाता है।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कितने के साथ

उन अवस्थाओं (4 मानसिक समुच्चयों) में कितने तत्व हैं?

किसी से संबंधित नहीं।

उत्तरों के प्रकार: सभी एक ही हैं, अर्थात् "बिना किसी के"।

अध्याय XIV

यहां वे अवस्थाएं हैं जो जांच की अवस्था से अलग हैं, जैसे कि

अध्याय VIII में वर्गीकृत और अवर्गीकृत श्रेणियों को शामिल किया गया है।

आधार और तत्व। तारांकन चिह्न दर्शाता है कि निर्वाण को वर्गीकृत नहीं किया गया है।

कुल योग के अंतर्गत।

चार्ट को कैसे पढ़ें; पदार्थ का कुल योग केवल उदाहरण के तौर पर लिया गया है।

पदार्थ का समूह इन अवस्थाओं (4 मानसिक समूहों) से अलग हो जाता है।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और

वे अवस्थाएँ (4 मानसिक समूह) कितने तत्वों के अंतर्गत आती हैं?

वर्गीकृत? इन्हें 4 समूहों (भावना, बोध,

मानसिक गठन और चेतना समूह), 2 आधारों के अंतर्गत

(संज्ञानात्मक आधार और मन आधार) और 8 तत्वों के अंतर्गत (संज्ञानात्मक

तत्व और 7 चेतना तत्व)।

वे (4 मानसिक समूह) कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं?

इन्हें 1 समुच्चय (पदार्थ समुच्चय) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है,

10 आधार (10 ग्रॉस आधार) और 10 से कम तत्व (10 ग्रॉस तत्व)।

उत्तरों के प्रकार: उत्तरों के 9 प्रकार हैं। संख्याएँ

समान उत्तर वाले जांच राज्यों की सूची नीचे दी गई है:-

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 456 (1), 458 (20), 462 (8), 470 (4), 478 (4), 487 (2), 491 (10) 469 (6), 500 (2), 510 (10), 503 (2), 505 (5), 507 (2) 509 (2), 516 (3)	81
2. 457 (6). 466 (3), 472 (6), 504 (8)	23
3. 459 (7), 473 (1), 481 (1), 512 (2)	11
4. 460 (1), 475 (1), 480 (1), 486 (5), 490 (2), 495 (3), 497 (1) 499 (4), 501 (20), 502 (4), 507 (4), 508 (5), 511 (4), 515 (3) 518 (5)	63
5. 461 (2), 463 (4), 465 (10), 467 (3), 471 (16), 474 (4), 477 (2) 482 (3), 485 (9), 489 (8), 492 (4), 494 (8), 498 (5), 501 (28), 507 (13), 510 (4), 513 (3), 517 (5)	131
6. 464 (1), 476 (2), 484 (1), 514 (1)	5
7. 468 (3), 479 (1), 483 (1), 506 (1)	6
8. 469 (1)	1
9. 488 (1), 493 (2)	3
	कुल 324

अध्याय 9: संबद्ध और संबंधित

34 प्रश्न और उत्तर

319. भावना समूह इन अवस्थाओं से जुड़ा है; बोध

कुल योग; मानसिक गठन का कुल योग इनसे जुड़ा हुआ है

राज्य। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

क्या कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? वे जुड़े हुए हैं

3 समुच्चयों के साथ, 1 आधार के साथ और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (3) से संबद्ध।

320. चेतना समूह; मन का आधार; नेत्र चेतना

तत्व... मन तत्व; मन चेतना तत्व इससे जुड़ा हुआ है।

इन राज्यों के साथ। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

वे 3 समूहों से जुड़े हैं; आंशिक रूप से जुड़े हुए हैं

1 आधार और 1 तत्व के साथ (9).

321. उत्पत्ति सत्य; पथ सत्य इन अवस्थाओं से जुड़ा है।

वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चयों के साथ, 1 आधार के साथ और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से

1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व (2) से जुड़ा हुआ।

322. मन की क्षमता इन अवस्थाओं से जुड़ी है। वे अवस्थाएँ

ये इन राज्यों से जुड़े हैं। ये 3 समूहों से जुड़े हैं;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व (1) से संबद्ध।

323. शारीरिक सुख का अनुभव करने की क्षमता; शारीरिक पीड़ा का अनुभव करने की क्षमता; मानसिक आनंद

शोक की क्षमता इन अवस्थाओं से जुड़ी होती है।

राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे इनसे जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चय, जिनमें 1 आधार और 1 तत्व होता है; आंशिक रूप से संबद्ध

1 आधार के साथ और 1 तत्व (4) के साथ।

324. उदासीनता की क्षमता इन अवस्थाओं से जुड़ी होती है।

राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे इनसे जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चय, 1 आधार और 6 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से संबद्ध

1 आधार और 1 तत्व (1) के साथ।

325. आस्था संकाय; ऊर्जा संकाय; ध्यान संकाय;

एकाग्रता शक्ति; ज्ञान शक्ति; मुझे पता चलेगा कि मैंने क्या किया

अज्ञानी क्षमता; उच्चतर बोध क्षमता; वह जिसने जान लिया है

क्षमता; अज्ञान; अज्ञान से ग्रस्त। संरचनाएँ हैं

इन राज्यों से जुड़े हुए। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

अवस्थाएँ। वे 3 समुच्चयों, 1 आधार और के साथ जुड़े हुए हैं।

1 तत्व; आंशिक रूप से 1 समुच्चय से संबद्ध, 1 आधार के साथ और

1 तत्व (10) के साथ.

326. संरचनाओं द्वारा वातानुकूलित। चेतना इससे जुड़ी है

ये राज्य। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चयों से संबद्ध; आंशिक रूप से 1 आधार से संबद्ध और

1 तत्व (1) के साथ।

327. 6 आधारों द्वारा नियंत्रित, संपर्क इनसे जुड़ा हुआ है

राज्य। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे हैं

3 समुच्चयों, 1 आधार और 7 तत्वों से संबद्ध;

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 से संबद्ध

तत्व (1).

328. संपर्क द्वारा नियंत्रित। इनसे भावना जुड़ी होती है।

राज्य। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे हैं

3 समुच्चयों, 1 आधार और 7 तत्वों से संबद्ध;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व (1) से संबद्ध।

329. भावना से प्रेरित। लालसा; लालसा से प्रेरित।

आसक्ति; कर्म इन अवस्थाओं से जुड़ा हुआ है।

राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे इनसे जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चय, जिनमें 1 आधार और 1 तत्व होता है; आंशिक रूप से संबद्ध

1 समुच्चय के साथ, 1 आधार के साथ और 1 तत्व (3) के साथ।

330. शोक; पीड़ा; दु:ख इन अवस्थाओं से संबंधित हैं।

वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चयों के साथ, 1 आधार के साथ और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (3) से संबद्ध।

331. निराशा; ध्यान के अनुप्रयोग; महान प्रयास

इन राज्यों से जुड़े हुए। वे राज्य इनसे जुड़े हुए हैं।

ये अवस्थाएँ 3 समुच्चयों से जुड़ी हैं, जिनमें 1 आधार है।

और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से 1 समुच्चय से संबद्ध, साथ

1 आधार और 1 तत्व (3) के साथ।

332. मानसिक शक्ति का मार्ग इन अवस्थाओं से जुड़ा है।

राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे इनसे जुड़े हुए हैं।

2 समुच्चय; आंशिक रूप से 1 समुच्चय से संबद्ध, 1 आधार के साथ और

1 तत्व (1) के साथ।

333. झाना इन राज्यों से संबंधित है। वे राज्य हैं

इन राज्यों से जुड़े हुए। वे 2 समूहों से जुड़े हुए हैं,

1 आधार और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से संबंधित

1 समुच्चय, 1 आधार के साथ और 1 तत्व (1) के साथ।

334. असीमित; 5 क्षमताएँ; 5 शक्तियाँ; ज्ञानोदय के 7 कारक;

आर्य अष्टांगिक मार्ग इन अवस्थाओं से संबंधित है।

वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चयों के साथ, 1 आधार के साथ और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से

1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व (5) से जुड़ा हुआ।

335. संपर्क; इच्छाशक्ति; ध्यान इन अवस्थाओं से संबंधित है।

वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चयों के साथ, 1 आधार के साथ और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से

1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व (3) से जुड़ा हुआ।

336. भावना; इन अवस्थाओं से बोध जुड़ा हुआ है।

राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे इनसे जुड़े हुए हैं।

3 समुच्चय, 1 आधार और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से संबद्ध

1 आधार और 1 तत्व (2) के साथ।

337. चेतना इन अवस्थाओं से जुड़ी है। वे अवस्थाएँ

इन राज्यों से जुड़े हैं। वे 3 समूहों से जुड़े हैं;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व (1) से संबद्ध।

338. निर्णय इन अवस्थाओं से संबंधित है। वे अवस्थाएँ हैं

इन राज्यों से जुड़े हुए। वे 3 समूहों से जुड़े हुए हैं,

1 आधार और 2 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से 1 समूह से संबद्ध।

1 आधार और 1 तत्व (1) के साथ।

त्रिक

339. सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ; सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ

दर्द भरी अनुभूति के साथ; ऐसी अवस्थाएँ जो ऐसी अनुभूति से जुड़ी होती हैं जो न तो दर्द भरी होती हैं और न ही दर्द भरी;

इन अवस्थाओं से न तो कोई पीड़ा जुड़ी है और न ही कोई सुख।

इन राज्यों से जुड़े हैं। वे 1 समूह से जुड़े हैं;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व (3) से जुड़ा हुआ है।

340. व्यावहारिक और सतत चिंतन वाले राज्य;

व्यावहारिक चिंतन के बिना, लेकिन निरंतर चिंतन; राज्यों के साथ

परमानंद से जुड़ी अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से संबंधित हैं। वे अवस्थाएँ

इन राज्यों से जुड़े हैं। वे आंशिक रूप से इनसे जुड़े हैं।

1 समुच्चय, 1 आधार के साथ और 1 तत्व (3) के साथ।

341. आनंद से युक्त अवस्थाएँ; आनंद से युक्त अवस्थाएँ

उदासीनता इन अवस्थाओं से जुड़ी होती है। वे अवस्थाएँ हैं

इन राज्यों से जुड़े हुए। वे 1 समूह से जुड़े हुए हैं;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व (2) से संबद्ध।

दोहे

342. वे अवस्थाएँ जो मूल हैं; वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और साथ ही

संबद्ध मूल हैं; वे राज्य जो मूल हैं और संबद्ध भी हैं

जिनकी जड़ें इन राज्यों से जुड़ी हैं। वे राज्य हैं

इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे 3 समूहों से जुड़े हुए हैं।

1 आधार और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से 1 समूह से संबद्ध,

1 आधार के साथ और 1 तत्व (3) के साथ।

343. वे अवस्थाएँ जिनके सहबद्ध मूल हैं लेकिन वे स्वयं मूल नहीं हैं; अवस्थाएँ

जो जड़ों से जुड़े हैं लेकिन स्वयं जड़ नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो

मूल अवस्थाएँ नहीं, बल्कि इन अवस्थाओं से संबंधित मूल अवस्थाएँ हैं।

वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे आंशिक रूप से

1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व (3) से जुड़ा हुआ।

344. वे अवस्थाएँ जो कलंक हैं; वे अवस्थाएँ जो दोनों प्रकार से कलंक हैं

और दोष के कारक; वे अवस्थाएँ जो दोष भी हैं और उनसे संबंधित भी हैं

इन राज्यों से जुड़े हुए रोग हैं। वे राज्य हैं

इन राज्यों से जुड़े हुए। वे 3 समूहों से जुड़े हुए हैं,

1 आधार और 1 तत्व के साथ; आंशिक रूप से 1 समूह से संबद्ध,

1 आधार के साथ और 1 तत्व (3) के साथ।

346. वे अवस्थाएँ जो कैंकर रोग से संबंधित हैं लेकिन स्वयं कैंकर रोग नहीं हैं

इन राज्यों से जुड़े हैं। वे राज्य इनसे जुड़े हैं।

इन राज्यों के साथ। वे आंशिक रूप से 1 समुच्चय से जुड़े हुए हैं,

1 आधार और 1 तत्व (1) के साथ।

346. बेड़ियाँ... बंधन... बाढ़... बंधन... बाधाएँ*...

ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो दोनों हैं

गलतफहमियां और गलतफहमियों के विषय इससे जुड़े होते हैं।

ये राज्य। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

ये 3 समुच्चयों, 1 आधार और 1 तत्व से जुड़े होते हैं।

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 से संबद्ध

तत्व (22).

347. वे राज्य जो गलतफहमियों से जुड़े हैं, वे हैं

इन राज्यों से जुड़े हुए। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

अवस्थाएँ। वे आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार से जुड़े हैं।

और 1 तत्व (1) के साथ।

348. चेतना की अवस्थाएँ इनसे जुड़ी होती हैं।

राज्य। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं। वे हैं

3 समूहों से संबद्ध; आंशिक रूप से 1 आधार से संबद्ध

और 1 तत्व (1) के साथ।

349. वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं; वे अवस्थाएँ जो संबद्ध हैं

चेतना के साथ; चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो चेतना से जुड़ी हुई हैं और चेतना द्वारा उत्पन्न होती हैं;

वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं, इससे उत्पन्न होती हैं और इससे उत्पन्न होती हैं

चेतना के साथ; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हुई हैं,

चेतना द्वारा उत्पन्न और उसके साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होने वाले शब्द जुड़े हुए हैं।

इन राज्यों के साथ। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

वे 1 समुच्चय, 1 आधार और 7 से जुड़े हैं।

तत्व (6).

350. आसक्ति से ग्रस्त अवस्थाएँ... भ्रष्ट अवस्थाएँ;

ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी;

ऐसे राज्य जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचार से ग्रसित दोनों हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार से जुड़े दोनों ही इससे संबंधित हैं।

ये राज्य। वे राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

ये 3 समुच्चयों, 1 आधार और 1 तत्व से जुड़े होते हैं;

आंशिक रूप से 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 से संबद्ध

तत्व (8).

351. वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं;

वे राज्य जो भ्रष्टाचार से जुड़े हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं

भ्रष्टाचार; व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य; निरंतर चिंतन वाले राज्य;

परमानंद की अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो साथ-साथ होती हैं

परमानंद इन अवस्थाओं से जुड़ा है। वे अवस्थाएँ जुड़ी हुई हैं।

इन राज्यों के साथ। वे आंशिक रूप से 1 समुच्चय से जुड़े हुए हैं,

1 आधार के साथ और 1 तत्व (6) के साथ।

352. वे अवस्थाएँ जो आनंद से युक्त होती हैं; वे अवस्थाएँ जो

उदासीनता के साथ जुड़े भाव इन अवस्थाओं से संबंधित हैं।

राज्य इन राज्यों से जुड़े हुए हैं।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कितने के साथ

वे अवस्थाएँ कितने तत्वों से संबद्ध हैं? वे संबद्ध हैं।

1 समुच्चय के साथ; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 के साथ संबद्ध

तत्व (2).

स्मृति सहायक

चार मानसिक समुच्चय, केवल मन का आधार।

चेतना के सात तत्व, दो सत्य, चौदह इंद्रियां।

बारह आश्रित उत्पत्तियाँ, अगली सोलह।

आठ त्रिक, तैंतालीस समूह।

सात बड़े मध्यवर्ती दोहे, छह अंतिम दोहे।

इन राज्यों का उल्लेख नौवें अध्याय में किया गया है।

अध्याय 9 की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: 120 अवस्थाएँ, जिनमें से प्रत्येक मानसिक का एक भाग है।

ये दोनों अध्याय मिलकर इस विषयवस्तु का निर्माण करते हैं।

वे राज्य हैं जो संघ की 4 विशेषताओं का अनुपालन करते हैं।

अन्य, जो निर्वाण, शुद्ध भौतिकता या भौतिकता हैं

इसलिए, इसमें मानसिकता और निर्वाण दोनों शामिल नहीं हैं।

इन 120 राज्यों में से 56 आंतरिक और 64 बाह्य राज्यों के अंतर्गत आते हैं।

जांच की अवस्थाएँ।

"ये राज्य" और "वे राज्य": जैसा कि अध्याय VI में दिखाया गया था,

शेष मानसिक समूह जो अवस्था से जुड़े होते हैं

जांच के बिंदुओं को पहले "ये राज्य" के रूप में लिया जाता है। बाद वाले बिंदु फिर

पहले "उन राज्यों" के रूप में लिया गया। "उन राज्यों" का संबंध है।

जांच की उस स्थिति के साथ जिसे दूसरे "ये स्थितियाँ" के रूप में लिया गया है।

और बाद में, दूसरे "उन राज्यों" के रूप में। इन्हें इसमें दिखाया गया है।

चार्ट। दूसरे के साथ संबंध और आंशिक संबंध

“वे राज्य” अध्याय VI में वर्णित राज्यों के समान ही हैं।

चार्ट को कैसे पढ़ें: भावों का समग्र रूप केवल उदाहरण के तौर पर लिया गया है।

इन अवस्थाओं के साथ समग्र भावना जुड़ी हुई है (चेतना 89,

मानसिक कारक 52 भावना को छोड़कर = 51)। वे अवस्थाएँ (चेतना 89,

मानसिक कारक 52 (भावना को छोड़कर = 51) से जुड़े हैं

ये अवस्थाएँ (भावनाओं का समग्र रूप)।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व उन अवस्थाओं (भावनाओं के समूह) से जुड़े होते हैं?

(भावना समूह) 3 समूहों (शेष) से जुड़े हैं

3 मानसिक समुच्चय), 1 आधार (मन का आधार) और 7 तत्वों के साथ

(चेतना के 7 तत्व); आंशिक रूप से 1 (संज्ञानात्मक) से संबद्ध

आधार (भावना को छोड़कर 51 मानसिक कारक) और 1 (संज्ञानात्मक) के साथ

तत्व (भावना को छोड़कर 51 मानसिक कारक)।

उत्तरों के प्रकार: 12 प्रकार के उत्तर हैं। संख्याएँ

जिन राज्यों में जांच के समान उत्तर आए हैं, उनकी सूची नीचे दी गई है:

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 319 (3), 328 (1), 336 (2)	6
2. 320 (9), 322 (1), 326 (1), 337 (1), 348 (1)	13
3. 321 (2), 325 (10), 329 (3), 331 (3), 334 (5), 324 (3), 344 (3) 346 (17),350(7)	53
4. 323 (4), 330 (3)	7
5. 324 (1)	1
6. 327 (1), 335 (3)	4
7. 332 (1)	1
8. 333 (1)	1
9. 338 (1)	1
10. 339 (3), 340 (2), 352 (2)	7
11. 340 (3), 343 (3), 845 (1), 346 (5), 347 (1), 350 (1), 351 (6)	20
12. 349 (5)	6
	कुल 120

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धातुकथा >> **अध्याय** 10
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 10: वियोजित और वियोजित

56 प्रश्न और उत्तर

353. पदार्थ का समूह इन अवस्थाओं से अलग हो जाता है।

राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

कितने समुच्चयों से, कितने आधारों से और कैसे

कई तत्व ऐसी अवस्थाओं में विघटित होते हैं? वे विघटित होते हैं।

4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

354. भावना समूह इन अवस्थाओं से अलग है; बोध

समूह; मानसिक गठन समूह; चेतना समूह;

मन का आधार इन अवस्थाओं से अलग है। वे अवस्थाएँ हैं

इन अवस्थाओं से विरक्त। . . . वे विरक्त हैं

1 समुच्चय, 10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (5).

355. नेत्र आधार . . . मूर्त वस्तु आधार ; नेत्र तत्व . . . मूर्त

ऑब्जेक्ट तत्व इन अवस्थाओं से अलग है। वे अवस्थाएँ हैं

इन अवस्थाओं से विरक्त। . . . वे विरक्त हैं

1 आधार और 7 तत्वों से बने 4 समुच्चय; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (20)।

356. नेत्र चेतना तत्व . . . मन चेतना तत्व;

मूल सत्य; पथ सत्य इन अवस्थाओं से विरक्त है।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे इनसे विरक्त हैं।

1 समुच्चय, 10 क्षारकों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (9).

357. समाप्ति सत्य; दृष्टि . . . शरीर . . स्त्री

पुरुष संकाय; पुरुष संकाय इन अवस्थाओं से अलग है।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे इनसे विरक्त हैं।

1 आधार और 7 तत्वों से बने 4 समुच्चय; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (8).

358. मन की क्षमता इन अवस्थाओं से अलग है। वे अवस्थाएँ

इन अवस्थाओं से अलग हो जाते हैं। वे 1 समुच्चय से अलग हो जाते हैं।

10 क्षारकों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (1).

359. शारीरिक सुख का अनुभव; शारीरिक पीड़ा का अनुभव; मानसिक आनंद

शोक की अनुभूति इन अवस्थाओं से असंबद्ध होती है।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे इनसे विरक्त हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (4) से अलग हो गया।

360. उदासीनता की क्षमता इन अवस्थाओं से अलग है।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे इनसे विरक्त हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 11 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

361. आस्था शक्ति; ऊर्जा शक्ति; जागरूकता शक्ति; एकाग्रता

ज्ञान की क्षमता; बुद्धि की क्षमता; मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे नहीं पता था;

उच्चतर अनुभूति की क्षमता; वह जिसने जान लिया है

क्षमता; अज्ञान; अज्ञान से ग्रस्त। संरचनाएँ हैं

इन अवस्थाओं से विरक्त। वे अवस्थाएँ विरक्त हैं

ये अवस्थाएँ। वे 1 समुच्चय से, 10 आधारों से अलग हो जाती हैं।

और 16 तत्वों से; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित और

1 तत्व (10).

362. निर्माण द्वारा वातानुकूलित। चेतना; द्वारा वातानुकूलित

6 आधार। संपर्क; संपर्क द्वारा वातानुकूलित। भावना अलग हो जाती है।

इन राज्यों से। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे 1 समूह से, 10 आधारों से और 10 से अलग हो जाते हैं

तत्व; 1 आधार और 1 तत्व (3) से आंशिक रूप से अलग हो गए।

363. भावना से प्रेरित। लालसा; लालसा से प्रेरित।

आसक्ति; कर्म इन अवस्थाओं से विरक्त है।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे इनसे विरक्त हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 16 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (3) से अलग हो गया।

364. सूक्ष्म पदार्थ का बनना इन अवस्थाओं से अलग है।

वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे नहीं हैं

किसी भी समुच्चय से पृथक, किसी भी आधार से पृथक नहीं;

वे 3 तत्वों (1) से अलग हो जाते हैं।

365. अगोचर विकास; एक-समूह विकास;

विलाप इन अवस्थाओं से अलग है। वे अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हैं।

इन अवस्थाओं से। वे 4 समुच्चयों से अलग हो जाते हैं,

1 आधार और 7 तत्वों से; 1 आधार से आंशिक रूप से वियोजित और

1 तत्व (3) से।

366. अमूर्त विकास; न तो बोध और न ही

अबोधगम्य बनना; चार-समूह बनना; शोक;

पीड़ा; शोक; निराशा; ध्यान का अभ्यास; अथक प्रयास; सड़क

मानसिक शक्ति; ध्यान; असीम; 5 शक्तियाँ; 5 सामर्थ्य;

ज्ञानोदय के 7 कारक; आर्य अष्टांगिक मार्ग को अलग कर दिया गया है

इन राज्यों से। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे 1 समूह से, 10 आधारों से और 16 आधारों से अलग हो जाते हैं।

तत्व; 1 आधार और 1 तत्व (16) से आंशिक रूप से अलग हो गए।

367. संपर्क; भावना; बोध; इच्छाशक्ति; चेतना;

ध्यान इन अवस्थाओं से अलग है। वे अवस्थाएँ अलग हैं।

इन अवस्थाओं से। वे एक समूह से अलग हो जाते हैं।

10 आधारों और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्व से (6).

368. निर्णय इन अवस्थाओं से असंबद्ध है। वे अवस्थाएँ हैं

इन अवस्थाओं से अलग हो गए हैं। वे 1 समुच्चय से अलग हो गए हैं।

10 आधारों और 15 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्व से (1).

त्रिक

369. स्वस्थ अवस्थाएँ; अस्वस्थ अवस्थाएँ इनसे अलग होती हैं

ये अवस्थाएँ। वे अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से पृथक;

1 आधार और 1 तत्व (2) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

370. सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ; सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ

दर्द की अनुभूति से जुड़े लोग इन अवस्थाओं से अलग हो जाते हैं। वे अवस्थाएँ

इन अवस्थाओं से अलग हो जाते हैं। वे 1 समुच्चय से अलग हो जाते हैं।

10 क्षारकों और 15 तत्वों से बना; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (2).

371. ऐसी अवस्थाएँ जो न तो दर्दनाक और न ही दर्द से जुड़ी भावनाओं से संबंधित हैं।

सुखद अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे अवस्थाएँ अलग हैं।

इन अवस्थाओं से। वे एक समूह से अलग हो जाते हैं।

10 आधारों और 11 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

मैं आधार और 1 तत्व (1) से।

372. परिणामी अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हो जाती हैं।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे इनसे विरक्त हैं।

1 समुच्चय, 10 आधारों और 10 तत्वों से बना; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

373. परिणामी राज्यों को उत्पन्न करने वाले राज्य; भ्रष्ट और भ्रष्ट करने वाले

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे अवस्थाएँ अलग हैं।

इन अवस्थाओं से। वे 1 समुच्चय से अलग हो जाते हैं, से

10 क्षार और 16 तत्वों से बना; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित

और 1 तत्व (2) से।

374. वे अवस्थाएँ जो न तो परिणामी हैं और न ही परिणामी उत्पन्न करती हैं

अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से नहीं बल्कि अनुकूल परिस्थितियों से प्राप्त होती हैं।

आसक्ति इन अवस्थाओं से विरक्त है। वे अवस्थाएँ हैं

इन अवस्थाओं से विरक्त। वे किसी से भी विरक्त नहीं हैं।

ऐसे समुच्चय जो किसी भी आधार से अविभाजित नहीं होते; वे वियोजित होते हैं।

5 तत्वों से (2).

375. वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं और अनुकूल नहीं होतीं।

आसक्ति से; भ्रष्ट नहीं और भ्रष्ट करने वाली अवस्थाएँ इससे विरक्त हैं

ये राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

किसी भी समूह से अलग नहीं होते, किसी से अलग नहीं होते

आधार; वे 6 तत्वों (2) से अलग हो जाते हैं।

376. व्यावहारिक चिंतन और निरंतर चिंतन वाले राज्य हैं

इन अवस्थाओं से विरक्त। वे अवस्थाएँ विरक्त हैं

ये अवस्थाएँ। वे 1 समुच्चय से, 10 आधारों से अलग हो जाती हैं।

और 15 तत्वों से; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित और

1 तत्व (1).

377. व्यावहारिक चिंतन के बिना, लेकिन निरंतर चिंतन वाले राज्य;

परमानंद से युक्त अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से भिन्न होती हैं।

वे अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से पृथक हैं। वे पृथक हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

378. व्यावहारिक और निरंतर चिंतन के बिना राज्य

इन अवस्थाओं से विरक्त। वे अवस्थाएँ विरक्त हैं

ये अवस्थाएँ। ये किसी भी समूह से अलग नहीं हैं, न ही

किसी भी आधार से अलग हो गए; वे 1 तत्व (1) से अलग हो गए हैं।

379. आनंद से युक्त अवस्थाएँ इनसे विरक्त होती हैं।

वे राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 15 तत्वों से पृथक;

1 आधार और 1 तत्व (1) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

380. उदासीनता से ग्रस्त अवस्थाएँ इनसे विमुख होती हैं।

वे राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 11 तत्वों से पृथक;

1 आधार और 1 तत्व (1) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

381. प्रथम मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य; उच्चतर मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य

3 मार्ग; प्रथम मार्ग द्वारा जड़ सहित राज्यों का उन्मूलन;

उच्चतर तीन पथों द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्य; राज्य

पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ; निर्वाण की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ;

शिक्षार्थियों से संबंधित; अरहत्ता से संबंधित राज्य; उच्च

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे अवस्थाएँ अलग हैं।

इन अवस्थाओं से। वे 1 समुच्चय से अलग हो जाते हैं, से

10 क्षार और 16 तत्वों से बना; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित

और 1 तत्व (9) से।

382. अतुलनीय अवस्थाएँ; उच्च अवस्थाएँ विरक्त होती हैं

ये राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

किसी भी समूह से अलग नहीं होते, किसी से अलग नहीं होते

क्षार; वे 6 तत्वों से वियोजित होते हैं(2)

383. सीमित वस्तुओं वाले राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे अलग हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व(1) से।

384. उच्च उद्देश्यों वाले राज्य; अतुलनीय उद्देश्यों वाले राज्य;

निम्न अवस्था वाले राज्य; गलत विचारों के कारण नियति निर्धारित कर चुके राज्य;

सही दृष्टिकोणों के कारण निश्चित नियति के साथ; पथ वस्तुओं वाले राज्य;

पथ द्वारा निर्धारित राज्य; पथ द्वारा नियंत्रित राज्य

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं।

ये अवस्थाएँ। वे 1 समूह से अलग हो जाती हैं। 10 आधारों से।

और 16 तत्वों से; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित और

1 तत्व(8).

385. जो अवस्थाएँ उत्पन्न नहीं हुई हैं, वे इन अवस्थाओं से विरक्त हैं।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विच्छेदित हैं। वे विच्छेदित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

5 तत्वों से अलग किया गया (1).

386. भूतकाल के कर्मों वाले राज्य; आंतरिक कर्मों वाले राज्य;

बाह्य वस्तुओं वाले राज्य; आंतरिक और बाह्य वस्तुओं वाले राज्य

वस्तुएँ इन अवस्थाओं से अलग हो जाती हैं। वे अवस्थाएँ अलग हो जाती हैं।

इन अवस्थाओं से। वे 1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो जाते हैं।

387. वर्तमान उद्देश्यों वाले राज्य; आंतरिक उद्देश्यों वाले राज्य;

बाह्य वस्तुओं वाले राज्य; आंतरिक और बाह्य वस्तुओं वाले राज्य

वस्तुएँ इन अवस्थाओं से अलग हो जाती हैं। वे अवस्थाएँ हैं

इन अवस्थाओं से अलग हो गए। वे 4 समुच्चयों से अलग हो गए हैं,

1 आधार और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्वों से (2).

दोहे

389. वे अवस्थाएँ जो मूल हैं; वे अवस्थाएँ जिनके सहबद्ध मूल हैं;

वे अवस्थाएँ जो मूलों से संबंधित हैं; वे अवस्थाएँ जो स्वयं मूल हैं

और साथ ही संबंधित मूल भी हैं; वे राज्य जिनके संबंधित मूल हैं

लेकिन मूल नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और उनसे भी जुड़ी हुई हैं

मूल अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो मूल अवस्थाओं से संबंधित हैं लेकिन स्वयं मूल अवस्थाएँ नहीं हैं;

वे अवस्थाएँ जो मूल नहीं हैं, लेकिन उनसे संबद्ध मूल हैं, विच्छेदित होती हैं।

इन राज्यों से। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे 1 समूह से, 10 आधारों से और 16 आधारों से अलग हो जाते हैं।

तत्व; 1 आधार और 1 तत्व (8) से आंशिक रूप से अलग हो गए।

390. वे अवस्थाएँ जो 4 कारणों से उत्पन्न नहीं होतीं; वे अवस्थाएँ जो इनसे प्रभावित नहीं होतीं

4 कारण; दृश्यता वाले राज्य; प्रभाव वाले राज्य; राज्य

जिनमें भौतिक परिवर्तन होते हैं, वे इन अवस्थाओं से अलग हो जाते हैं।

वे अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से पृथक हैं। वे पृथक हैं।

4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (5) से अलग हो गया।

301. जो अवस्थाएँ अलौकिक हैं, वे इनसे विरक्त हैं।

वे राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे नहीं हैं

किसी भी समुच्चय से पृथक, किसी भी आधार से पृथक नहीं;

वे 6 तत्वों (1) से अलग हो जाते हैं।

392. वे अवस्थाएँ जो कलंक हैं; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हैं

दोष; वे राज्य जो दोष भी हैं और दोषों के शिकार भी;

वे अवस्थाएँ जो रोगग्रस्त भी हैं और रोगों से संबंधित भी हैं;

जो घावों से जुड़े होते हैं लेकिन घाव नहीं होते, उन्हें अलग माना जाता है।

इन राज्यों से। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

अवस्थाएँ। वे 1 समुच्चय से, 10 आधारों से अलग हो जाते हैं और

16 तत्वों से; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित और

1 तत्व (5).

393. वे राज्य जो संक्षारण के शिकार नहीं हैं; वे राज्य जो

कैंकर से अलग हो गए हैं और कैंकर के विषय नहीं हैं, वे अलग हो गए हैं

इन राज्यों से। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

अवस्थाएँ। वे किसी भी समूह से अलग नहीं हैं, पृथक नहीं हैं।

किसी भी आधार से; वे 6 तत्वों (2) से अलग हो जाते हैं।

394. वे राज्य जो बंधन हैं... वे राज्य जो बंधन हैं... राज्य

जो बाढ़ हैं... राज्य जो बंधन हैं... राज्य जो हैं

बाधाएँ... ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो हैं

गलतफहमियों से जुड़ा हुआ; ऐसी अवस्थाएँ जो दोनों ही गलतफहमियाँ हैं

और गलतफहमियों के विषय इनसे अलग हो जाते हैं

वे राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से पृथक;

1 आधार और 1 तत्व (38) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

395. वे राज्य जो गलतफहमियों के विषय नहीं हैं; राज्य

जो गलतफहमियों से अलग हैं और वस्तुएँ नहीं हैं

गलतफहमियों का इन अवस्थाओं से कोई संबंध नहीं है।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विच्छेदित हैं। वे विच्छेदित नहीं हैं।

किसी भी समुच्चय से, किसी भी आधार से अविभाजित; वे हैं

6 तत्वों (2) से अलग हो गया।

396. वे अवस्थाएँ जिनमें वस्तुएँ होती हैं; वे अवस्थाएँ जो चेतना होती हैं;

वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हैं

चेतना; चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो चेतना से जुड़ी हुई हैं और चेतना द्वारा उत्पन्न होती हैं;

वे राज्य जो इससे जुड़े हुए हैं, इससे उत्पन्न होते हैं और

चेतना के साथ उत्पन्न होती हैं; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी होती हैं,

चेतना से उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ क्रमिक रूप से उभरते हैं, वे विच्छेदित होते हैं।

इन राज्यों से। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

अवस्थाएँ। वे 1 समुच्चय से, 10 आधारों से अलग हो जाते हैं और

10 तत्वों से; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित और

1 तत्व (8).

397. वे अवस्थाएँ जिनका कोई उद्देश्य नहीं होता; वे अवस्थाएँ जो विच्छेदित होती हैं

चेतना से; वे अवस्थाएँ जो चेतना से जुड़ी नहीं हैं;

व्युत्पन्न अवस्थाएँ इनसे विमुख होती हैं

वे राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे

4 समुच्चयों, 1 आधार और 7 तत्वों से पृथक;

1 आधार और 1 तत्व (4) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

398. आसक्ति से प्राप्त न होने वाली अवस्थाएँ इससे विरक्त होती हैं

ये राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

किसी भी समूह से अलग नहीं होते, किसी से अलग नहीं होते

आधार; वे 5 तत्वों (1) से अलग हो जाते हैं।

399. आसक्ति से ग्रस्त अवस्थाएँ... भ्रष्ट अवस्थाएँ;

भ्रष्ट राज्य; भ्रष्टाचार से जुड़े राज्य;

ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी;

ऐसे राज्य जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचार से ग्रसित दोनों हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्टाचार नहीं हैं; ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार भी हैं।

और भ्रष्टाचार से जुड़े हुए; वे राज्य जो इससे जुड़े हुए हैं

भ्रष्टाचार से जुड़े हुए हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं, इनसे अलग हैं।

वे राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 16 तत्वों से पृथक;

1 आधार और 1 तत्व (15) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

400. वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं; वे राज्य जो

वे भ्रष्टाचार से अविभाजित हैं और भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं।

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं।

ये अवस्थाएँ। ये किसी भी समूह से अलग नहीं हैं, न ही

किसी भी आधार से अलग हो गए; वे 6 तत्वों (2) से अलग हो गए हैं।

401. प्रथम मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य; उच्चतर मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य

3 मार्ग; प्रथम मार्ग द्वारा जड़ सहित सभी अवस्थाओं का उन्मूलन;

उच्चतर तीन पथों द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्य विच्छेदित हो जाते हैं।

इन राज्यों से। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

अवस्थाएँ। वे 1 समुच्चय से, 10 आधारों से अलग हो जाते हैं और

16 तत्वों से; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित और

1 तत्व (4).

402. व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य; निरंतर चिंतन वाले राज्य

ये अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं।

ये अवस्थाएँ। वे 1 समुच्चय से, 10 आधारों से अलग हो जाती हैं।

और 16 तत्वों से; 1 क्षार से आंशिक रूप से वियोजित और

1 तत्व (2).

403. व्यावहारिक विचार के बिना राज्य; निरंतर विचार के बिना राज्य-

विचार इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे अवस्थाएँ अलग हैं।

इन अवस्थाओं से। वे किसी भी समूह से अलग नहीं होते हैं।

किसी भी आधार से अलग नहीं; वे अलग हो गए हैं

1 तत्व (2).

404. परमानंद की अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो इसके साथ होती हैं

परमानंद इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे अवस्थाएँ अलग हैं।

इन अवस्थाओं से। वे एक समूह से अलग हो जाते हैं।

10 आधारों और 16 तत्वों से; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार और 1 तत्व (2) से।

405. आनंद से युक्त अवस्थाएँ इससे विरक्त होती हैं

ये राज्य। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

1 समूह से, 10 आधारों से और 15 आधारों से अलग हो जाते हैं

तत्व; 1 आधार और 1 तत्व (1) से आंशिक रूप से अलग।

406. उदासीनता से युक्त अवस्थाएँ वियोगी होती हैं।

इन राज्यों से। वे राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे 1 समूह से, 10 आधारों से और 11 आधारों से अलग हो जाते हैं।

तत्व; 1 आधार से आंशिक रूप से अलग, और 1 तत्व (1) से।

407. वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित नहीं हैं;

जो अस्तित्व के चक्र में शामिल नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो

इन अवस्थाओं से परे और इनसे अलग नहीं हैं। वे अवस्थाएँ

इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे इनसे विरक्त नहीं हैं।

कोई भी समुच्चय, जो किसी भी आधार से अविभाजित न हो; वे हैं

6 तत्वों (3) से अलग हो गया।

408. वे अवस्थाएँ जो सूक्ष्म-पदार्थ तल से संबंधित हैं; वे अवस्थाएँ जो

अमूर्त तल से संबंधित; वे अवस्थाएँ जो इससे बाहर निकलती हैं

अस्तित्वों का चक्र; जिन राज्यों का भाग्य निश्चित था, वे इसके बाद हार मान गए।

मृत्यु या उनके स्वयं घटित होने के बाद; वे अवस्थाएँ जो कारण हैं

विलाप इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे अवस्थाएँ

इन अवस्थाओं से अलग

कितने समुच्चयों से, कितने आधारों से और कैसे

कई तत्व ऐसी अवस्थाओं में विघटित होते हैं? वे विघटित होते हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (5) से अलग हो गया।

स्मृति सहायक

अध्याय VI के समान।

अध्याय X की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: पदार्थ के समुच्चय जैसी 250 विखंडित अवस्थाएँ

और इसी प्रकार अध्याय VI में वर्णित विषय भी इसी विषयवस्तु का हिस्सा हैं।

इस अध्याय का।

“ये राज्य” और “वे राज्य”: वे राज्य जो हैं

जांच की स्थिति से अलग किए गए लोगों को पहले "ये" के रूप में लिया जाता है

राज्यों” और फिर पहले “उन राज्यों” के रूप में। फिर वे राज्य जो

पहले से अलग किए गए “उन राज्यों” को दूसरे के रूप में लिया जाता है

“ये अवस्थाएँ” और “वे अवस्थाएँ”। वियोजन और आंशिक

बाद की अवस्थाओं के समुच्चय, क्षार और तत्वों से वियोजन

फिर उन्हें ढूंढ लिया जाता है।

चार्ट को कैसे पढ़ें: पदार्थ का समुच्चय केवल उदाहरण के तौर पर लिया गया है।

पदार्थ का समूह इन अवस्थाओं (4 मानसिक समूहों) से अलग हो जाता है।

वे अवस्थाएँ (4 मानसिक समूह) इससे अलग हो जाती हैं

ये अवस्थाएँ (विषय 28, निर्वाण)।

कितने समुच्चयों से, कितने आधारों से और कैसे

कई तत्व वे अवस्थाएँ हैं (पदार्थ 28, निर्वाण) जो विघटित हो चुकी हैं?

वे 4 समूहों (4 मानसिक समूहों) से अलग हैं,

1 आधार (मन का आधार) और 7 तत्वों (चेतना के 7 तत्व) से।

नोट: इस अध्याय की व्याख्या में कहा गया है कि निर्वाण

सूक्ष्म पदार्थ के समान है (निब्बाणं पण सुखरूप-गतिका)।

मेवा)। कुछ लोगों ने इसका गलत अर्थ निकाला है कि इसका अर्थ है निर्वाण

यह सूक्ष्म पदार्थ जितना ही सूक्ष्म है। टिप्पणीकार का यह तात्पर्य नहीं था कि

इसे इसी रूप में लिया जाना चाहिए। वह यह बताना चाहता था कि

क्योंकि निर्वाण और 16 सूक्ष्म भौतिक अवस्थाओं दोनों को वर्गीकृत किया गया है

संज्ञेय आधार और संज्ञेय तत्व के अंतर्गत, वे इस मामले में समान हैं।

आदर करना।

उप-टीका में यह कहा गया है कि विशेषताओं

निर्वाण और सूक्ष्म पदार्थ को दर्शाया नहीं गया है, बल्कि यह दर्शाया गया है कि निर्वाण क्या है।

आंशिक पृथक्करण में लिया जा सकता है और इसलिए, वे समान हैं।

इस संबंध में।

उत्तरों के प्रकार: उत्तरों के 9 प्रकार हैं। संख्याएँ

जिन राज्यों के उत्तर समान हैं, उनकी सूची नीचे दी गई है:-

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 353 (1), 355 (20), 357 (8), 365 (3), 388 (2), 390 (5), 397 (4)	43
2. 354 (5), 358 (1), 362 (3), 367 (6), 372 (1), 383 (1), 387 (4) 396 (8)	29
3. 356 (9), 359 (4), 361 (10), 363 (3), 366 (16), 369 (2), 373 (2) 377 (2), 381 (9), 384 (8), 386 (2), 389 (8), 392 (5), 394 (28) 399(18),401(4),404(2),408(5)	132

4. 360 (1), 371 (1), 380 (1), 406 (1)	4
5. 364 (1)	1
6. 368 (1), 370 (2), 376 (1), 379 (1), 402 (2), 405 (1)	8
7. 374 (2), 385 (1), 398 (1)	4
8. 375 (2), 382 (2), 391 (1), 393 (2), 394 (10), 395 (2), 399 (2) 400 (2), 407 (3)	26
9. 378 (1), 403 (2)	3
	कुल 250

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 11: वर्गीकृत से संबद्ध और पृथक

8 प्रश्न और उत्तर

409. उत्पत्ति सत्य को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है; पथ सत्य है

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

क्या कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? वे जुड़े हुए हैं

3 समुच्चयों के साथ, 1 आधार के साथ और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से

1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व से संबंधित।

वे अवस्थाएँ कितनी अवस्थाओं से पृथक हैं? वे पृथक हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

410. महिला संकाय; पुरुष संकाय को इन राज्यों के अनुसार वर्गीकृत किया गया है

समान योगफल के तहत, समान आधार के तहत और समान के तहत

तत्व।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे अवस्थाएँ कितनी अवस्थाओं से पृथक हैं? वे पृथक हैं।

4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (2) से अलग हो गया।

411. शारीरिक सुख का अनुभव करने की क्षमता; शारीरिक पीड़ा का अनुभव करने की क्षमता; मानसिक आनंद

शोक संबंधी क्षमता को इन अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

समान समुच्चय, समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत...

वे 3 समुच्चयों, 1 आधार और 7 से जुड़े हैं।

तत्व; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे अवस्थाएँ कितनी अवस्थाओं से पृथक हैं? वे पृथक हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (4) से अलग हो गया।

412. उदासीनता की क्षमता को निम्नलिखित अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है:

समान समुच्चय, समान आधार के अंतर्गत और समान तत्व के अंतर्गत।

वे 3 समुच्चयों, 1 आधार और 2 के साथ जुड़े हुए हैं।

तत्व; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे अवस्थाएँ कितनी अवस्थाओं से पृथक हैं? वे पृथक हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 15 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

413. दोषपूर्ण आस्था; ऊर्जा क्षमता; जागरूकता क्षमता; एकाग्रता

ज्ञान की क्षमता; बुद्धि की क्षमता; मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे नहीं पता था;

उच्चतर अनुभूति की क्षमता; वह जिसने जान लिया है

क्षमता; अज्ञान; अज्ञान से ग्रस्त, संरचनाएँ;

6 आधारों द्वारा नियंत्रित। संपर्क; भावना द्वारा नियंत्रित। लालसा;

लालसा से प्रेरित। आसक्ति; कर्म का विकास इसी प्रकार वर्गीकृत किया गया है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और एक ही तत्व के अंतर्गत। वे 3 समूहों से जुड़े हैं,

1 आधार और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से 1 समूह से संबद्ध।

1 आधार और 1 तत्व के साथ।

वे अवस्थाएँ कितनी अवस्थाओं से पृथक हैं? वे पृथक हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से;

1 आधार और 1 तत्व (14) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

414. विलाप को इन्हीं अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे राज्य कितनों से अलग हुए हैं? वे हैं

4 समुच्चयों, 1 आधार और 7 तत्वों से पृथक;

1 आधार और 1 तत्व (1) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

415. शोक; पीड़ा; दु:ख को निम्नलिखित अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

समान योग, समान आधार के अंतर्गत और समान के अंतर्गत

तत्व।

वे 3 समुच्चयों, 1 आधार और के साथ जुड़े हुए हैं।

7 तत्व; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे अवस्थाएँ कितनी अवस्थाओं से पृथक हैं? वे पृथक हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से;

1 आधार और 1 तत्व (3) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

416. निराशा; ध्यान का अनुप्रयोग; महान प्रयास; असीम;

5 क्षमताएँ; 5 शक्तियाँ; ज्ञानोदय के 7 कारक;

आर्य अष्टांगिक मार्ग; संपर्क; संकल्प; निर्णय; ध्यान;

वे राज्य जो मूल हैं; वे राज्य जो मूल हैं और जिनमें ये भी शामिल हैं

संबंधित मूल; वे राज्य जो मूल हैं और साथ ही संबंधित भी हैं

जड़ें; वे अवस्थाएँ जो रोग हैं; वे अवस्थाएँ जो रोग हैं।

और दोष के कारक; वे अवस्थाएँ जो दोष भी हैं और उनसे संबंधित भी हैं

घावों से युक्त; ऐसी अवस्थाएँ जो बंधन हैं... ऐसी अवस्थाएँ जो बंधन हैं...

ऐसे राज्य जो बाढ़ हैं... ऐसे राज्य जो बंधन हैं... ऐसे राज्य जो

बाधाएँ हैं... ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं... अवस्थाएँ

जो आसक्ति पैदा करते हैं... वे अवस्थाएँ जो भ्रष्ट हैं; वे अवस्थाएँ जो

ये दोनों ही भ्रष्टाचार हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी; ऐसे राज्य जो

भ्रष्टाचार और भ्रष्ट दोनों; ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रस्त हैं

भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों को इन राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत समान समुच्चय।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कितने के साथ

वे अवस्थाएँ कितने तत्वों से जुड़ी हैं? वे जुड़ी हुई हैं।

3 समुच्चयों के साथ, 1 आधार के साथ और 7 तत्वों के साथ; आंशिक रूप से

1 समुच्चय, 1 आधार और 1 तत्व से संबंधित।

वे अवस्थाएँ कितनी अवस्थाओं से पृथक हैं? वे पृथक हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से;

1 आधार और 1 तत्व (42) से आंशिक रूप से अलग हो गया।

स्मृति सहायक

अध्याय IV के समान।

अध्याय 11 की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: यहाँ भावना, मानसिक संरचना, समग्र, सूक्ष्म

पदार्थ और एक प्रकार की श्रव्य वस्तु, जिन्हें वर्गीकृत किया गया है

एक ही समूह के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत जांच की अवस्थाएँ

और अध्याय IV में दिए गए समान तत्व के अंतर्गत, अब इनका उपचार किया जाता है।

अध्याय VI में वर्णित सहभागिता और वियोग के अंतर्गत।

चार्ट को कैसे पढ़ें: मूल सत्य को उदाहरण के रूप में लिया गया है।

उत्पत्ति सत्य को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत किया गया है (शेष 49 अवस्थाओं के)।

मानसिक गठन समूह) उसी समूह के अंतर्गत (मानसिक

गठन समुच्चय), एक ही आधार (पहचानने योग्य आधार) के अंतर्गत और

एक ही तत्व (संज्ञानात्मक तत्व) के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व वे अवस्थाएँ हैं (मानसिक की शेष 49 अवस्थाएँ)

गठन समूह) संबंधित? वे 3 समूहों से संबंधित हैं

(शेष 3 मानसिक समुच्चय), 1 आधार (मन का आधार) के साथ

और 7 तत्वों (चेतना के 7 तत्व) के साथ; आंशिक रूप से संबद्ध

1 समुच्चय (मानसिक गठन समुच्चय) के साथ, 1 (संज्ञानात्मक) के साथ

आधार (उत्पत्ति सत्य, भावना और धारणा मानसिक कारक) और साथ

1 "(पहचानने योग्य) तत्व (मूल सत्य, भावना और मानसिक धारणा)

कारक)।

वे अवस्थाएँ कितनी हैं (मानसिक की शेष 49 अवस्थाएँ)

गठन समूह) वियोजित? वे 1 से वियोजित हैं

10 आधारों (10 स्थूल आधारों) से समुच्चय (पदार्थ का समुच्चय) और

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 12: संबद्ध के संबंध में वर्गीकृत और अवर्गीकृत

31 प्रश्न और उत्तर

417. भावना समूह इन अवस्थाओं से जुड़ा है; बोध

कुल योग; मानसिक गठन का कुल योग इनसे जुड़ा हुआ है

राज्यों।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? उन्हें वर्गीकृत किया गया है।

3 से कम समुच्चय, 2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (3)।

418. चेतना समूह; मन का आधार; नेत्र चेतना

तत्व... मन तत्व; मन चेतना तत्व इससे जुड़ा हुआ है।

इन राज्यों के साथ. . . . इन्हें 3 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

1 आधार और 1 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (9)।

419. उत्पत्ति सत्य; पथ सत्य इन अवस्थाओं से जुड़ा है।

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (2)।

420. मन की क्षमता इन अवस्थाओं से जुड़ी होती है। वे हैं

इसे 3 समुच्चयों, 1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (1)।

421. शारीरिक सुख का अनुभव; शारीरिक पीड़ा का अनुभव; मानसिक आनंद

शोक की क्षमता इन अवस्थाओं से जुड़ी होती है। वे हैं

इन्हें 3 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (4)।

422. उदासीनता की क्षमता इन अवस्थाओं से जुड़ी होती है। वे हैं

इसे 3 समुच्चयों, 2 आधारों और 7 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 11 तत्वों के अंतर्गत (1)।

423. आस्था शक्ति; ऊर्जा शक्ति; जागरूकता शक्ति; एकाग्रता

ज्ञान की क्षमता; बुद्धि की क्षमता; वह क्षमता जो मुझे वह सब कुछ जानने की क्षमता प्रदान करती है जो मुझे पहले नहीं पता था;

उच्चतर अनुभूति की क्षमता; वह जिसने जान लिया है

क्षमता; अज्ञान; अज्ञान से प्रेरित, संरचनाएँ हैं

इन राज्यों से संबद्ध। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (10)।

424. गठन द्वारा वातानुकूलित। चेतना इससे जुड़ी है

इन राज्यों को 3 समूहों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (1)।

425. 6 आधारों द्वारा नियंत्रित। संपर्क इनसे जुड़ा हुआ है।

राज्यों को 4 समूहों और 2 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

8 तत्वों से कम।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (1)।

426. संपर्क द्वारा नियंत्रित। भावना इनसे जुड़ी होती है।

राज्यों को 3 समूहों और 2 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

8 तत्वों से कम।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (1)।

427. भावना से प्रेरित। लालसा; लालसा से प्रेरित।

आसक्ति; कर्म भाव इन अवस्थाओं से जुड़ा हुआ है।

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (3)।

428. शोक; पीड़ा; दु:ख इन अवस्थाओं से संबंधित है।

इन्हें 3 समूहों, 2 आधारों और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (3)।

429. निराशा; ध्यान का प्रयोग; बहुत प्रयास आवश्यक है

इन राज्यों से संबद्ध। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (3)।

430. मानसिक शक्ति का मार्ग इन अवस्थाओं से जुड़ा है।

इन्हें 3 समूहों, 1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (1)।

431. झाना इन राज्यों से संबंधित है। इन्हें वर्गीकृत किया गया है।

3 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (1)।

432. असीमित; 5 क्षमताएँ; 5 सामर्थ्य; 7 कारक

ज्ञानोदय; आर्य अष्टांगिक मार्ग इन अवस्थाओं से जुड़ा हुआ है।

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (5)।

433. संपर्क; इच्छा; ध्यान इन अवस्थाओं से जुड़ा है।

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

8 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (3)।

434. भावना; बोध इन अवस्थाओं से जुड़ा है। वे हैं

इन्हें 3 समुच्चयों, 2 आधारों और 8 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (2)।

435. चेतना इन अवस्थाओं से जुड़ी है। वे हैं

इसे 3 समुच्चयों, 1 आधार और 1 तत्व के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? 1. वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (1)।

436. निर्णय इन राज्यों से संबंधित है। इन्हें वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 15 तत्वों के अंतर्गत (1)।

त्रिक

437. सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ; सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ

दर्द भरी अनुभूति के साथ; ऐसी अवस्थाएँ जो ऐसी अनुभूति से जुड़ी होती हैं जो न तो दर्द भरी होती हैं और न ही दर्द भरी।

न तो दर्दनाक और न ही सुखद; व्यावहारिक विचार और निरंतरता के साथ अवस्थाएँ

विचार; व्यावहारिक विचार के बिना लेकिन निरंतर विचार से युक्त अवस्थाएँ;

परमानंद से युक्त अवस्थाएँ; साथ में स्थित अवस्थाएँ

आनंद; उदासीनता से जुड़ी अवस्थाएँ इससे संबंधित हैं

इन राज्यों को 1 समूह और 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (8)।

438. वे अवस्थाएँ जो मूल हैं; वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और साथ ही

संबद्ध मूल हैं; वे राज्य जो मूल हैं और संबद्ध भी हैं

जड़ों वाले इन राज्यों से जुड़े होते हैं। इन्हें वर्गीकृत किया जाता है।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (3)।

439. वे अवस्थाएँ जिनके सहबद्ध मूल हैं लेकिन वे स्वयं मूल नहीं हैं; अवस्थाएँ

जो जड़ों से संबंधित हैं लेकिन स्वयं जड़ नहीं हैं; वे राज्य जो

ये मूल नहीं हैं, लेकिन इनसे संबंधित मूल हैं।

राज्यों को 1 समुच्चय, 1 आधार और 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (3)।

440. वे अवस्थाएँ जो कलंक हैं; वे अवस्थाएँ जो दोनों प्रकार से कलंक हैं

और दोष के कारक; वे अवस्थाएँ जो दोष भी हैं और उनसे संबंधित भी हैं

इन अवस्थाओं से जुड़े घावों के साथ-साथ कैंकर भी होते हैं। इन्हें वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (3)।

441. वे अवस्थाएँ जो कैंकर रोग से संबंधित हैं लेकिन स्वयं कैंकर रोग नहीं हैं

इन राज्यों से संबंधित हैं। इन्हें 1 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

एग्रीगेट, 1 बेस के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (1)।

442. वे राज्य जो बंधन हैं... वे राज्य जो बंधन हैं... राज्य

जो बाढ़ हैं... राज्य जो बंधन हैं... राज्य जो हैं

बाधाएँ... ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो

दोनों ही गलतफहमियां और गलतफहमियों के विषय हैं।

इन राज्यों से संबद्ध। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (22)।

443. गलतफहमियों से जुड़े राज्य संबंधित हैं

इन राज्यों के साथ। इन्हें 1 समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

1 आधार और 1 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (1)।

444. चेतना की अवस्थाएँ इनसे जुड़ी होती हैं।

राज्यों को 3 समूहों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

2 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (1)।

445. वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं; वे अवस्थाएँ जो संबद्ध हैं

चेतना के साथ; चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो चेतना से जुड़ी हुई हैं और चेतना द्वारा उत्पन्न होती हैं;

वे राज्य जो जुड़े हुए हैं, उत्पन्न होते हैं

चेतना के साथ उत्पन्न होते हैं; वे अवस्थाएँ जो जुड़ी हुई हैं

चेतना के साथ, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होते हैं।

इन राज्यों से संबद्ध। इन्हें निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 11 तत्वों के अंतर्गत (6)।

446. आसक्ति से ग्रस्त अवस्थाएँ... भ्रष्ट अवस्थाएँ;

ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी;

ऐसे राज्य जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचार से ग्रसित दोनों हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार से जुड़े दोनों ही आपस में जुड़े हुए हैं।

इन राज्यों के साथ। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

2 आधार और 2 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (8).

447. वे राज्य जो भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्टाचार नहीं हैं;

जो भ्रष्टाचार से जुड़े हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं;

व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य; निरंतर चिंतन वाले राज्य;

परमानंद से ग्रस्त राज्य; वे राज्य जो परमानंद से युक्त हैं;

ऐसी अवस्थाएँ जिनमें आनंद निहित होता है; ऐसी अवस्थाएँ जो

इन अवस्थाओं के साथ उदासीनता भी जुड़ी होती है।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? उन्हें वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 1 तत्व के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत और 17 तत्वों के अंतर्गत (8)।

स्मृति सहायक

अध्याय XII की विधि और चार्ट * की व्याख्या

यहां वे राज्य हैं जो जांच के राज्य से जुड़े हुए हैं, जैसे कि

अध्याय IX में वर्गीकृत और अवर्गीकृत श्रेणियों को शामिल किया गया है।

आधार और तत्व। तारांकन चिह्न संबंधित अवस्थाओं को दर्शाता है।

वर्गीकृत और अवर्गीकृत किए जाने वाले। केवल वर्गीकृत ही शामिल हैं।

चार्ट में दर्शाए गए और शेष समुच्चय, आधार और तत्व

वे हैं जिन्हें टीएम वर्गीकृत किया गया है।

चार्ट को कैसे पढ़ें: भावों का समग्र रूप केवल उदाहरण के तौर पर लिया गया है।

इन अवस्थाओं के साथ समग्र भावना जुड़ी हुई है (चेतना 89,

मानसिक कारक 52 (भावना को छोड़कर = 51)।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन अवस्थाओं में कितने तत्व हैं (चेतना 89, मानसिक)

कारक 52 (भावना को छोड़कर = 51) वर्गीकृत? वे (चेतना)

89, मानसिक कारक 52 (भावना को छोड़कर = 51) को वर्गीकृत किया गया है

3 समुच्चय (बोध, मानसिक निर्माण और चेतना)

समुच्चय), 2 आधारों के अंतर्गत (संज्ञानात्मक आधार और मानसिक आधार) और

8 तत्वों के अंतर्गत (संज्ञानात्मक तत्व और 7 चेतना तत्व)।

वे कितने के अंतर्गत हैं (चेतना 89, मानसिक कारक 52)

भावना को छोड़कर = 51) वर्गीकृत नहीं? उन्हें इसके अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है

2 समूह (पदार्थ समूह और भावना समूह), 10 से कम

आधार (10 स्थूल आधार) और 10 से कम तत्व (10 स्थूल तत्व)।

उत्तरों के प्रकार: उत्तरों के 9 प्रकार हैं। संख्याएँ

जिन राज्यों के उत्तर समान हैं, उन्हें नीचे दर्शाया गया है:-

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 417 (3), 426 (1), 434 (2)	6
2. 418 (9), 420 (1), 424 (1), 430 (1), 435 (1), 444 (1)	14
3. 419 (2), 423 (10), 427 (3), 429 (3), 432 (5), 438 (3), 440 (3 442 (17), 446 (7)	53
4. 421 (4), 428 (3), 431 (1)	8
5. 422 (1)	1
6. 425 (1), 433 (3)	4
7. 436 (1)	1
8. 437 (8), 439 (3), 441 (1), 442 (5), 443 (1), 446 (1), 447 (8)	27
9. 445 (6)	6
	कुल 120

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> धातुकथा >> **अध्याय** 13
पालि संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 13: अवर्गीकृत से संबद्ध और पृथक

8 प्रश्न और उत्तर

448. पदार्थ समूह को इन अवस्थाओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

समान समुच्चय, समान आधार के अंतर्गत और समान तत्व के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

क्या कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? वे जुड़े हुए हैं

3 समुच्चयों के साथ; आंशिक रूप से 1 आधार और के साथ संबद्ध

1 तत्व।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो गया।

449. संज्ञेय आधार को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है; संज्ञेय

तत्व; स्त्री शक्ति; पुरुष शक्ति; जीवन शक्ति; द्वारा निर्धारित

चेतना, मानसिक-भौतिकता; अगोचर

बनना; एक-समूह बनना; जन्म; वृद्धावस्था; मृत्यु है

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत... वे इससे जुड़े हुए हैं

3 समुच्चय; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (11) से अलग हो गया।

450. अमूर्त विकास; न तो अनुभूति और न ही अअनुभूति

विकास; चार-समूह विकास; मानसिक शक्ति का मार्ग

इन राज्यों के साथ समान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है,

समान आधार और समान तत्व के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे इनसे विमुख हैं।

1 आधार और 7 तत्वों से बने 4 समुच्चय; आंशिक रूप से वियोजित

1 आधार से और 1 तत्व से (4).

त्रिक

451. स्वास्थ्यवर्धक अवस्थाएँ; अस्वस्थ अवस्थाएँ; संबंधित अवस्थाएँ

सुखद अनुभूति के साथ; पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ; अवस्थाएँ

ऐसी भावना से जुड़ा हुआ जो न तो दर्दनाक है और न ही सुखद;

परिणामी अवस्थाएँ; परिणामी अवस्थाएँ उत्पन्न करने वाली अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो

ये आसक्ति से प्राप्त नहीं होते और आसक्ति के लिए अनुकूल भी नहीं होते; भ्रष्ट

और भ्रष्ट राज्यों का निर्माण; न तो भ्रष्ट और न ही भ्रष्ट राज्यों का निर्माण;

व्यावहारिक और निरंतर चिंतन वाले राज्य; व्यावहारिक और निरंतर चिंतन से रहित राज्य

व्यावहारिक चिंतन लेकिन निरंतर चिंतन के साथ; राज्यों के साथ

परमानंद से; आनंद से युक्त अवस्थाएँ; साथ में अवस्थाएँ

उदासीनता द्वारा; प्रथम मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य; समाप्त किए गए राज्य

उच्चतर 3 पथों द्वारा; प्रथम द्वारा जड़ सहित राज्यों का उन्मूलन किया गया

पथ; उच्चतर 3 पथों द्वारा जड़ सहित राज्यों का उन्मूलन;

पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ; निर्वाण की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ;

शिक्षार्थियों से संबंधित राज्य; अरहट्टा से संबंधित राज्य;

उच्च कोटि के राज्य; अतुलनीय राज्य; सीमित उद्देश्यों वाले राज्य;

उच्च उद्देश्यों वाले राज्य; अतुलनीय उद्देश्यों वाले राज्य; निम्न

राज्य; उच्च राज्य; गलत कार्यों के कारण निश्चित भाग्य वाले राज्य

विचार; सही विचारों के कारण निश्चित भाग्य वाले राज्य; ऐसे राज्य जिनके

पथ ऑब्जेक्ट; पथ द्वारा निर्धारित अवस्थाएँ; पथ द्वारा नियंत्रित अवस्थाएँ

पथ द्वारा; भूतकाल कर्म वाले राज्य; भविष्यकाल कर्म वाले राज्य;

वर्तमान कर्म वाले राज्य; आंतरिक कर्म वाले राज्य; राज्य

बाह्य वस्तु सहित; आंतरिक और बाह्य वस्तु सहित अवस्थाएँ (41)

दोहे

वे राज्य जिनके मूल संबद्ध हैं; वे राज्य जो संबद्ध हैं

मूलों के साथ; वे राज्य जिनके संबद्ध मूल हैं लेकिन वे स्वयं मूल नहीं हैं;

वे अवस्थाएँ जो जड़ों से संबंधित हैं लेकिन स्वयं जड़ नहीं हैं;

जो मूल नहीं हैं लेकिन उनसे संबंधित मूल हैं, उन्हें वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और उसी तत्व के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (5) से अलग हो गया।

452. भौतिक परिवर्तन वाली अवस्थाओं को इस श्रेणी में नहीं रखा जाता है।

ये राज्य एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और

एक ही तत्व के अंतर्गत। वे 3 समूहों से जुड़े हैं;

आंशिक रूप से 1 आधार और 1 तत्व से संबद्ध।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (1) से अलग हो जाता है।

453. वे अवस्थाएँ जिनमें कोई भौतिक परिवर्तन नहीं होता; वे अवस्थाएँ जो

अलौकिक; वे अवस्थाएँ जो विकारों से मुक्त हैं; अवस्थाएँ

जो छालों से संबंधित हैं; वे राज्य जो इससे संबंधित हैं

कैंकर हैं लेकिन कैंकर नहीं हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो इससे अलग हैं

कैंकर और कैंकर की वस्तुएँ नहीं हैं (6)।

वे राज्य जो बंधनों के अधीन नहीं हैं... वे राज्य जो बंधनों के अधीन नहीं हैं

संबंधों के विषय... वे राज्य जो बाढ़ के विषय नहीं हैं... राज्य

जो बंधनों के विषय नहीं हैं... राज्य जो विषय नहीं हैं

बाधाएँ . . . (20).

वे राज्य जो गलतफहमियों के विषय नहीं हैं; वे राज्य जो

गलतफहमियों से जुड़े हुए; ऐसी अवस्थाएँ जो विच्छेदित हैं

गलतफहमियों से मुक्त हैं और गलतफहमियों के शिकार नहीं हैं;

जिन राज्यों में वस्तुएं हैं, उन्हें इन राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

समान योग, समान आधार के अंतर्गत और समान के अंतर्गत

तत्व।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (4) से अलग हो गया।

454. वे अवस्थाएँ जिनमें कोई वस्तु नहीं होती; वे अवस्थाएँ जो चेतना नहीं होतीं;

वे अवस्थाएँ जो चेतना से विरक्त हैं; अवस्थाएँ

जो चेतना से जुड़े नहीं हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो

चेतना द्वारा उत्पन्न; वे अवस्थाएँ जो साथ-साथ उत्पन्न होती हैं

चेतना; चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ;

बाह्य अवस्थाओं का वर्गीकरण नहीं किया जाता है; व्युत्पन्न अवस्थाओं को भी वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

इन राज्यों को एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत रखते हुए

और उसी तत्व के अंतर्गत।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

क्या कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? वे जुड़े हुए हैं

3 समुच्चयों के साथ; आंशिक रूप से 1 आधार और 1 के साथ संबद्ध

तत्व।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

1 समुच्चय से, 10 आधारों से और 10 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (9) से अलग हो जाता है।

455. वे अवस्थाएँ जो आसक्ति का विषय नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो

आसक्ति से संबंधित; आसक्ति से संबंधित अवस्थाएँ

लेकिन आसक्ति से मुक्त; वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से विरक्त हैं

और आसक्ति के विषय नहीं हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो आसक्ति के विषय नहीं हैं

भ्रष्टाचार; वे राज्य जो भ्रष्ट नहीं हैं; वे राज्य जो भ्रष्ट हैं

भ्रष्टाचार से जुड़े हुए; ऐसे राज्य जो भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हैं

भ्रष्टाचार; वे राज्य जो भ्रष्टाचार से जुड़े हैं लेकिन

भ्रष्टाचार नहीं हैं; वे राज्य जो भ्रष्टाचार से मुक्त हैं।

और भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं; वे राज्य जिनका नाश हो चुका है।

प्रथम मार्ग द्वारा; वे अवस्थाएँ जिनका उन्मूलन उच्चतर तीन मार्गों द्वारा होता है;

प्रथम पथ द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्य; राज्य

उच्चतर 3 पथों द्वारा जड़े उखाड़ दिए जाने के साथ-साथ; राज्यों के साथ

व्यावहारिक चिंतन; निरंतर चिंतन वाले राज्य;

परमानंद; परमानंद से युक्त अवस्थाएँ; ऐसी अवस्थाएँ जो

आनंद से युक्त; वे अवस्थाएँ जो आनंद से युक्त होती हैं

उदासीनता; वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित नहीं हैं;

वे अवस्थाएँ जो सूक्ष्म-पदार्थ तल से संबंधित हैं; वे अवस्थाएँ जो

अमूर्त तल से संबंधित; वे अवस्थाएँ जो इसमें शामिल नहीं हैं

अस्तित्वों का चक्र; वे अवस्थाएँ जो चक्र से निकलती हैं।

अस्तित्व; वे अवस्थाएँ जिनका नियति निश्चित थी, मृत्यु के बाद समाप्त हो गईं।

या उनके स्वयं घटित होने के बाद; ऐसी अवस्थाएँ जो परे के साथ नहीं हैं;

शोक का कारण बनने वाले राज्यों को इनमें वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही कुल योग के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत और एक ही आधार के अंतर्गत राज्य

वही तत्व।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व उन अवस्थाओं से जुड़े हैं? किसी से नहीं।

वे कितनों से विमुख हैं? वे विमुख हैं।

4 समुच्चयों से, 1 आधार से और 7 तत्वों से; आंशिक रूप से

1 आधार और 1 तत्व (28) से अलग हो गया।

स्मृति सहायक

अध्याय V (6) के समान।

अध्याय XIII की विधि और चार्ट की व्याख्या

विषयवस्तु: यहाँ उन राज्यों का उल्लेख है जिन्हें निम्न श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है।

एक ही समूह के अंतर्गत, एक ही आधार के अंतर्गत जांच की अवस्थाएँ

और अध्याय V में दिए गए समान तत्व के अंतर्गत, अब इनका उपचार किया जाता है।

अध्याय VI में वर्णित सहभागिता और वियोग के अंतर्गत। 130 में से

इस अध्याय में वर्णित राज्य, जिनमें से 16 राज्य निम्नलिखित श्रेणी में आते हैं,

आंतरिक और 114 बाहरी जांच के राज्यों के लिए।

चार्ट को कैसे पढ़ें: पदार्थ का समुच्चय केवल उदाहरण के तौर पर लिया गया है।

पदार्थ समूह को इन अवस्थाओं (चेतना) के साथ वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

एक ही समुच्चय (पदार्थ समुच्चय) के अंतर्गत, के अंतर्गत

समान आधार (10 स्थूल आधार और संज्ञेय आधार) और इसके अंतर्गत

समान तत्व (10 स्थूल तत्व और संज्ञेय तत्व)।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कैसे

कई तत्व उन अवस्थाओं (चेतना समूह) से जुड़े होते हैं?

वे 3 समूहों (शेष 3 मानसिक समूहों) से जुड़े हैं;

आंशिक रूप से 1 (संज्ञानात्मक) आधार (52 मानसिक) से संबद्ध

कारक) और 1 (संज्ञानात्मक) तत्व (52 मानसिक कारक) के साथ।

वे (चेतना समूह) कितने से अलग हुए हैं?

वे एक समूह (पदार्थ समूह) से अलग हो जाते हैं,

10 आधार (10 स्थूल आधार) और 10 तत्वों (10 स्थूल तत्व) से;

1 (संज्ञानात्मक) आधार (सूक्ष्म पदार्थ 16 और) से आंशिक रूप से अलग

निर्वाण) और 1 (ज्ञात) तत्व (सूक्ष्म पदार्थ 16 और

निर्वाण)।

उत्तरों के प्रकार: उत्तर दो प्रकार के होते हैं। संख्या

समान उत्तर वाले जांच राज्यों की सूची नीचे दी गई है:-

प्रश्न संख्याएँ	**राज्यों की संख्या**
1. 448 (1), 449 (11), 462 (1), 454 (9)	22
2. 450 (4), 451 (46), 453 (30), 455 (28)	108
	कुल 130

नोट: अध्याय V में उल्लिखित 257 जांच राज्यों में से केवल 130 राज्यों का ही उल्लेख किया गया है।

यहां इन पर चर्चा की गई है। इनमें से बाईस पदार्थ समूह के समान हैं।

और 108 निराकार बनने के समान हैं। शेष 127 अवस्थाएँ

अध्याय V के कुछ उपाख्यान, जैसे भावना समूह आदि, को इसमें शामिल नहीं किया गया है क्योंकि

वे राज्य, जिन्हें उनके साथ एक ही श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया गया है

एक ही आधार और एक ही तत्व के अंतर्गत एकत्रित होने वाले तत्व हैं

संबद्ध नहीं।

इसका एक उदाहरण नीचे भावना समूह के साथ दिया गया है।

कुल योग को इन अवस्थाओं के साथ वर्गीकृत नहीं किया गया है (12 सकल पदार्थ,

चेतना समूह) एक ही समूह (भावना समूह) के अंतर्गत,

एक ही आधार (संज्ञेय आधार) के अंतर्गत और एक ही तत्व के अंतर्गत

(पहचानने योग्य तत्व)।

कितने समुच्चयों के साथ, कितने आधारों के साथ और कितने के साथ

उन अवस्थाओं में कितने तत्व होते हैं (12 स्थूल पदार्थ, चेतना)

क्या वे कुल मिलाकर संबंधित हैं? या, वे कितनों से अलग हैं?

ऐसे सवालों का जवाब नहीं दिया जा सकता।

अनुवादक: यू नारदा

अध्याय 14: विच्छेदित पदार्थों के संबंध में वर्गीकृत और अवर्गीकृत

63 प्रश्न और उत्तर

1. **समुच्चय इत्यादि**

456. पदार्थ का समूह इन अवस्थाओं से अलग हो जाता है।

कितने समुच्चय, कितने आधारों के अंतर्गत और कितने के अंतर्गत

क्या ये तत्व उन राज्यों के अंतर्गत वर्गीकृत हैं? इन्हें निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चय, 2 आधारों से कम और 8 तत्वों से कम।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (1)।

467. भावना समूह इन अवस्थाओं से अलग है;

बोध समूह; मानसिक निर्माण समूह; चेतना

समग्र; मन का आधार; मन की क्षमता इन अवस्थाओं से अलग है।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? वे, को छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

1 समुच्चय, 11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत (6)।

458. आँख का आधार... मूर्त वस्तु आधार; आँख का तत्व... मूर्त

ऑब्जेक्ट तत्व इन अवस्थाओं से अलग हो जाता है। इन्हें वर्गीकृत किया जाता है।

4 से कम समुच्चय, 2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (20)।

459. नेत्र चेतना तत्व; कान चेतना तत्व;

नाक चेतना तत्व; जीभ चेतना तत्व; शरीर

चेतना तत्व; मन तत्व; मन चेतना तत्व

इन अवस्थाओं से विरक्त है। . . . वे, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

12 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

कितनों के अंतर्गत इन्हें वर्गीकृत नहीं किया गया है? इन्हें अवर्गीकृत नहीं किया गया है।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

उन्हें 1 तत्व (7) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

2. सत्य इत्यादि

460. पीड़ादायक सत्य इन अवस्थाओं से अलग है। . . . वे

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (1)।

461. उत्पत्ति सत्य; पथ सत्य इन अवस्थाओं से अलग है।

वे, निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

इन्हें 5 समूहों, 12 आधारों और 18 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (2) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

462. समाप्ति सत्य; नेत्र शक्ति... शरीर शक्ति; स्त्री

पुरुष संकाय; पुरुष संकाय इन अवस्थाओं से अलग है। वे हैं

इसे 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 8 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे नहीं हैं

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत (8)।

463. शारीरिक सुख का अनुभव; शारीरिक पीड़ा का अनुभव; मानसिक आनंद

शोक की अनुभूति इन अवस्थाओं से असंबद्ध होती है।

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्वों में वर्गीकृत।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (4) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

464. उदासीनता की क्षमता इन अवस्थाओं से अलग है। वे,

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 13 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

उन्हें 5 तत्वों (1) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

465. आस्था शक्ति; ऊर्जा शक्ति; जागरूकता शक्ति; एकाग्रता

ज्ञान की क्षमता; बुद्धि की क्षमता; मुझे वह सब पता चल जाएगा जो मुझे नहीं पता था;

उच्चतर अनुभूति की क्षमता; वह जिसने जान लिया है

क्षमता; अज्ञान; अज्ञान से ग्रस्त। संरचनाएँ हैं

इन अवस्थाओं से अलग होकर। उन्होंने निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (10) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

466. औपचारिक चेतना द्वारा वातानुकूलित; द्वारा वातानुकूलित

6 आधार, संपर्क; संपर्क द्वारा परिचालित, भावना अलग हो जाती है

इन राज्यों से। वे, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए

समुच्चयों को 1 समुच्चय के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है और

11 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत (3)।

467. भावना से प्रेरित। लालसा; लालसा से प्रेरित।

आसक्ति; कर्म इन अवस्थाओं से विरक्त है। वे,

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (3) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

468. पुनर्जन्म होना; प्रत्यक्ष अनुभव होना; पंचसमूह

बनना इन अवस्थाओं से अलग है। इन्हें निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 15 तत्वों के अंतर्गत (3)।

469. इंद्रियजन्य विकास इन अवस्थाओं से अलग है।

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 5 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 13 तत्वों के अंतर्गत (1)।

470. सूक्ष्म-पदार्थ का बनना; अगोचर बनना; एक-समूह

बनना; विलाप इन अवस्थाओं से अलग है। वे हैं

इसे 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 8 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (4)।

471. अमूर्त विकास; न तो अनुभूति और न ही अअनुभूति

बनना; चार-समूह बनना; शोक; पीड़ा;

दु:ख; निराशा; ध्यान का अभ्यास; अथक प्रयास; सड़क

मानसिक शक्ति; ध्यान; असीमित; 5 क्षमताएँ; 5 सामर्थ्य;

ज्ञानोदय के 7 कारक; आर्य अष्टांगिक मार्ग को अलग कर दिया गया है

इन राज्यों से। वे, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व के अंतर्गत गैर-वर्गीकृत नहीं है।

3. सात संपर्क समूह

472. संपर्क; भावना; बोध; इच्छाशक्ति; चेतना;

ध्यान इन अवस्थाओं से अलग है। निर्वाण को छोड़कर, वे सभी अवस्थाएँ इसमें शामिल नहीं हैं।

समुच्चयों के वर्गीकरण से, इन्हें 1 समुच्चय के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है,

11 से कम आधार और 11 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत (6)।

473. निर्णय इन राज्यों से अलग है। वे, अपवाद स्वरूप

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

5 समुच्चय, 12 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे किसी श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर अवर्गीकृत न किए गए कोई भी समूह;

उन्हें 1 तत्व (1) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

4. तिगुना बच्चे

474. स्वस्थ अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग होती हैं।

अस्वस्थ अवस्थाएँ; सुखद अनुभूति से जुड़ी अवस्थाएँ; अवस्थाएँ

दर्द की अनुभूति से जुड़े भाव इन अवस्थाओं से अलग होते हैं।

वे, निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

इन्हें 5 समूहों, 12 आधारों और 18 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (4) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

475. अनिर्धारित अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग होती हैं।

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (1)।

476. ऐसी अवस्थाएँ जो न तो दर्दनाक और न ही दर्द से जुड़ी भावनाओं से संबंधित हैं।

सुखद; परिणामी अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हो जाती हैं। वे,

निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए, वर्गीकृत किया गया है

5 से कम समुच्चय, 12 से कम आधार और 13 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

उन्हें 5 तत्वों (2) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

477. परिणामी राज्यों को उत्पन्न करने वाले राज्य; भ्रष्ट और भ्रष्ट करने वाले

राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों के वर्गीकरण के आधार पर, इन्हें 5 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

12 आधारों से कम और 18 तत्वों से कम।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (2) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

478. वे अवस्थाएँ जो न तो परिणामी हैं और न ही परिणामी उत्पन्न करती हैं

अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं बल्कि अनुकूल होती हैं

आसक्ति; वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त नहीं होतीं और अनुकूल नहीं होतीं।

आसक्ति से; भ्रष्ट न होने और भ्रष्ट न करने वाली अवस्थाएँ अविभाजित हैं।

इन राज्यों से। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

2 आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (4)।

479. वे अवस्थाएँ जो आसक्ति से प्राप्त होती हैं और अनुकूल होती हैं

आसक्ति इन अवस्थाओं से अलग होती है। इन्हें निम्न के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 15 तत्वों के अंतर्गत (1)।

480. भ्रष्ट नहीं बल्कि भ्रष्टाचार करने वाले राज्य इनसे अलग हैं।

राज्यों को 4 समूहों और 2 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (1)।

481. व्यावहारिक चिंतन और निरंतर चिंतन वाले राज्य हैं

इन अवस्थाओं से अलग होकर। उन्होंने निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

12 आधार और 17 तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

उन्हें 1 तत्व (1) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

482. व्यावहारिक चिंतन के बिना, लेकिन निरंतर चिंतन वाले राज्य;

परमानंद से भरी अवस्थाएँ; आनंद से भरी अवस्थाएँ

वे इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (3) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

483. व्यावहारिक और निरंतर चिंतन के बिना राज्य हैं

इन अवस्थाओं से अलग। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 आधारों के अंतर्गत और 3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 15 तत्वों के अंतर्गत (1)।

484. उदासीनता से युक्त अवस्थाएँ इनसे विरक्त होती हैं।

राज्यों। वे, निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

इन्हें 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

13 तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

उन्हें 5 तत्वों (1) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

485. प्रथम मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य; उच्चतर मार्ग द्वारा समाप्त किए गए राज्य

3 मार्ग; प्रथम मार्ग द्वारा जड़ सहित सभी अवस्थाओं का उन्मूलन;

उच्चतर तीन पथों द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्य; राज्य

पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ; निर्वाण की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ;

शिक्षार्थियों से संबंधित; अरहत्ता से संबंधित राज्य; उच्च

राज्य इन राज्यों से अलग हैं। वे, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों के वर्गीकरण के आधार पर, इन्हें 5 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (9) के अंतर्गत गैर-वर्गीकृत नहीं।

486. राज्य न तो प्रथम मार्ग से और न ही उच्चतर मार्ग से समाप्त हुए।

पथ; राज्य, जड़ों के साथ, प्रथम पथ द्वारा न तो मिटाए गए।

न ही उच्चतर तीन मार्गों द्वारा; न ही पुनर्जन्म और मृत्यु की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ

निर्वाण की ओर; ऐसी अवस्थाएँ जो न तो शिक्षार्थियों से संबंधित हैं और न ही अरहत्तों से;

सीमित अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग होती हैं। इन्हें वर्गीकृत किया जाता है।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (5)।

487. अतुलनीय अवस्थाएँ; उच्च अवस्थाएँ विरक्त होती हैं

इन राज्यों को 4 समूहों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (2)।

488. सीमित वस्तुओं वाले राज्य इन राज्यों से अलग हैं।

वे, निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 12 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

उन्हें 6 तत्वों (1) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

489. उच्च उद्देश्यों वाले राज्य; अतुलनीय उद्देश्यों वाले राज्य;

निम्न अवस्था वाले राज्य; गलत विचारों के कारण निश्चित भाग्य वाले राज्य;

सही दृष्टिकोणों के कारण निश्चित नियति के साथ; पथ वस्तुओं वाले राज्य;

पथ द्वारा निर्धारित राज्य; पथ द्वारा नियंत्रित राज्य

वे इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (8) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

490. मध्यम अवस्थाएँ; जिन अवस्थाओं का कोई निश्चित भाग्य नहीं होता, वे विच्छेदित होती हैं।

इन राज्यों से। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिनके अंतर्गत

2 आधार और 2 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (2)।

491. उत्पन्न हुई अवस्थाएँ; उत्पन्न नहीं हुई अवस्थाएँ; उत्पन्न होने वाली अवस्थाएँ;

भूतकाल की अवस्थाएँ; भविष्य की अवस्थाएँ; वर्तमान अवस्थाएँ; आंतरिक अवस्थाएँ;

बाह्य अवस्थाएँ; दृश्य और प्रभावकारी दोनों अवस्थाएँ; अदृश्य अवस्थाएँ

लेकिन प्रभाव डालने वाले इन अवस्थाओं से अलग हैं। उन्हें वर्गीकृत किया गया है।

4 से कम समुच्चय, 2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (10)।

492. भूतकाल कर्म वाले राज्य; भविष्यकाल कर्म वाले राज्य; राज्य

आंतरिक वस्तु के साथ; बाह्य वस्तु वाली अवस्थाएँ वियोजित होती हैं।

इन राज्यों से। वे, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार के अंतर्गत वर्गीकृत न होने वाले किसी भी समूह के अंतर्गत

और किसी भी तत्व (4) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

493. वर्तमान उद्देश्य वाले राज्य; आंतरिक और बाह्य उद्देश्य वाले राज्य

वस्तुएँ इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों के वर्गीकरण के आधार पर, इन्हें 5 समुच्चयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

12 से कम आधार और 12 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

उन्हें 6 तत्वों (2) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

5. दोहे

494. वे अवस्थाएँ जो मूल हैं; वे अवस्थाएँ जिनके सहबद्ध मूल हैं;

वे अवस्थाएँ जो मूलों से जुड़ी हैं; वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और

साथ ही संबद्ध मूल भी हैं; वे राज्य जिनके संबद्ध मूल हैं लेकिन

मूल नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो मूल हैं और मूलों से संबद्ध भी हैं;

वे अवस्थाएँ जो जड़ों से संबंधित हैं लेकिन स्वयं जड़ नहीं हैं;

जो मूल नहीं हैं, लेकिन उनसे संबद्ध मूल हैं, उन्हें अलग कर दिया जाता है।

इन राज्यों में से, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए।

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (8) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

495. वे अवस्थाएँ जिनकी कोई जड़ नहीं है; वे अवस्थाएँ जो विच्छेदित हैं

मूलों से; वे अवस्थाएँ जो न तो मूल हैं और न ही उनसे संबद्ध हैं

मूल अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग होती हैं। इन्हें निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (3)।

496. वे अवस्थाएँ जो 4 कारणों से उत्पन्न नहीं होतीं; वे अवस्थाएँ जो किसी शर्त से बंधी नहीं होतीं।

4 कारणों से; दृश्यता वाले राज्य; प्रभाव वाले राज्य; राज्य

जिनमें भौतिक परिवर्तन होता है; वे अवस्थाएँ जो अलौकिक हैं

इन अवस्थाओं से अलग। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (6)।

497. सांसारिक अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से विरक्त होती हैं।

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

2 तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (1)।

498. वे अवस्थाएँ जो कलंक हैं; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हैं

दोष; वे राज्य जो दोष भी हैं और दोषों के शिकार भी;

वे अवस्थाएँ जो रोगग्रस्त भी हैं और रोगों से संबंधित भी हैं;

जो घावों से जुड़े होते हैं लेकिन घाव नहीं होते, उन्हें अलग माना जाता है।

इन राज्यों से। वे, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (5) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

499. वे राज्य जो संक्षारण के शिकार हैं; वे राज्य जो

कैंकर से अलग; वे अवस्थाएँ जो कैंकर की वस्तु हैं लेकिन

ये रोग नहीं हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो रोगों से अलग हैं लेकिन

कैंकर की वस्तुएं इन अवस्थाओं से अलग हो जाती हैं। वे

इन्हें 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 2 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (4)।

500. वे राज्य जो संक्षारण से मुक्त हैं; वे राज्य जो

कैंकर से अलग हो गए हैं और कैंकर के विषय नहीं हैं, अलग हो गए हैं।

इन राज्यों से। इन्हें 4 समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है,

2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (2)।

501. वे राज्य जो बंधन हैं... वे राज्य जो बंधन हैं... राज्य

जो बाढ़ हैं... राज्य जो बंधन हैं... राज्य जो हैं

बाधाएँ... ऐसी अवस्थाएँ जो गलतफहमियाँ हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो

गलतफहमियों से जुड़े हैं; ऐसी अवस्थाएँ जो दोनों हैं

गलतफहमियों और गलतफहमियों के कारणों को अलग किया जाता है

इन राज्यों में से, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए।

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं (58)।

502. वे राज्य जो गलतफहमियों के शिकार हैं; वे राज्य जो

गलतफहमियों से अलग हैं; वे अवस्थाएँ जो वस्तुएँ हैं

गलतफहमियां हैं लेकिन गलतफहमियां नहीं हैं; ऐसी अवस्थाएं जो हैं

गलतफहमियों से अलग होते हुए भी वे स्वयं गलतफहमियों के शिकार होते हैं।

ये अवस्थाओं से अलग हैं। इन्हें निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (4)।

503. वे राज्य जो गलतफहमियों के विषय नहीं हैं; राज्य

जो गलतफहमियों से अलग हैं और वस्तुएँ नहीं हैं

गलतफहमियां इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे

इसे 4 समुच्चयों, 2 आधारों और 8 तत्वों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (2)।

504. वे अवस्थाएँ जिनमें वस्तुएँ होती हैं; वे अवस्थाएँ जो चेतना हैं;

वे अवस्थाएँ जो मानसिक कारक हैं; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी हैं

चेतना; चेतना से जुड़ी अवस्थाएँ;

वे अवस्थाएँ जो चेतना से जुड़ी हुई हैं और चेतना द्वारा उत्पन्न होती हैं;

वे अवस्थाएँ जो एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, एक दूसरे से उत्पन्न होती हैं और एक साथ अस्तित्व में आती हैं

चेतना के साथ; वे अवस्थाएँ जो इससे जुड़ी होती हैं, उत्पन्न होती हैं।

चेतना के साथ क्रमिक रूप से उत्पन्न होने वाले और उससे अलग हो जाते हैं

इन राज्यों में से, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए।

समुच्चयों को 1 समुच्चय के अंतर्गत, 11 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है और

11 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 1 आधार के अंतर्गत और 7 तत्वों के अंतर्गत (8)।

505. वे अवस्थाएँ जिनमें कोई वस्तु नहीं होती; वे अवस्थाएँ जो विच्छेदित होती हैं

चेतना से; वे अवस्थाएँ जो चेतना से जुड़ी नहीं हैं;

व्युत्पन्न अवस्थाएँ; अर्जित न की गई अवस्थाएँ

आसक्ति के कारण वे इन अवस्थाओं से विमुख हो जाते हैं। उन्हें वर्गीकृत किया जाता है।

4 से कम समुच्चय, 2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (5)।

506. आसक्ति से प्राप्त होने वाली अवस्थाएँ इससे विरक्त होती हैं

इन अवस्थाओं को 4 समूहों के अंतर्गत, 2 आधारों के अधीन वर्गीकृत किया गया है।

और 3 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 15 तत्वों के अंतर्गत (1)।

507. आसक्ति से भरी अवस्थाएँ... भ्रष्ट अवस्थाएँ;

भ्रष्ट राज्य; भ्रष्टाचार से जुड़े राज्य;

ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार से ग्रसित भी हैं और भ्रष्टाचार के शिकार भी;

ऐसे राज्य जो भ्रष्ट और भ्रष्टाचार से ग्रसित दोनों हैं; ऐसे राज्य जो

भ्रष्ट होते हुए भी भ्रष्टाचार नहीं; ऐसे राज्य जो भ्रष्टाचार भी हैं।

और भ्रष्टाचार से जुड़े हुए; वे राज्य जो इससे जुड़े हुए हैं

भ्रष्टाचार से ग्रसित लेकिन भ्रष्टाचार न होने वाले लोग इन राज्यों से असंबद्ध हैं।

उन्होंने, निब्बाना को समुच्चय के वर्गीकरण से बाहर रखते हुए,

इन्हें 5 समुच्चयों, 12 आधारों और 18 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं (19)।

508. वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार हैं; वे राज्य जो

भ्रष्ट नहीं; भ्रष्टाचार से मुक्त राज्य;

जो भ्रष्टाचार के विषय हैं, परन्तु स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं; राज्य

जो भ्रष्टाचार से असंबद्ध हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार के शिकार हैं।

ये अवस्थाओं से अलग हैं। इन्हें निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (5)।

509. वे राज्य जो भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं; वे राज्य जो

वे भ्रष्टाचार से अविभाजित हैं और भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं।

ये इन अवस्थाओं से अलग हैं। इन्हें 4 समूहों में वर्गीकृत किया गया है।

2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (2)।

510. प्रथम पथ द्वारा समाप्त किए गए राज्य; द्वारा समाप्त किए गए राज्य

उच्चतर 3 मार्ग; प्रथम द्वारा जड़ सहित राज्यों का उन्मूलन

पथ; उच्चतर 3 पथों द्वारा जड़ से उखाड़े गए राज्यों के साथ-साथ

इन अवस्थाओं से अलग होकर। उन्होंने निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण, 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है,

12 आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (4) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

511. प्रथम मार्ग द्वारा समाप्त नहीं किए गए राज्य; समाप्त नहीं किए गए राज्य

उच्चतर 3 पथों द्वारा; जड़ों सहित अवस्थाएँ जो नष्ट नहीं हुई हैं

पहला मार्ग; राज्यों के साथ-साथ जड़ें भी उच्चतर 3 द्वारा नष्ट नहीं की गई हैं

पथ इन अवस्थाओं से अलग होते हैं। इन्हें निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (4)।

512. व्यावहारिक चिंतन वाले राज्य; निरंतर चिंतन वाले राज्य

वे इन अवस्थाओं से विरक्त हैं। वे, निर्वाण को छोड़कर

समुच्चयों का वर्गीकरण 5 समुच्चयों के अंतर्गत किया जाता है।

12 से कम आधार और 17 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी आधार पर वर्गीकृत न किए गए किसी भी समूह के अंतर्गत;

उन्हें 1 तत्व (2) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

513. परमानंद की अवस्थाएँ; वे अवस्थाएँ जो इसके साथ होती हैं

परमानंद; आनंद से युक्त अवस्थाएँ वियोगित होती हैं।

इन राज्यों से। वे, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

18 वर्ष से कम आयु के तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (3) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

514. उदासीनता से युक्त अवस्थाएँ वियोजित होती हैं।

इन राज्यों से। वे, निब्बाना को वर्गीकरण से बाहर रखते हुए

समुच्चयों को 5 समुच्चयों के अंतर्गत, 12 आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और

13 तत्वों से कम।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे नहीं हैं

किसी भी श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं, किसी भी श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं

आधार; उन्हें 6 तत्वों (1) के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है।

515. वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित हैं; वे अवस्थाएँ जो

अस्तित्व के चक्र में शामिल हैं; वे अवस्थाएँ जो साथ हैं

इनसे परे की अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हैं। इन्हें निम्न के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चय, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (3)।

516. वे अवस्थाएँ जो इंद्रिय-संबंधी तल से संबंधित नहीं हैं;

जो अस्तित्व के चक्र में शामिल नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो

इन अवस्थाओं से परे वाले अलग नहीं हैं। इन्हें वर्गीकृत किया गया है।

4 से कम समुच्चय, 2 से कम आधार और 8 से कम तत्व।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 10 तत्वों के अंतर्गत (3)।

517. वे अवस्थाएँ जो सूक्ष्म-पदार्थ तल से संबंधित हैं; वे अवस्थाएँ जो

अमूर्त तल से संबंधित; वे अवस्थाएँ जो इससे बाहर निकलती हैं

अस्तित्वों का चक्र; जिन राज्यों का भाग्य निश्चित था, वे इसके बाद हार मान गए।

मृत्यु या उनके स्वयं घटित होने के बाद; वे अवस्थाएँ जो कारण हैं

विलाप की अवस्थाएँ इन अवस्थाओं से अलग हैं। वे, इन्हें छोड़कर

समुच्चय के वर्गीकरण से निब्बाना को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

5 समुच्चय, 12 से कम आधार और 18 से कम तत्व।

वे कितनों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे अवर्गीकृत नहीं हैं।

किसी भी वर्गीकरण के अंतर्गत, किसी भी आधार पर अवर्गीकृत नहीं।

और किसी भी तत्व (5) के तहत गैर-वर्गीकृत नहीं।

518. वे अवस्थाएँ जो सूक्ष्म-पदार्थ तल से संबंधित नहीं हैं; अवस्थाएँ

जो अमूर्त तल से संबंधित नहीं हैं; वे अवस्थाएँ जो संबंधित हैं

अस्तित्व के चक्र से बाहर नहीं ले जाया गया; वे अवस्थाएँ जो नहीं हैं

ऊपर बताए अनुसार निश्चित नियति; वे अवस्थाएँ जो शोक का कारण नहीं हैं

इन अवस्थाओं से विरक्त हैं।

कितने समुच्चयों के अंतर्गत, कितने आधारों के अंतर्गत और किसके अंतर्गत

उन राज्यों को कितने तत्वों के रूप में वर्गीकृत किया गया है? उन्हें वर्गीकृत किया गया है।

4 समुच्चयों के अंतर्गत, 2 आधारों के अंतर्गत और 2 तत्वों के अंतर्गत।

वे किन श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं हैं? वे वर्गीकृत नहीं हैं।

1 समुच्चय के अंतर्गत, 10 आधारों के अंतर्गत और 16 तत्वों के अंतर्गत (5)।

विच्छेदित लोगों से संबंधित वर्गीकृत और अवर्गीकृत 155

स्मृति सहायक

अध्याय VIII के समान।